

चिन्तन की चांदनी : | निरीक्षण : समीक्षण

...श्री देवेन्द्र मुनि जी की 'चिन्तन की चांदनी' को मैंने ड़धर उधर से देखा है ।...इस ग्रन्थ में कितने ही विचार मुझे मौलिक प्रतीत हुए और कुछ परिभाषाएँ भी विशेष आकर्षक जँची । उन सब स्थलों पर मैंने निशान भी लगा दिए थे ।...

इस पुस्तक को पढ़कर मेरे मन में उसके रचयिता के दर्शन करने तथा विचार परिवर्तन करने की अभिलाषा उत्पन्न हो गई ।...

—बनारसीदास घतुर्वेदी



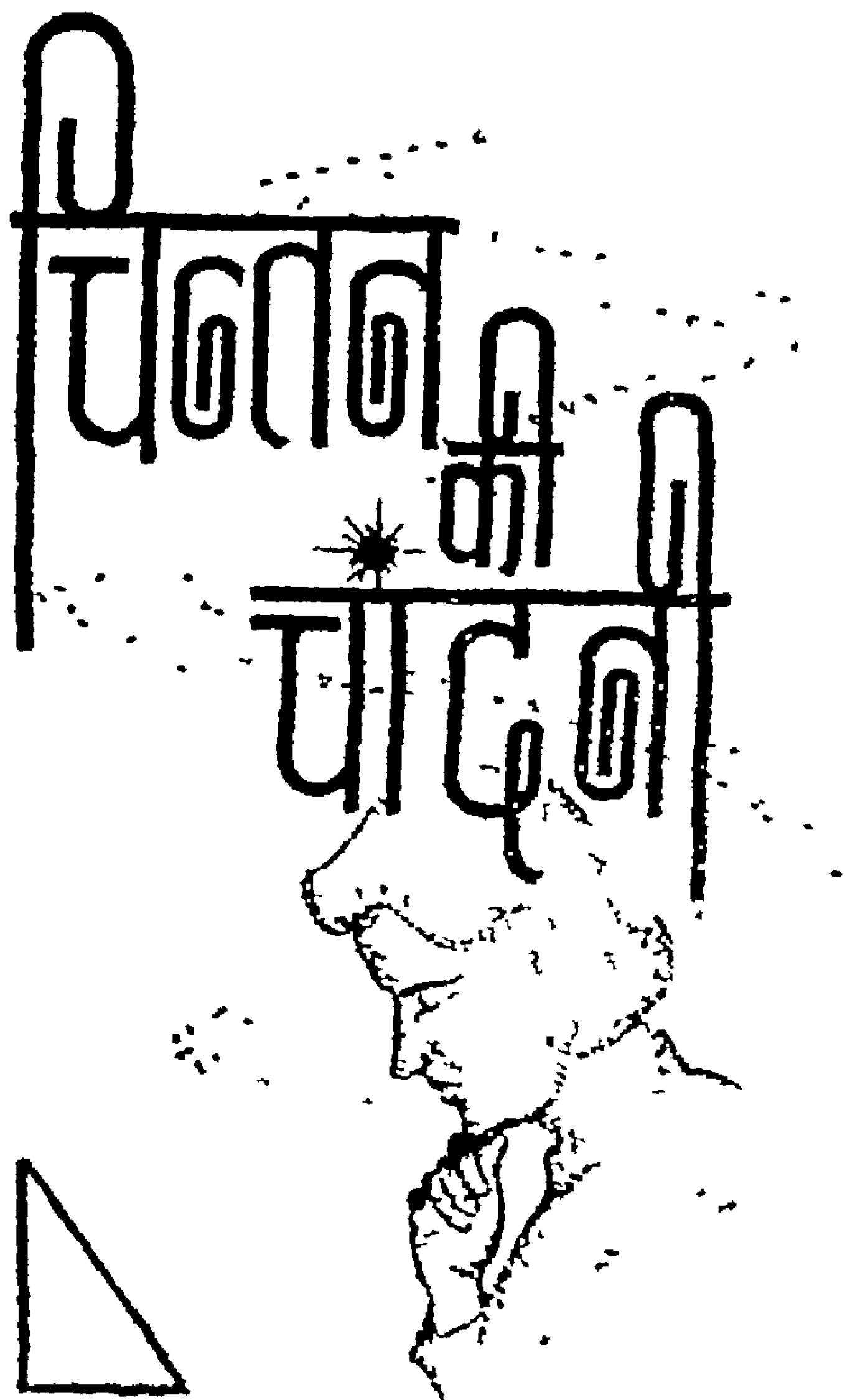
'चिन्तन की चांदनी' पुस्तक में देवेन्द्र मुनि ने अपने साधनामय जीवन के मथन से प्रसूत चिन्तन के प्रकाशवान् करणों को सहेज कर रखा है ताकि पाठक उससे अपने जीवन को प्रकाशमय कर सकें । प्रबुद्ध और मामान्य —दोनों ही कोटि के पाठक इससे लाभान्वित हो सकेंगे । चिन्तन की चांदनी से चमचमाते ये छोटे-छोटे वाक्य सचमुच जीवन की चांदनी जैसा मधुरिमामय प्रकाश से भर देने में समर्थ हैं । इसलिये भी यह पुस्तक सर्वत्र स्वागत पाने योग्य है ।

—विश्वम्भर 'अरुण'



समुद्र मथन के बाद चाँद निकला । साधना के गहन ओड से चाँद की पीयूषवर्षिणी शुभ्र ज्योत्स्ना छिटकी । प्रालोक्य इस रजत-रश्मि के आलोक में शुभ्रस्नात हो थिरक उठा । 'चिन्तन की चांदनी' भी उसी प्रकार से तत्त्वचिन्तन साधना की—जगत पटल के मोह कालुष्य का शमन करके सत्त्वतल का आधान देने वाली—देवेन्द्र मुनि जी की सहज अनुभूति अनुन्यूत अभिव्यक्ति है । इनमें विद्वत्जनो के साथ मामान्य जन भी प्रेरणा और पथ-दिशा पा सकेंगे, ऐसा मिला विश्वास है । आज की विभिन्न विषम-ताओं के बीच सात्विकता का सरस सस्पर्श कर प्राणों में मधुर चाँदनी का पीयूष परम कर जन-जन के बीच स्नेहित संचर कराने वाली यह श्लाघ्याकृति है । आशा है, समस्त जन इसका नलक कर स्वागत करेंगे ।

—कलाकुमार



श्री तारक गुरु-ग्रन्थमाला का ५ वां पुष्प

चिन्तन की चाँदनी

लेखक

परमश्रद्धेय पण्डितप्रवर प्रसिद्धवक्ता

श्री पुष्कर मुनि जी महाराज

के सुशिष्य

देवेन्द्र मुनि, शास्त्री, साहित्यरत्न

प्रकाशक

श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय

पदराटा, (उदयपुर)

पुस्तक

चिन्तन की चांदनी

०

लेखक

देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न

०

सम्पादक

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

०

विषय

उद्बोधक चिन्तन-सूत्र

०

पुस्तक पृष्ठ .

एक सौ छिहत्तर

०

प्रथम प्रकाशन

अक्टूबर, १९६८

०

मूल्य

तीन रुपए

०

प्रकाशक

श्री तारकगुरु जैन ग्रन्थालय

पदराठा, जिला—उदयपुर

०

मुद्रक

श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस,

राजा की मण्डी, आगरा

द्वारे—राजमुद्रणालय

समर्पण ।

धृतालोक के देवता
परमश्रद्धेय पूज्य गुरुदेव
श्री पुष्कर मुनि जी महाराज
के
चरण कमलों में

•

पुस्तक प्रकाशन में अर्थसहयोगी

श्रीमान मोरलाल जी दीपचन्द जी
मु० लोनावला, जिला, पुना (महाराष्ट्र)

प्राथमिकी

अपने प्रबुद्ध पाठको के पाणि-पद्मो मे 'चिन्तन की चादनी' पुस्तक थमाते हुए मन प्रसन्न है, हृदय आनन्द विभोर है

प्रस्तुत पुस्तक मे समय समय पर धर्म, दर्शन साहित्य, समाज, संस्कृति, कला, विज्ञान, अध्यात्म और जीवन प्रभृति विषयो पर चिन्तन की मुद्रा मे अकित सक्षिप्त विचारसूत्र है. यदि इन विचारसूत्रो का विस्तार किया जाय तो एक बृहद्काय ग्रन्थ तैयार हो सकता है.

आज के वैज्ञानिक युग मे मानव के पास समय की अत्यधिक कमी है, वह बड़े-बड़े ग्रन्थ, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र आदि को पढ़ने से कतराता है समयाभाव के कारण सक्षिप्त मे बहुत कुछ जानना समझना चाहता है. प्रस्तुत उपक्रम उन्ही जिज्ञासुओ के लिए है

परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज की अपार कृपा, प्रोत्साहन, और मार्गदर्शन के कारण ही मैं चिन्तन की दिशा मे गतिशील हुआ हूँ अतः इसमे जो भी नया चिन्तन, व नया विचार है वह सब गुरुदेव की दया-दृष्टि का ही सुफल है.

सुयोग्य सम्पादक 'सरस' जी ने पाण्डुलिपि को देखकर आवश्यक संशोधन व परिमार्जन किया है और साथ ही मेरे प्रेम भरे आग्रह को सम्मान देकर श्रीयुत बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने पुस्तक पर सक्षिप्त किन्तु महत्त्वपूर्ण भूमिका लिखने का सद्भाव प्रदर्शित किया है तदर्थ मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ. पाठको ने इसे पसन्द किया तो शीघ्र ही दूसरा नया उपहार भी अर्पित किया जायेगा.

प्रकाश-पर्व

जैनस्थानक, घोटनदी

पुरी (महाराष्ट्र)

२१-१०-६८

—वेवेन्द्र मुनि



दीपमालिका के इस सांस्कृतिक पर्व पर जहाँ संसार प्राकृतिक अंधकार को मिटाने के लिए मिट्टी के नन्हे-नन्हे दीपक जला रहा है, विजली के बड़े बड़े लट्टू जलाकर प्रकाश की विजय का पर्व मनाने में सलग्न हैं, उस पुनीत अवसर पर हम अपने प्रिय पाठकों को जीवन के अन्तर्लोक को आलोकित करने वाली यह 'चिन्तन की चाँदनी' प्रस्तुत करने का उपक्रम कर रहे हैं.

'चिन्तन की चाँदनी' की शुभ्र किरणों जीवन के विभिन्न पक्षों में परिव्याप्त अंधकार को मिटायेगी विचारों के अंधकार में भटकते मन, मस्तिष्क को नया आलोक देगी, और जीवन का पथ प्रशस्त करेगी—यह इसका स्वाध्याय करने वाले पाठक अनुभव करेंगे.

चिन्तन की चाँदनी के चिन्तनकार है—श्री देवेन्द्र मुनि जी, शास्त्री साहित्यरत्न आप श्रद्धेय गुरुदेव आगमतत्त्ववेत्ता मधुरप्रवक्ता श्री पुष्कर मुनि जी म० के सुयोग्य शिष्य हैं. मुनि श्री जी साहित्य एवं श्रुतसाधना में सतत संलग्न हैं. अव्ययन, अनुशीलन, चिन्तन मनन, लेखन वस यही उनके जीवन का उदात्त ध्येय है.

मुनि श्री अब तक लगभग ४० पुस्तकों से अधिक का लेखन-संपादन कर चुके हैं. कल्पसूत्र जैसे आगम ग्रन्थ पर नवीनशैली में सुन्दर विवेचन व सटिप्पण संपादन करके आपने अपनी संपादन-कला का सुन्दर परिचय दिया है. उनकी स्फुरणशील प्रतिभा, और लेखन-कला से हमारा स्थानकवासी समाज ही नहीं, बल्कि पूरा जन समाज गौरवान्वित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है.

पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखकर हमें अनुग्रहीत किया है, तदर्थ हम उनके आभारी हैं.

इसके प्रकाशन में जिन जिन महानुभावों ने उदार अर्थ सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ाया है, हम उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग की अपेक्षा रखते हैं.

मंत्री—

श्री तारक गुरु जन ग्रन्थालय

संपादकीय



- * चिन्तन और चिन्ता—अतर्मुखी वृत्तियाँ हैं, दोनों ही व्यक्ति को आत्मलीन बनाती हैं, आत्म-समुद्र की अतल गहराई में उतारकर उसे डुबो देती हैं
- * आत्म-समुद्र में जब अन्तर्मंथन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, तो चिन्ता का हलाहल विष भी निकलता है और चिन्तन का अमृत भी !
- * चिन्ता का विष—जीवन को कुण्ठित, मूर्च्छित तथा निष्प्राण बना देता है चिन्तन का अमृत जीवन को सक्रिय, तेजस्वी एवं उर्ध्वगामी बनाता है
- * आज का जन जीवन, चाहे वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का जीवन है, उसमें एक कुण्ठा, मूर्च्छा, निष्क्रियता छाई हुई है। वह चिन्ताग्रस्त है. चिन्ताओं के भार से उसका दम निकला जा रहा है उसका तेज क्षीण हो चला है.
- * जीवन की इस कुण्ठा को तोड़ने के लिए चिन्तन का सुदृढ़ प्रहार होना चाहिए. युग की मूर्च्छा को मिटाने के लिए चिन्तन का अमृत-स्पर्श आज नितान्त अपेक्षित है.
- * चिन्तन जगे तो चिन्ता मिटे, चिन्ता मिटे तो जीवन में स्फूर्ति और तेजस्विता आवे.
- * सक्रिय और तेजस्वी जीवन वस्तुतः जीवन है, वह अमृत है, जो युग के समूर्च्छित कर्तृत्व को जागृत करता है, जनत को अपनी दुर्नायता में उपरुत करता है
- * आज के आन्ध्याहीन युग-मानस को आत्मनिष्ठ बनाने के लिए चिन्तन का

द्वार खुलना चाहिए जीवन की अयोगामी वृत्तियों का श्रोत तभी ऊर्ध्वगामी बनेगा, जब चिन्तन का वेग उसे उद्देजित करेगा.

- * चिन्तन की इस हिम-धवल-रजत-ज्योत्स्ना की छाया में जब हमारे व्यक्तित्व का शतदलकमल स्वस्थ, शान्त प्रसन्न एवं विक्रम होकर आत्म-मुखी बनेगा तो निश्चय ही आनन्द की अपूर्व अनुभूति से वह पुलक उठेगा सात्त्विक गुणों की मोरभ से स्वयं महकेगा और अपने परिपार्श्व को भी महकाता रहेगा
- * श्री श्वेताम्बर म्यानकवामी जैन श्रमण सघ की युवा पीढ़ी के होनहार मत, श्री देवेन्द्र मुनि जी एक चिन्तनशील मत हैं, चिन्तनशील हैं इसलिए वे गम्भीर अवश्य हैं, किन्तु इस गभीरता के मथन से वे सदा आनन्द, प्रसन्नता एवं प्रेरणा की अमृत कणिकाएँ हम सबके लिए बटोरकर इन अक्षर रेखाओं में बिखेर देते हैं उनके जीवन की स्वच्छ व निर्मल भूमि पर जब देखो तब चिन्तन की चादनी छितराई मिलेगी. पूर्णिमा को भी अमावस्या को भी ! सच तो यह है, कि जिस जीवन में चिन्तन की चांदनी खिल उठी उस जीवन में अमावस्या कभी आती ही नहीं, और पूर्णिमा कभी जाती नहीं.
- * 'चिन्तन की चादनी' में विहरण करने वाले पाठक को लेखक की अन्तर्मुखीन स्फुरणा, प्रज्ञा, व आत्मनिष्ठा में साक्षात्कार होगा, चिन्तन का माधुर्य, उत्साह एवं नवीन स्फूर्ति के साथ प्राप्त होगा ऐसा मुझे विश्वास है
- * श्री देवेन्द्र मुनि जी ने अपने अन्तःकरण से स्फुरित चिन्तन सूत्रों की शब्द-सज्जा, व काट-छाट आदि का दायित्व मुझे सौंपा, यह उनका आत्मीय स्नेह एवं मदमाव मेरी प्रसन्नता का विषय है. मैं अपने दायित्व को निभाने में कहीं तक सफल रहा, इसका निर्णय पाठकों के हाथ में है
- * मैं आशा और विश्वास करता हूँ कि मुनि श्री जी का चिन्तनशील मानस इसी प्रकार हमें चिन्तन की नवीन स्फुरणाएँ देता रहेगा. आत्म-मथन के अमृत-स्पर्श से धर्म, समाज और राष्ट्र के अन्तर्चेतन्य को जागृत करता रहेगा.....

दीपमानिका

आगरा

—श्रीचन्द्र चुराना 'सरस'

२१-१०-६८

दो शब्द



जब श्रद्धेय देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न की पुस्तक 'चिन्तन की चांदनी' मुझे भूमिका लिखने के आदेश के साथ प्राप्त हुई, तो स्वभावतः मेरे मन में सकोच हुआ

यहाँ मैं ईमानदारी के साथ और बिना किसी सकोच के यह बात स्वीकार करता हूँ कि मैं तो एक साधारण कार्यकर्ता हूँ, चिन्तक नहीं। मैंने उस कूचे में कभी पैर भी नहीं रखा ! इसलिए मैं इस पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए अपने को सर्वथा अनधिकारी ही मानता हूँ, हाँ दो चार बातें निवेदन अवश्य कर सकता हूँ।

चिन्तन के गम्भीर सागर में गोते लगाकर श्री मुनि जी ने जो रत्न प्राप्त किए हैं और जिन्हें सजोकर उन्होंने इस पुस्तक में रख दिया है उनका यथार्थ मूल्यांकन, ठीक-ठीक परख—वे ही कर सकते हैं, जो इस पथ के पथिक रह चुके हों पर अपने प्रातःकालीन स्वाध्याय के समय दूसरों के द्वारा एकत्रित रत्नों को देखने तथा उनमें से कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे अवश्य प्राप्त हुआ है। चूंकि मैं वर्षों से अपना मानसिक भोजन अंग्रेजी पुस्तकों से ही लेता रहा हूँ, इसलिए प्रायः विदेशी मनीषियों के ही विचारों का अध्ययन मैंने किया है। रूस के चपातकिन और गोर्की, फ्रान्स के रॉमांरोला आस्ट्रिया के स्टीफन ज़्विग, इङ्ग्लैण्ड के एडवर्ड कार्पेन्टर तथा ए० जी० गार्डनर आयरलैण्ड के ए० ई० के सिवाय अमरीका के एममन, घोरो तथा ह्विटमैन का भी मैं प्रशंसक रहा हूँ। कभी कभी धम्मपद, निग्रन्थ प्रवचन तथा गीता का भी अनुशीलन कर लेता हूँ लाला हरदयान जी के Aims for self culture से भी मुझे बहुत प्रेरणा मिली है स्वाध्याय के लिये

मैंने देश विदेश की सीमा को कभी नहीं स्वीकार किया. विदेशी ग्रन्थकारों के विचाररत्नों से मेरी बीसियों नोटबुक भरी पड़ी हैं.

मुनि जी की चिन्तन की चांदनी को मैंने ध्यानपूर्वक इधर-उधर से देखा, यद्यपि उसके प्रति न्याय करने के लिये पर्याप्त अवकाश चाहिये था, जो अब मेरे लिये सर्वथा दुर्लभ है.

इस ग्रन्थ के कितने ही विचार मुझे मौलिक प्रतीत हुए और कुछ परिभाषाएँ भी विशेष आकर्षक जँची. उन सब स्थलों पर मैंने निशान भी लगा दिये थे—इस खयाल से कि उन्हें यहाँ उद्धृत कर दूँगा—पर उनकी संख्या इतनी अधिक निकली कि स्थान की कमी के कारण वह खयाल छोड़ देना पड़ा जो विचार मुझे खास तौर पर पसन्द आये उनका कुछ विवरण ही यहाँ दे रहा हूँ.

पृष्ठ ३—अव्यात्म और विज्ञान

४—परते तोड़नी होगी

५—अपनी पहचान

८-९—धनवान वन्धु

१०—धर्म की परिभाषा

१८—गरुड़ बनिये

२०—सम्पदा के अर्थ

२१—सुखी कौन

२७—गाली और अपना मुँह देखिये

२८—ब्रह्मचर्य की साधना

२९—आत्म-क्षरण

३३—गन्दाजल

३६—मन का मनीवेग

४०—मन को घूरा मत बनाओ

४२—विचारों की पवित्रता

४३—एकाग्रता

४५—उपवास

आदि आदि

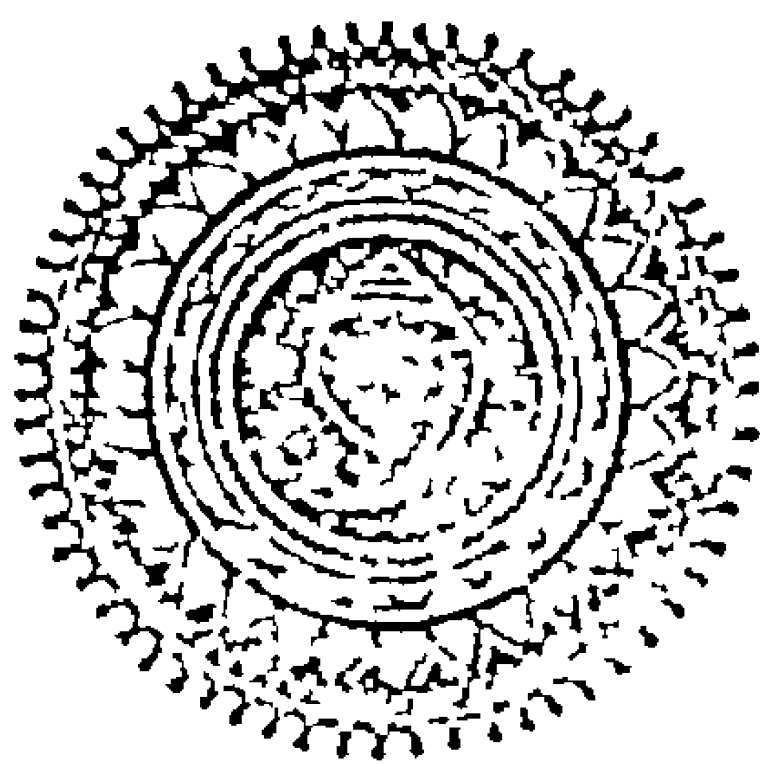
इस पुस्तक को पढ़कर मेरे मन में कभी उसके रचयिता के दर्शन करने

तथा विचार परिवर्तन करने की अभिलाषा उत्पन्न हो गई. वन्धुवर डा० हरीशकर शर्मा की कृपा से मुझे श्रद्धेय अमरमुनि जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उनकी विद्वत्ता तथा मज्जनता से प्रभावित भी हुआ. मैं अपनी भंभटो में व्याप्त रहने के कारण मुनि जी के निकट सम्पर्क में नहीं आ सका इसका मुझे खेद है हाँ, सन्मति ज्ञानपीठ के कुछ प्रकाशन समय समय पर मुझे मिलते रहे हैं और वे मेरे लिये प्रेरणाप्रद सिद्ध हुए हैं

जीवन के विभिन्न परिपाश्वों को छूने वाले मुनि जी के ये चिन्तनसूत्र जिस प्रकार मुझे आकर्षक व प्रेरणादायी लगे हैं, मैं आशा करता हूँ कि इस प्रकार पाठक वर्ग को भी लगेगा

इतनी सुन्दर और चिन्तनपूर्ण विचार सामग्री प्रस्तुत करने के लिए मैं मुनि जी की विद्वत्ता का अभिनन्दन करता हूँ.

— बन्तारसोदास चतुर्वेदी



चिन्तन की

चाँ

द

नी

आलोक-ग्रन्थ

१. परमतत्त्व	१
२. सत्यं शिवम्	१३
३. अन्तर्वत्त	३५
४. जीवन दर्शन	६७
५. जागरण	८६
६. व्यष्टि और समष्टि	१११
७. अन्त : शल्य	१२६
८. पंचामृत	१४७

चिन्तन की चौदनी

प

स

• म

त

त्व

जीवन और जगत् में जिसकी श्रेष्ठता अमदिग्ध है,
जो साधकों के लिए चरम साध्य है, ऋषियों के लिए
परम ज्ञेय है—वही इस सम्पूर्ण मानव सृष्टि का परम-
तत्त्व है—अध्यात्म ।

आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, भगवान और धर्म—सब
इसी परमतत्त्व की अभिव्यक्तियाँ हैं ।

परम तत्त्व



आत्मा और परमात्मा

आत्मा और परमात्मा के बीच वह कौन-सी दीवार है, जो परमात्मा के दर्शन नहीं होने देती—एक जिज्ञासु ने पूछा.

मैंने कहा—इस दीवार का नाम है मोह ! मोह की दीवार हट गई, कि परमात्मा के दर्शन कीजिए

अध्यात्म और विज्ञान

वाह्य-प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का मार्ग विज्ञान ने प्रशस्त किया है, उससे भौतिक समृद्धि का द्वार खुला है

आत्म-प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का मार्ग अध्यात्म ने दिखलाया है, उससे अनन्त आत्मिक समृद्धि की उपलब्धि की जा सकती है.

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से मानव जीवन सुखी, समृद्ध और शान्तिमय बन सकता है.

संजाना

भौतिक विज्ञान कहता है कि समुद्र के गर्भ में इतना सोना और

खजाना छिपा है कि उसे निकाला जाए तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति करोड़पति बन सकता है

आध्यात्म विज्ञान कहता है कि—आत्मा के भीतर शक्तियों का इतना अक्षय खजाना छिपा है कि उसे प्राप्त किया जाए तो संसार में कोई भी प्राणी दीन-हीन नहीं रहे.

कठिनता यही है— कि खजाना प्राप्त नहीं हो रहा है.

स्वभाव का संघर्ष

जीव तत्त्व का स्वभाव है—ऊर्ध्वगमन ?

शरीर जड़तत्त्व का स्वभाव है—अधोगमन.

जीव निरन्तर अपने स्वभाव के अनुसार ऊर्ध्वगमन करने का प्रयत्न करता रहता है, किन्तु जड़ तत्त्व उस पर अपना प्रभाव जमाए बैठा है और उसे नीचे से नीचे धकेल रहा है.

अनादि काल से जड़-चेतन के स्वभाव का यही संघर्ष विश्व में चलता रहा है

देह का कोयला

हीरा कोयले में छिपा रहता है। पर, कोयला काला होता है, हीरा अनन्यन्त उज्ज्वल चमकदार।

इस देह के कोयले में आत्मा का हीरा छिपा है देह नश्वर है और विकारी। किन्तु उसमें रहने वाली आत्मा अजर-अमर और परम विष्णु।

परतें तोड़नी होंगी

कुँआ खोदना प्रारम्भ करते ही किसी को पानी मिलजाता है ?

पहले कंकड़, मिट्टी पत्थर की परतें तोड़नी होती हैं, अग करते-करते आगिन में निर्मल मधुर जल का स्रोत मिलता है.

आत्मा का निर्मल जल-स्रोत प्राप्त करने के लिए भी विषय-विकाशों की परतें तोड़नी होंगी, तप-साधना करनी होगी.

हल्का-भारी

हल्की वस्तु पानी की सतह पर तैरती रहती है, और भारी उसकी तह में डूब जाती है

कर्मों से हल्का आत्मा संसार रूपी समुद्र के ऊपर-ऊपर तैरता रहता है, और भारी आत्मा उसमें डूबकर गोते खाता रहता है

आत्मा को हल्का बनाओ । भगवान महावीर का उद्घोष है—

“कसेहि अप्पाण, जरेहि अप्पाण”—आत्मा को कृश करो, जीर्ण करो, वह हल्का होकर संसार समुद्र पर तैरता रहेगा ।

अपनी पहचान

जिसने स्वयं को पहचान लिया, उसने भगवान को भी पहचान लिया. आत्म-ज्ञान ही भगवद् ज्ञान है भगवान महावीर ने इसी सत्य को यों व्यक्त किया है—

“जे एग जाणई, से सब्ब जाणई”

जो एक को जान लेता है, वह सब को जान लेता है ।

उपनिषदों ने आत्म-ज्ञान को सर्वज्ञता का रूप देत हुए कहा है—

“यस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति”

जिसको जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है

मेरे आत्मन् ! तुम सर्व प्रथम अपने को पहचानो । अपनी अनन्त शक्तियों का भान करो ।

एक ही चैतन्य

जिस प्रकार तनिये के गोल—गिलाफ रंग-विरंगे होते हैं, किन्तु भीतर में रई सब में एक समान सफेद ही रहती है

परम तत्त्व

खजाना छिपा है कि उसे निकाला जाए तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति करोड़पति बन सकता है

आध्यात्म विज्ञान कहता है कि—आत्मा के भीतर शक्तियों का इतना अक्षय खजाना छिपा है कि उसे प्राप्त किया जाए तो संसार में कोई भी प्राणी दीन-हीन नहीं रहे.

कठिनायता यही है— कि खजाना प्राप्त नहीं हो रहा है.

स्वभाव का संघर्ष

जीव तत्त्व का स्वभाव है—ऊर्ध्वगमन ?

और जड़तत्त्व का स्वभाव है—अधोगमन.

जीव निरन्तर अपने स्वभाव के अनुसार ऊर्ध्वगमन करने का प्रयत्न करता रहता है, किन्तु जड़ तत्त्व उस पर अपना प्रभाव जमाए बैठा है और उसे नीचे से नीचे धकेल रहा है

अतः काल में जड़-चेतन के स्वभाव का यही संघर्ष विश्व में चलता रहा है

देह का कोयला

हीरा कोयले में छिपा रहता है । पर, कोयला काला होता है, हीरा अन्यन्त उज्ज्वल चमकदार !

इस देह के कोयले में आत्मा का हीरा छिपा है. देह नश्वर है और विकारी । किन्तु उसमें रहने वाली आत्मा अजर-अमर और परम विशुद्ध !

परतें तोड़नी होंगी

कुँआ खोदना प्रारम्भ करते ही किसी को पानी मिलजाता है ?

पत्थर काटकर, मिट्टी पत्थर को परतें तोड़नी होती हैं, अग कटने-करते आन्तर में निर्मल सधुर जल का स्रोत मिलता है

आत्मा का निर्मल जल-स्रोत प्राप्त करने के लिए भी विषय-विकारों की परतें तोड़नी होंगी, तप-साधना करनी होगी.

१. हल्का-भारी

हल्की वस्तु पानी की सतह पर तैरती रहती है, और भारी उसकी तह में डूब जाती है

कर्मों से हल्का आत्मा ससार रूपी समुद्र के ऊपर-ऊपर तैरता रहता है, और भारी आत्मा उसमें डूबकर गोते खाता रहता है.

आत्मा को हल्का बनाओ । भगवान् महावीर का उद्घोष है—

“कसेहि अप्पाण, जरेहि अप्पाण”—आत्मा को कृश करो, जीर्ण करो, वह हल्का होकर ससार समुद्र पर तैरता रहेगा ।

अपनी पहचान

जिसने स्वयं को पहचान लिया, उसने भगवान् को भी पहचान लिया. आत्म-ज्ञान ही भगवद् ज्ञान है भगवान् महावीर ने इसी सत्य को यों व्यक्त किया है—

“जे एग जाणई, से सब्ब जाणई”

जो एक को जान लेता है, वह सब को जान लेता है ।

उपनिषदों ने आत्म-ज्ञान को सर्वज्ञता का रूप देत हुए कहा है—

“यस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति”

जिसको जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है

मेरे आत्मन् ! तुम सर्व प्रथम अपने को पहचानो ! अपनी अनन्त शक्तियों का भान करो !

एक ही चैतन्य

जिस प्रकार तकिये के चोल — गिलाफ रंग-धिरंगे होते हैं, किन्तु भीतर में रुई सब में एक नमान सफेद ही रहती है.

परम सत्य

जिस प्रकार गाय की चमड़ी काली, गोरी, लाल आदि विभिन्न रंगों की होती है, किन्तु दूध मक्खन का एक जैसा ही सफेद होता है, इसी प्रकार सब प्राणियों के बाहरी रंग-रूप आकार भिन्न होते हुए भी आत्मा—चैतन्य सब में एक जैसा ही है उसमें कोई अन्तर नहीं। इसी बात को भगवान् महावीर ने यों कहा है —

एगें भाया—आत्मा एक है, सब प्राणियों में एक समान तथा एक स्वरूप वाली है

चार पुरुषार्थ

भारतीय दर्शन ने सामाजिक जीवन की परिपूर्णता के लिए चार पुरुषार्थ माने हैं— काम, अर्थ, मोक्ष और धर्म

काम शरीर प्रधान प्रवृत्ति है, उसकी पूर्ति का साधन है—अर्थ

मोक्ष आत्मा की सहज वृत्ति है, उसकी परिपूर्ति का साधन है—धर्म

ससार काम भाव से प्रेरित है, आत्म-साधक मोक्ष-भावना से.

मृण्मय-चिन्मय

मानव-जीवन मृण्मय और चिन्मय का विचित्र संगम है

यह माटी का दीपक है, जिसकी मृण्मय देह में चिन्मय ज्योति प्रज्ज्वलित हो रही है.

जो देह की सुन्दरता पर लुभाता है, वह मृण्मय (मिट्टी युक्त) से प्यार करता है, जो उसके ज्ञान और साधना पर दृष्टि टिकाता है, वह चिन्मय के दर्शन करता है.

बाध्यात्मियता

दृष्ट मूल के आधार पर फलना फूलना है

महल नींव के आधार पर खड़ा रहता है, उसी प्रकार जीवन आध्यात्मिकता के आधार पर फलता है, स्थिर रहता है.

आत्मा-परमात्मा

आत्मा और परमात्मा में क्या भेद है ?

देह-बद्ध आत्मा जीवात्मा है, देह के विकार व देहाभिमान से मुक्त जीवात्मा, परमात्मा है.

शक्ति और शान्ति

शक्ति की साधना द्वैत की साधना है, शान्ति की साधना अद्वैत की साधना है

शक्ति-प्रयोग के लिए कोई दूसरा चाहिए शान्ति के लिए एकत्व की अनुभूति ही पर्याप्त है ।

- { देवता कौन ?

'दिव्यतीति देव.'—संस्कृत की इस व्युत्पत्ति के अनुसार देवता वह है, जो सदा क्रीड़ा करता है— "आत्म क्रीड. आत्म रतिः"

अपने स्वरूप में जो सदा क्रीड़ा करता है वह देव ही नहीं, किन्तु देवाधिदेव भी हो जाता है—यह जैन संस्कृति का दिव्य घोष है

महाविदेह

महाविदेह—जैन परिभाषा का वह क्षेत्र है, जहाँ पर जन्म लेने वाला आत्मा साधना के द्वारा उसी भव में परम-विदेह (देहातीत-मोक्ष) अवस्था को प्राप्त कर सकता है.

जो इस देह में रहकर भी विदेह (देहातीत भाव में) रहता है, क्या उसके लिए कोई भी क्षेत्र महाविदेह नहीं बन सकता ?

महाविदेह को सिर्फ क्षेत्र रूप में ही नहीं, भाव रूप में भी देखने की आवश्यकता है

परम गुरु

हरि

दुःख, दैन्य, दीर्घनस्य आदि विपत्तियों का हरण करके जो जीवन को सुखमय बनाता है, वह भारतीय संस्कृति का हरि है

शिवशंकर

जो जीवन और जगत् की विपदाओं के जहर को स्वयं पीकर दूसरों को सुख का अमृत वांटता हुआ सबका 'शं' अर्थात् सुख करने वाला है, वही इस विश्व का शिव शंकर है

विष्णु

विष्णु का अर्थ है व्यापक.

जो व्यापक होता है, वही भगवान होता है

व्यापक और विराट् भगवान की उपासना करने वाले यदि क्षुद्र और संकीर्ण भावनाओं में जकड़े रहे, तो, व्यापक की उपासना कैसे कर सकेंगे ?

विराट् की आराधना करने के लिए विराट् बनना होगा

मोना और आत्मा

कूड़े-कंकड़ के नीचे दब जाने पर भी क्या कभी सोना कूड़ा बना है ? हजारों हजार साल तक मिट्टी में मिले रहने पर भी क्या कभी सोना मिट्टी बन सकता है ?

फिर क्यों नहीं विश्वास करते कि विकारों के कूड़े कंकड़ से दबे रहने पर भी तुम्हारा आत्म-स्वरण कभी विकारी नहीं बन सकता.

अनादि काल से कर्मों की मिट्टी में मिले रहने पर भी तुम्हारा आत्मा कभी मृण्मय, जट नहीं हो सकता

तुम नैतन्य हो, ज्ञानमय हो और सदा ज्ञानमय ही रहोगे

धनधान-वन्धु

भगवान और भक्त के बीच आज कितना वैपम्य है ?

८

चिन्तन की सीढ़ी

भगवान के अंग पर हीरों से जड़ी सोने की अंगी चढ़ाई जा रही है, और भक्त फटेहाल है ।

भगवान के सामने मधुर मोहनभोग चढाए जा रहे हैं, और भक्त को रोटी का सूखा-सूखा टुकड़ा भी नसीब नहीं ।

भगवान को रहने के लिए बड़े-बड़े सगमरूमर के मन्दिर बनाए जा रहे हैं, किन्तु भक्त को सिर छिपाने के लिए किसी दीवार का कोना भी नहीं !

भगवान मालदार है, भक्त दरिद्र ! दीन ! क्या फिर भी भगवान दीन-बन्धु ही कहलायेगा, या धनवान-बन्धु ?

धर्म

चोराहे की प्रकाश-वत्ती की तरह धर्म भी सब के लिए प्रकाशदायी है. चोराहे की वत्ती पर किमी का अधिकार नहीं, किन्तु उपयोग हर कोई कर सकता है. यही बात धर्म के लिए भी है

धर्मरहित जीवन

पानी रहित सरोवर, हरियाली रहित पर्वत और वृक्ष रहित उपवन. वंसा ही है धर्म रहित जीवन.

शिव और शिव

हमारा धर्म—शिव को नहीं, शिव को महत्व देता है. चित्र को नहीं, चरित्र को पूजता है.

जो धर्म निष्कर्मता का उपदेश तो करता है, पर निष्कामता नहीं सिखाता, जो धर्म निराशा का नदेश तो देता है, पर आशा का उन्मेष नहीं जगाता, जो धर्म निवृत्ति की बात तो करता है, पर प्रवृत्ति की कुशलता नहीं सिखाता, समझ लो वह धर्म आज खनार में जिन्दा नहीं रह सकता

जैन धर्म की भाषा में कुशल प्रवृत्ति ही चरित्र है अर्थात् अशुभ से निवृत्त होकर शुभ प्रवृत्ति में कुशल रहना ही सम्यक् चारित्र्य है.

धर्म, जीवन से भिन्न नहीं

दीपक बोलता नहीं, जलता है. धर्म का व्याख्यान मत करो, उसे जीवन में उतार कर प्रकाश फैलाओ.

जिस प्रकार दीपक ली से भिन्न नहीं है, उसी प्रकार धर्म जीवन की ली से भिन्न नहीं है.

धर्म की परिभाषा

आचार्य कुन्दकुन्द से पूछा गया—धर्म क्या है ? बड़े सहज ढंग से उन्होंने बताया —‘वस्तु सहायो धम्मो’—वस्तु का अपना स्वभाव, निज गुण—धर्म है,

अग्नि का स्वभाव तेज है, अग्नि किसी भी स्थान में जलाएँ, किसी समय में जलाएँ, उसमें से तेज प्रस्फुरित होगा ही. स्थान या काल उसके स्वभाव को बदल नहीं सकते, वह चाहे ब्राह्मण के घर में जले चाहे शूद्र के घर में, चाहे विवाह मंडप में जले चाहे श्मशान में, चाहे दिन में जले या रात में—उसका स्वभाव कभी भी क्षीण या नष्ट नहीं हो सकता.

अभिप्राय यह हुआ कि जो सदा, सर्वत्र सहज भाव से प्रभावशील रहे—वह धर्म है वह धर्म क्या, जो जीवन के वरण-करण में न रम सके? वह धर्म क्या, जो परिवार, समाज और राष्ट्र को जीने की कला नहीं सिखा सके

जैन-धर्म ने बताया है कि धर्म वह है—जो जीवन के हर क्षेत्र को पवित्र कर दे. धर्म वह मुग्धि है जिसको जहाँ भी रखो, महक देगा. जीवन की हर साँस और घड़कन में मुखरित होगा.

धर्म क्या है ?

मृत्यु रूपी विष का प्रतिविष । अमृत !

और दर्शन ?

मृत्यु के सधन अधकार मे से दूर क्षितिज के उस पार देखने वाली
दिव्य दृष्टि !

खोज

प्रत्येक रूक्ष और नीरस वस्तु का एक सरसस्निग्ध पक्ष भी होता है.
इस सरसता की सरस अभिव्यजना करना ही कविता है
प्रत्येक भयावने अन्धकार के भीतर प्रकाश की एक दिव्य ज्योति छिपी
रहती है, इस दिव्य ज्योति का प्रकट करना ही अध्यात्म की अन्तर्
अनुभूति है

प्रत्येक अतीत मे इतिहास की एक अतल गहराई छिपी रहती है, उस
गहराई को छूकर उघाड देना ही मानवीय आत्मा का अनुसन्धान है.

धर्म का आधार

पात्र बड़ा या पदार्थ ? क्या आप नहीं देखते कि अमृत तुल्य दूध भी
खराब पात्र मे पडकर बिगड जाता है ?

पहले अपना हृदय पात्र शुद्ध करो, सत्पात्र बनो, तभी ज्ञान का शुद्ध
दूध सुरक्षित रूप से टिक सकेगा.

इसलिए भगवान महावीर ने कहा है 'धम्मो सुदस्स बिट्ठई' धर्म
शुद्ध-पवित्र हृदय में ही ठहर सकता है

धर्म और विज्ञान

मनुष्य के साथ मनुष्य का क्या कर्तव्य है—इसकी शिक्षा विज्ञान नहीं,
धर्म देता है.

विज्ञान जीवन की सुविधा दे सकता है, कन्ना नहीं सिखाता जीवन
की कला सीखने के लिए धर्म का अध्ययन आवश्यक है.

परम तत्त्व

धर्मोपामक ! तुम पवित्र वस्त्र पहन कर देव दर्शन और मन्दिर की परिक्रमा करके ही पवित्रता का पुण्यार्जन करना चाहते हो ? पर दो क्षण की ब्राह्म पवित्रता से जीवन में पवित्रता का स्पर्श कैसे होगा ? कभी सोचा है ?

चौका लगा । र पूजा के पीछे पर बैठने के समय तुम बहुत ऊँचाई को छूना चाहते हो ? परन्तु एक क्षण की ऊँचाई का ध्यान करने से जीवन ऊँचा कैसे बनेगा ?

धर्म, मात्र घड़ी-दो-घड़ी को साधना नहीं है, रविवार या मंगलवार का व्रत ही धर्म का थर्मामीटर नहीं है. अष्टमी-चतुर्दशी का प्रति-क्रमण ही साधना का मानदण्ड नहीं है. तुम जो कुछ भी बोलते हो, सोचते हो, वह सब धर्म की अभिव्यक्ति का अवसर है, वह अवसर ही तुम्हारी धार्मिकता की सच्चाई को प्रकट करता है.

मानव सुधार के आन्दोलन और उपदेश अखबारों में चलाने से क्या होता है ? उन्हें तो आत्मा के भीतर चलने दो ।

जो पुण्य कोलाहल के साथ किया जाता है, जीवन उत्थान में उसका सबसे कम महत्व है. धर्म पटह पीट कर मत करो, नाटक की भाँति धर्म का आचरण सिर्फ छलना है ।

धर्म की साधना जीवन के कण-कण में व्याप्त होने दो, हर क्षेत्र,—दुकान—घर, आफिस—तुम्हारा मन्दिर हो, उपाश्रय हो, स्थानक हो ! और तुम्हारे आदर्शों का सच्चा प्रतीक हो !

धर्म सूत्र नम्रदाय

जिस तन्त्राय का पानी सूख गया है, उसमें दरारें पड़ जाती हैं, जिस संप्रदाय में धर्म का जल सूख गया है, उसमें भेद पड़ जाते हैं.

जल से परिपूरित सरोवर में और धर्म से युक्त संप्रदाय में कभी दरारें—भेद-विग्रह नहीं पड़ सकते.



चिन्तन की चाँदनी

स

त्यं

शि

व

म्

जो महासागर से भी गम्भीर है, सूर्य मण्डल से भी तेजस्वी है, चन्द्रमण्डल से भी अधिक शीतल है, वह अनन्त चमत्कारों का अक्षयस्रोत मन्त्र—उम सृष्टि का परम ग्रन्थ है, वही मन्त्र शिवम् है.

पवित्र एवं निष्काम अन्तस्तन ने प्रस्फुरित मन्त्र—ही शिव है वही विश्व का वाग्देवता है माधक और सन्तुष्ट—महापुरुष—मन्त्र की अन्तिम उपलब्धि है—मन्त्र ।

सत्यं शिवम्



सत्य

सत्य में शक्ति है, तेज है असत्य में इन दोनों का अभाव है. असत्य स्वयं में चल नहीं सकता, वह पगु है. इसलिए वह सदा सत्य का सहारा ताकता है

असत्य स्वयं में कुरूप है इस लिए वह अपने चेहरे पर सदा सत्य का सुन्दर मुखौटा डालने का प्रयत्न करता है.

जब किसी को सत्य सिद्ध करने के लिए असत्य का सहारा लेते देखता हूँ तो लगता है—वह भिखारी से भी दौलत मांगने का प्रयत्न करता है. अन्धे से सूर्य की रोशनी के बारे में पूछ रहा है.

सत्य का अर्थ

सत्य का अर्थ है—जो सदा सद्-विद्यमान रहे.

जिसे प्रकट करने में भय व सकोच होता है, और जिसे छिपाने की आवश्यकता होती है समझ लो वह सत्य नहीं है.

सत्य और तथ्य

सत्य है—वस्तु रिघति का सही आकलन, वर्णन, और तथ्य है—जीवन निर्माणकारी घटनाओं का संकलन ।

सत्यं शिवम्

विज्ञान सत्य है, धर्म तथ्य है.

फूल भी सत्य है, कांटा भी सत्य है.

किन्तु सौरभ और परिमल की मधुरिमा की अनुभूति तथ्य है
साधक केवल सत्य का उपासक नहीं, वह सत्य के साथ तथ्य की भी
उपासना करता है.

✓ सत्य : असत्य

अग्नि शिखा की तरह सत्य सदा ऊर्ध्वगामी होगा.

जलधारा की तरह असत्य सदा निम्नगामी होगा

असत्य का नकली सिक्का

असत्य का नकली सिक्का बाजार में तब तक चल सकता है, जब
तक कि सत्य का सच्चा सिक्का जनता के हाथों में नहीं आजाता.

मुं हफ्ट : मधुरभाषी

मुं ह पर कड़ी, अप्रिय किन्तु. सच्ची बात कहनेवाला अनघड या मुं ह-
फ्ट भले ही कहा जाय, परन्तु वह उस व्यक्ति से कहीं अधिक सत्य
के समीप है, जो मधुर शब्दों में सत्य को छिपाकर दूसरों को प्रसन्न
करना चाहता है

सत्य, संयम

सत्य कभी-कभी बहुत कटु हो जाता है.

तप कभी-कभी बहुत उग्र हो जाता है.

सत्य की कटुता और तप की उग्रता (तेजस्विता) को मधुरता और
शक्ति में परिणत करने के लिए ही संयम का उपदेश किया गया है.
सत्य और तप के साथ संयम की भी साधना आवश्यक है.

सत्य का उद्गम पवित्र व शुद्ध अन्तःकरण में होता है धम्मो मुद्धरम
चिद्धई—के अनुसार पवित्र हृदय ही सत्य का निवास स्थान है
स्वार्थ व मुख का त्याग करने से अन्तःकरण विशुद्ध बनता है

सत्य : तीखा कटु

प्रेम और श्रद्धा के अतिरेक से कभी-कभी सत्य में तीखापन आ सकता
है, किंतु कटुता आना द्वेष एवं अहंकार का प्रतीक है

सत्य में माधुर्य

सत्य को मधुर बनाना अलग बात है और छिपाना, या प्रकट करते
हुए डरना अलग बात ।

पहला अहिंसा और प्रेम का आदर्श है, दूसरा भय व हीनता का
प्रदर्शन ।

सत्य का प्रचार

सत्य का प्रसार करने के लिए भाषण की आवश्यकता नहीं, आचरण
की आवश्यकता है

सत्याचरण ही सत्य का सबसे सफल एवं श्रेष्ठ प्रचारक है ।

सत्य—अहिंसा

सत्य एक वस्तुस्थिति है, जो अनुभूति में व्यक्त होती है अहिंसा एक
वृत्ति है, जो जीवन में साकार होती है

सत्य का अनुभव करना है.

अहिंसा का विकास करना है

सत्य का पूर्ण पक्ष—अहिंसा

सत्य—नग्न होता है, इसलिए वह कटु भी हो सकता है. सत्य की
कटुता का शमन अहिंसा से हो सकता है.

सत्य शिष्य

अहिंसा हृदय की मृदुलता है, मृदुलता में कहीं दुर्बलता एवं विकार
न आ जाए इसकी पहरेदारी सत्य को करनी होती है
सत्य, अहिंसा एक दूसरे के पूरक हैं. एक के बिना दूसरे की पूर्णता
नहीं हो सकती.

हिंसा : अहिंसा

अहिंसा और हिंसा में एक महान् अन्तर है—

अहिंसा मरना सिखाती है.

हिंसा मारना सिखाती है.

अहिंसा वचाना सिखाती है

हिंसा वचना सिखाती है

मरना वीरता है मारना क्रूरता है.

वचाना दयालुता है वचना कायरता है.

गरुड बनिए !

जो 'होचुका' उसकी फिकर मत करिए, जो होता है उसका विचार
करिए

अतीत की चिन्ता में पड़ा रहने वाला कीड़े मकोड़े की तरह उसी
खाई में रेंगता है, जिसमें उसके बाप-दादे रेंगते रहे. वह उससे आगे
नहीं बढ़ पाता.

अनन्त भविष्य का दर्शन करने वाला गरुड की तरह आकाश में
उन्मुक्त उड़ान भर कर अनन्त आकाश पथ को नापता रहता है.

जीवन की खाई में रेंगने वाले कीड़े मकोड़े न बनिए, अनन्त उज्ज्वल
भविष्य के गगन में उड़ने वाले गरुड बनिए

चतुर्भुज ब्रह्मा

विवेक के साथ धन, धन के साथ उदारता और उदारता के साथ
नम्रता मगार का चतुर्भुज ब्रह्मा है

मधुरता

अमूर को मधुर बनाने के लिए रक्त दिया जाता है.

तो क्या प्रेम के फल को मधुर बनाने के लिए त्याग-बलिदान का रक्त नहीं चाहिए ?

✓ स्वाध्याय

स्वाध्याय—ज्ञान के अक्षयकोष की कुञ्जी और विचारशीलता के मन्दिर की नींव है

जैसे अन्न जल के बिना शरीर की वृद्धि नहीं होती, वैसे ही स्वाध्याय के बिना बुद्धि की वृद्धि नहीं होती.

✓ गुणों का आदर

मैंने देखा— इस ससार में सर्वत्र गुणों का आदर होता है.

तोते को पालकर मेवा खिलाया जाता है किन्तु कौवे को कोई घर की मुँह पर भी नहीं बैठने देता

पानीदार मोती

जोहरी उगी मोती की कीमत करता है, जो पानीदार है

सन्त उसी भक्त को महत्व देते हैं, जिसमें गदाचार का पानी है

वीरता की परिभाषा

वीरता—हिंसा को मारने में नहीं, किन्तु किसी को बचाने के लिए अपना बलिदान करने में है

वीरता—किसी की प्रतिष्ठा लूटने में नहीं, किन्तु अप्रतिष्ठित को प्रतिष्ठित करके उसका संरक्षण करने में है

✓ विना न्याय की तन्त्रालय

हिताहित के सम्यक्विवेक से रहित व्यक्ति की शक्ति, विना न्याय

मत्तं शिबम्

१६

की तलवार है. नंगी तलवार दूसरे के लिए ही नहीं, स्वयं के लिए भी घातक हो सकती है

जगाने वाला

मैंने देखा है—संसार में हर कंकर भी शकर बन सकता है, यदि कोई पुजाने वाला हो तो... ?

हर राह मजिल बन सकती है, यदि कोई बताने वाला हो तो. ?

हर पुस्तक शास्त्र बन सकती है, यदि कोई समझाने वाला हो तो... ?

हर अक्षर मंत्र बन सकता है, यदि कोई मिलाने वाला हो तो ?

हर जड़ी औषधि बन सकती है यदि कोई प्रयोग में लाने वाला हो तो ?

हर पुरुष परमेश्वर बन सकता है, यदि कोई जगाने वाला हो तो... ?

सम्पदा के अर्थ

तुम्हें सम्पदा चाहिए ?

कौन सी ?

सम्पदा का अर्थ क्या है ?

‘सम्यक् तया सम्पद्यते या सा सम्पदा’ “जो सम्यक् नीति से न्यायपूर्वक प्राप्त होती हो, वह सम्पदा ”

तुम आत्म-निरीक्षण करो क्या तुमने जो नोटों से तिजोरी को भर रखी है वह सही माने में सम्पदा है ? यह वैभव का अम्बार लगा रखा है, क्या वह न्याय और नीति से प्राप्त किया है ?

जो अन्याय, अनीति और दुर्व्यवहार से प्राप्त की जाती है, वह सम्पदा नहीं, विपदा है—“विपम मार्गेणापद्यते या सा विपदा ”

विपदा को तुम सम्पदा समझ बैठे हो, यही भ्रान्ति है.

जहर को तुम अमृत मान बैठे हो, कितना बड़ा अज्ञान है यह !

सम्पदा – न्याय से प्राप्त वस्तु है

विपदा—अन्याय से प्राप्त !

विपदा से यदि घबराते हो, तो उसे सत्कर्मों में व्यय कर डालो, वह सम्पदा बन जायेगी ।

- आन्तरिक सम्पदा

जिसे जीवन की आन्तरिक सम्पदा प्राप्त हो गई, वह बाह्य सम्पत्ति और वैभव को 'विपदा' मानता है.

बाह्य-सम्पदा बादलों की रंगरेलियों की तरह क्षणिक है, आन्तरिक सम्पदा ध्रुव की तरह अचल ! सुस्थिर !

उभयमुखी साधना

तप उभयमुखी साधना है.

बाहर में चलने वाला अनशन आदि तप जब समभाव की अन्तरंग साधना के साथ जुड़ता है, तब वह आभ्यन्तर तप हो जाता है

बाह्य और आभ्यन्तर का समन्वय करके चलने वाली साधना ही जैनधर्म की उभयमुखी साधना है. वही तपकर्म निर्जरा है, और मक्ति का अनन्यतम साधन.

सुखी कौन ?

सुखी कौन ?

जो किसी दूसरे के सहारे को आकाशा करता है, वह पञ्चमूखापेदी है और वह ससार का सबसे बड़ा दीन पुरुष है.

अरस्तु ने सुखी की परिभाषा करते हुए लिखा है—' जो आत्मनिर्भर है, वह सबसे अधिक सुखी है "

सफलता के लिए

सफलता चाहिए ?

तो, कभी भी हताश-निराश न होइए. अपने कर्म में, वर्तमान में जुटे रहिए, समगादड़ की तरह अपने रास्ते में चिपट जाइए.

अन्य शिष्य

यदि चारो ओर शत्रुओ का जाल फैला हुआ है, तो सावधानी से ऐसे जमे रहिए, जैसे दांतों के बीच जीभ

यदि आपको अपने पथ से विचलित करने के लिए भय व प्रलोभन के आघी-तूफान उठे आ रहे हों, तो जैसे रावण की सभा में अगद ने अपने पैर गड़ाए वैसे जीवन पथ पर पैर गड़ा कर डट जाइए !

सफलता मिलेगी, अवश्य मिलेगी !!

श्रेष्ठ नर्तकी

सब से श्रेष्ठ नर्तकी वह है, जो अभिनय करते समय इस भाव से ललकती रहती है कि वह किसी को प्रसन्न करने के लिए किसी के समक्ष नृत्य नहीं कर रही है, किन्तु आत्म देवता को प्रसन्न करने के लिए नाच रही है

और सब से बड़ा गायक वह है, जो किसी को रिझाने के लिए किसी के समक्ष स्वरालाप नहीं करता, किन्तु आत्माभिव्यक्ति के लिए ही आत्मदेव के समक्ष तन्मय होकर गाता है

चाह क्या है ?

शास्त्रों में मन को कामधेनु और कल्पवृक्ष कहा है. इससे जो चाहो सो प्राप्त कर सकते हो !

पर, पहले यह बात बताओ कि तुम्हारी 'चाह' क्या है ?

तुम दूसरों का सुख छीन कर सुखी बनना चाहते हो, या अपना सुख बांट कर !

सुख की पहली तृष्णा नरक की ओर ले जायेगी. और दूसरी कामना स्वर्ग का द्वार उघाड़ देगी

उपासना

उपासना शब्द का अर्थ है—आत्मा के समीप निवास करना.

जिस उपासना में आत्मा की समीपता नहीं है, वह उपासना नहीं केवल उपहास है.

उपासना और वासना

उपासना और वासना में उतना ही विरोध है, जितना अमृत और विष में है.

मन की डाली पर पलने वाला एक सुन्दर सुरभित फूल है, एक तीक्ष्ण काँटा.

शक्ति का सदुपयोग

भय—व क्षोभक विचारों से शक्ति क्षीण होती है

शान्त व स्थिर विचारों से शक्ति की वृद्धि होती है

सेवा व धार्मिक विचारों से शक्ति का सदुपयोग होता है

तुम्हें शक्ति-सचय करके उसका सदुपयोग करना है, तो भय से दूर रहो, और शान्तिपूर्वक सेवा में जुट जाओ ।

सत्य के रूप

सत्य जीवन का अखण्ड तत्त्व है उसके विभिन्न रूप जीवन को आवृत किए हुए हैं

प्रेम—यह सत्य का स्नेहमय-रूप है

न्याय—यह सत्य की समत्व भावना है.

सम्यक्त्व—सत्य की शोधक वृत्ति है.

शान्ति—यह सत्य की अन्तिम उपलब्धि है

स्वायं, परमा

स्वदेह भाव में केन्द्रित अहं स्वायं है 'स्वदेह' से स्व-कुटुम्ब, स्व-समाज तथा स्व-देश के लिए विस्तृत स्वायं—परार्थ बन जाता है परार्थ का विश्वमंगल रूप ही परमार्थ है

हृदय, प्रयोग

आत्मा से परमात्मा के साथ चिन्तन-मूढ़ जोड़ना योग है

शान्ति निधि

अणु और प्रकृति की परिक्रमा करना प्रयोग है.

प्रयोग को योग से अनुबन्धित करके चलिए, वह श्रेयस्कर होगा
योग-प्रयोग अलग-अलग रहेंगे तो प्रयोग विनाशकारी सिद्ध होगा और
योग केवल भार !

‘जैन’ कौन ?

राग-द्वेष को विजय करने वाले—‘जिन’ कहलाते हैं. ‘जिन’ का
अनुगामी अर्थात् विजय पथ का अनुगामी जैन होता है.

‘जैन’ विकारों का विजेता, भय और अज्ञान का विजेता, राग-द्वेष
का विजेता.

आत्म-विजय ही जिसका जीवन लक्ष्य हो—वह है जैन !

क्या ‘जैन’ की परिभाषा उसके वर्तमान चरित्र पर एक चुनौती नहीं
है ? क्या वह अपने स्वरूप को पहचान पाया है ?

तेरा काव्य ?

कवि ! तेरा काव्यशास्त्र क्या है ?

पुस्तकों में वर्णित, रससिद्धान्तों में विवक्षित और छन्द-अनुशासन
में बंधा-बंधाया लय-गीति का स्वर-गुंजन ही क्या तेरा काव्य है ?

नहीं ! तेरा काव्य तेरे अनन्त अन्तराल में प्रच्छन्न है. तेरी अनुभूतियाँ -
मानवीय चेतना को स्पर्श करने वाली प्रेरणाएं और आस्था के अतल
उत्स से उछलकर लहराने वाली भाव-लहरियाँ ही तेरे काव्य की
अमर अभिव्यक्ति है.

✓

वाग्देवी

वाणी समुद्र से भी अधिक गंभीर है, आकाश से भी अधिक विराट् है.
वाणी की महत्ता का निदर्शन करते हुए वैदिक ऋषि ने कहा है—

‘वाग् वै समुद्रम्’

वाणी समुद्र की तरह अनन्त है. इसमें बहुमूल्य मणियों का अखण्ड-
कोष छिपा है. अनन्त वैभव भरा पड़ा है. जिसके पास वाणी का

वैभव प्राप्त करने की कला है, वह ससार का सबसे महान् ऐश्वर्यशाली है। जो वाणी से दरिद्र है, वह ससार का सबसे बड़ा दरिद्र है।

ममूत भावों को मूर्तरूप देने वाली वाणी— मानव के लिए प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ वरदान है यदि वाणी न होती तो मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं होता

ऋग्वेद के सूक्त में कहा है—

‘अहं राष्ट्री, सगमनी वसूना’

ऋग्वे० १०।१२५।३

मैं वाग्देवी ससार की अधीश्वरी हूँ मैं अपने उपासकों को ऐश्वर्य एवं समृद्धि देने वाली हूँ।

वाणी की महिमा अपार है।

उचित वाणी

समय पर और उचित शब्दावली में कहा गया एक वाक्य भी सोने की अगूठी में जड़े हुए नगीने की तरह सदा चमकता रहता है।

बोल कर बोया भी जाता है, खोया भी जाता है और कुछ सजोया भी जाता है।

जैसी वाणी, वैसा ही फलित !

✓ पवित्र वाणी

पानी की भाँति वाणी भी सदा स्वच्छ और पवित्र हो अजर्दी सगती है।

✓ वाणी ब्रह्म है

वाणी ज्ञान की अधिष्ठात्री है शारदायन आरण्यक में वाणी को ही ब्रह्म कहा है—

‘अ वा वाग् ब्रह्म’

— ११३ —

जो वाणी ब्रह्मस्वरूप है, उसको सदा पवित्र और स्वच्छ रखना चाहिए.

ब्रह्म स्वरूप वाणी के द्वारा कटु एवं असभ्य शब्दों का प्रयोग करने वाला क्या उस ब्रह्म का अपमान—अवहेलना नहीं करता है ?



वाणी अग्नि है

‘वाचि मे ऽग्नि प्रतिष्ठितो —’

(शां. आ. ११।६)

मेरी वाणी में अग्नि प्रतिष्ठित है—यह उद्घोष करने वाला भारतीय चिन्तन वाणी की अमोघ शक्ति से अपरिचित नहीं है

वाणी अग्नि है—उसको एक चिनगारी लाखों मन कूड़े-कचरे के ढेर को क्षणभर में भस्मसात् कर सकती है यदि उसका गलत उपयोग किया गया तो वही वाणी सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर सकती है आज की भाषा में वाणी एक—अणुशक्ति (अणु ऊर्जा) है वह विनाश एवं निर्माण दोनों कार्य कर सकती है आवश्यकता है मनुष्य उसके प्रयोग की कला सीखे और निर्माण के द्वार खोलता जाये.

मधुर वाणी

जिस चाय में चीनी नहीं डाली गई हो, उस चाय में और वनस्पति के काढ़े में क्या अन्तर है ? वह कड़वी चाय एक घूँट पीते ही थू-थू करके थूकी जाती है.

जिस वाणी में मधुरता नहीं होती, उस वाणी में और वकवास में क्या अन्तर है ? वह कठोर वाणी नुनते ही श्रोता थू-थू कर घृणा प्रदर्शित करने लगते हैं

भगवान महावीर ने कहा है—वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमिय

—दशवै० ७।५६

बुद्धिमान हितकारी एवं आनुलोमिक—प्रिय वाणी बोले.

यही बात अथर्ववेद के सूक्त में व्यक्त की गई है—

‘एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक मधुर सभाषण करना चाहिए’

मधुर वाणी से कही गई कड़ी से कड़ी बात भी श्रोता के गले उतर जाती है जैसे कि मीठे केप्सूल के भीतर भरी हुई कड़वी दवा

समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति सर्वप्रथम वाणी को मधुर, प्रिय एवं हितकारी बनाने का प्रयत्न करे ।

५ गानी

गाली रिटर्न टिकट लेकर ही मुह के स्टेशन से रवाना होती है। ऋषियों की भाषा में कहे तो—“शप्तारमेतु शपय”

—अथर्व० २।७।५.

‘शाप (गानी) शाप देने वाले के पास ही लौटकर आ जाता है’

अपना मुह देखिए

मनुष्य अपनी आँखों से ससार की सब वस्तुएँ देख सकता है, किन्तु अपने चेहरे पर लगे दाग को नहीं देख सकता

दूसरों को देखना सरल है, स्वयं को देखना कठिन है तथागत बुद्ध ने कहा है—

‘सुदत्तं वञ्जमञ्जोस अत्तनोपन दुदसो’

—धम्मपद १८।१८.

दूसरों का दोष देखना सरल है, अपना दोष देख पाना बहुत कठिन.

जिस प्रकार अपना मुह देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार अपने दोष देखने के लिए—आत्मचिन्तन रूप दर्पण की आवश्यकता है. विवेक रूप नयन जब खुलेगा और आत्म-चिन्तन का स्वरूप दर्पण नन्मुरा होगा तभी मनुष्य अपने अन्तर का दर्शन कर सकेगा.



संकल्प

संकल्प मनरूपी मोटर का ब्रेक है. ब्रेक की आवश्यकता हर समय नहीं, पर दुर्घटना के समय होती है

मन जब विकारों की दुर्घटना में फँसता है, तब संकल्प का ब्रेक ठीक रहना चाहिये ताकि दुर्घटना से बचा जाये.

अमृत. अनुभव

अमृत की एक वूँद की अपेक्षा अनुभव की एक वूँद अधिक श्रेष्ठ है
अमृत सिर्फ एक जीवन को बचाता है, अनुभव हजारों लाखों जीवन को सुखमय बनाता है

ब्रह्मचर्य की साधना

ब्रह्मचर्य की साधना के लिए समय की साधना करनी होगी.

मन-संयम, दृष्टि-संयम,

वाणी-संयम, खाद्य-संयम,

इन सबके संयम का रूप ही ब्रह्मचर्य है



सन्त

अधेरी रात में गगन में तारे चमक रहे हैं, भवन में दीपक चमक रहे हैं, उसी प्रकार अज्ञान तमसाच्छन्न संसार में अपनी निर्मल ज्ञान ज्योति के साथ सन्तपुरण चमक रहे हैं

गर्जते नहीं, चमकते हैं

दीपक की तरह सन्त बोलते नहीं, चमकते हैं

बादलों में छिपी बिजली की तरह सन्त गर्जते नहीं, चमकते हैं

मन्त की पहचान

स्वभाव से दीन, जाति से हीन, वृत्तियों से अलीन और आचरण से

मलिन व्यक्ति को सुवार कर जो उन्नीन उन्नत) बना देता है, वह महान् कलाकार इस पृथिवी पर 'सन्त' कहलाता है

जो दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए स्वयं त्रास (कष्ट) उठा सकता है, भूखे की भूख मिटाने के लिए खुद त्याग कर सकता है, पर, कभी किसी दीन दुखी का उपहास नहीं कर सकता, उस महान् आत्मा का नाम है— 'सन्त' !

जो सेवा करने के समय सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा रहता है, किन्तु सेवा का फल लेने के समय सबसे पीछे रहता है, वह कौन है ?

उसका नाम है— 'सन्त' ! सन्त सेवा चाहता है पुरस्कार नहीं !

काम रूपी अश्व के मुँह पर जिसने ज्ञान की लगाम डालकर सधम के सुदृढ हाथों से पकड़ रखा है, उस कुशल अश्वारोही को 'मन्त' कहा जाता है

'सन्त' का जीवन 'वमन्त' के समान सदा प्रफुल्लित और महकता रहता है ।

×

×

×

'सन्त' हमेशा टकोर (घड़ी का घण्टे का शब्द) करते हैं, किन्तु कभी भी टक टक (निरन्तर होने वाला शब्द) नहीं करते

टकोर में मनुष्य चकोर बनता है, और टक-टक में चिटचिट टकोर समय पर की जाती है और टक-टक निरन्तर ! टकोर की ध्वनि सब ध्यान में मृगत है, किन्तु टक-टक पर कोई कान भी नहीं देता

×

×

×

आत्म-शरण

सीपी के आत्म-शरण से मोती और चाँद के आत्म-शरण से चमकती बन बनता है

मत्त के आत्म-शरण में साधुता का विकास होता है, और यदि मैं आत्म-शरण में नष्ट रहूँगा तो निर्माण होता है

मत्त विन्द

साधक के दो रूप हैं —

कुछ साधक दीपक के समान होते हैं—जो कण्टो की हवा के हलके से झोके से ही गुल हो जाते हैं.

कुछ साधक अगारे के समान होते हैं—जो कण्ट व सकट की हवा का स्पर्श पाकर और अधिक तीव्रता के साथ चमकते हैं विपत्तियों की आधी में उनका तेज और अधिक निखर उठता है

साधक

साधक के लिए कहा गया है— वह वज्र के समान कठोर हो, तो कुसुम के समान कोमल भी हो

सिद्धान्त एवं आदर्श के प्रश्न पर उसका संकल्प वज्र के समान कठोर, दृढ़ एवं अविचल रहे वह साहस पूर्वक बलिदान होने को प्रस्तुत रहे

जहाँ व्यावहारिकता एवं व्यक्तिगत जीवन का प्रसंग उपस्थित हो, वहाँ पर उसका हृदय पुष्प के समान कोमल, मृदुल एवं स्नेहिल बना रहे प्रेम एवं सहानुभूति से मुस्काता रहे—यही साधक का जीवन दर्शन है.

विश्वास और विवेक

विश्वास आत्मा की ज्योति है, संशय आत्मा का अन्धकार है. विवेक हृदय का सौरभ है, अविवेक मन की गन्दगी है

श्रद्धा का जल

साधना के वृक्ष को श्रद्धा का जल सींचते रहो, सिद्धि के अभिनव पुष्प अवश्य खिलेंगे.

साधु का मन

वृक्ष का मूल जमीन में रहता है और शाखाएँ, पत्ते, फूल, फल बाहर विस्तृत आकाश में फैले रहते हैं.

साधु का व्यवहार जनता में (समाज में) फैला रहता है किन्तु उसका मन तो अन्दर में ज्ञान ध्यान की गहराई में आवद्ध रहता है

पक्षी हमेशा वृक्ष की ऊँचाई पर ही रहता है, किन्तु जब उन्हें दाना चुगना होता है तो नीचे जमीन पर उतरते हैं।

साधु अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति के लिये ही समाज की भूमिका से सम्बन्ध जोड़ते हैं किन्तु उनका मन तो सदैव ज्ञान और भक्ति की ऊँचाई पर ही रहता है

✓ साधक का जीवन

मखन किससे निकला ?

छाछ (मट्ठा) से ।

एक बार अपना रूप लेने के बाद फिर उसे छाछ में कितना ही डालो, वह छाछ नहीं बनता

सच्चे साधक का जीवन ऐसा ही होता है वह ससारी जीवों में से माता है, पर एक बार साधक बन जाने के बाद, फिर भले ही ससारी जीवों में रहे, किन्तु पुनः ससारी नहीं बनता ।

महापुरुष का साध्व्य

पानी का किनारा जैसे सरसब्ज रहता है, वैसे ही महापुरुष का साध्व्य सदा चिन्तन, मनन में सरसब्ज रहता है।

सामर्थ्य किम काम का ?

मानव ! तू शक्तिनयन होकर भी यदि किसी दुर्बल, और तरंग को पीछा में हाथ नहीं बटा सका, तो तेरी शक्ति किम काम की ?

मानव ! तू समर्थ होकर भी यदि दोन-दुनों और असमर्थ के धातू नहीं पीछे गता, तो तेरा सामर्थ्य किम काम का ?

✓ साधक का

प्रकाश के लिए कोई घी का दीपक जलाना है, कोई तेल का कोई मोमबत्ती जलाना है, तो कोई बिजली ।

नमः शिवाय

साधन भिन्न है, मगर साध्य सबका एक है—प्रकाश.

आत्मज्योति को प्राप्त करने के लिए कोई जप करता है, कोई ध्यान करता है, कोई स्वाध्याय !

साधन भिन्न है, मगर साध्य सब का एक है—आत्मज्योति प्रज्ज्वलित करना.



आत्म-चिन्तन

प्रातः उदय होने वाला सूर्य संध्या की गोद में जाते-जाते जीवन का एक महत्वपूर्ण दिन चुराकर ले जाता है

रात्रि को निद्रा की गोद में सोते-सोते आत्म-चिन्तन करो—“आज का दिन सफल हुआ या असफल ?”

तुमने कुछ ऐसा तो नहीं किया कि जिसकी चिन्ता में आज भी परेशान रहे, और आने वाला कल भी परेशानी में गुजरे, तथागत बुद्ध ने कहा है—

पाप करने वाला—पहले भी सोचता है, पीछे भी सोचता है पाप करते भी सोचता है —“पापकारी उभयत्य सोचति”

पुण्य करने वाला—पहले भी प्रसन्न रहता है, पीछे भी प्रसन्न रहता है, पुण्य करते भी प्रसन्न रहता है—“कतपुञ्जो उभयत्य मोदति”

तुम सोचो—आज का दिन शोक करने का कारण तो नहीं बना ?

आज का दिन यदि सुकृत में व्यतीत हुआ है, तो निश्चय ही तुम्हारे आनन्द का कारण होगा.

आँख खोल !

देख ! तेरी आत्मा के स्वर्णमपथ पर ज्ञान-दर्शन-चाँदनी-माणिक्य-किरीटों के असंख्य-असंख्य बहुमूल्य आभूषणों की शोभा-ती-माणिक्य-किरीटों के असंख्य-असंख्य बहुमूल्य आभूषणों की शोभा-

आँख खोल ! देख ! और जी-भरले ! ते-
का दारिद्र्य मिट जायेगा

धुआँ दमघोटू होता है, वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता किन्तु अगरवत्ती का संपर्क पाकर धुआँ कितना मनभावना और सुहावना लगता है ?

व्यक्ति कितना ही बुरा और निम्न क्यों न हो, किन्तु सत्पुरुष के संपर्क में आकर वह भी लोकप्रिय और श्रेष्ठ बन जाता है.

गन्दा जल

मैंने देखा—नाली के गन्दे जल का छोटा लग जाने पर बहुत से धार्मिक और स्वच्छता प्रेमी छिः छिः करते हुए नाक भौंह सिकोड़ते, स्नान करते और पुनः नए कपड़े पहनते हैं

मैंने देखा—वही गन्दा जल वहता वहता जब गंगाजल में मिल गया. तो अब वे ही धार्मिक, श्रद्धालु स्वच्छता प्रेमी उस जल को अञ्जलि में भर कर सिर पर चढ़ाते हुए देवताओं को अर्घ्य देते हैं.

यह चमत्कार किसका है ?

संगति का ।

गन्दाजल गंगाजल बन सकता है, ककर शकर बन सकता है, पापी-धर्मिमा बन सकता है—संगति श्रेष्ठ चाहिए. सत्संग होना चाहिए

महापुरुष बनने का तरीका

✓ महापुरुष बनने का एक तरीका है कि जितना दूसरों को बदलना चाहते हो, उतना अपने को बदल लो जो अपने को बदल लेता है, वह धर्मात् उत्तम आदर्श दूसरों को बदल देता है

कोई भी महापुरुष पहले बागी नहीं, चरित्र में बोलता है.

✓ मान्

नदी का पानी जितना अधिक गहरा होगा उतना ही अधिक मान् एवं स्थिर होगा.

मार्ग दिग्दर्श

मनुष्य जितना अधिक महान होगा, उतना ही अधिक गम्भीर एवं शान्त होगा.

महानता

दुष्ट को नष्ट करना वीरता हो सकती है, किन्तु महानता नहीं ! महानता है दुष्ट को भी शिष्ट बनाने में. दुर्जन को सज्जन बनाने में. महानता सहार में नहीं, उद्धार में है

सत्पुरुष

सत्पुरुष का जीवन नारियल के समान है
नारियल बाहर में कठोर किन्तु भीतर में स्नेहिल, मधुर और स्वच्छ होता है नारियल का यही रूप उसकी मार्गलिकता का प्रतीक है
सत्पुरुष जीवन के बाह्य क्षेत्र में संघर्ष व कष्टों से जूझने के लिए कठोर बने रहते हैं, किन्तु उनका हृदय सदा स्नेह और माधुर्य से भरा रहता है सदा स्वच्छ व पवित्र विचारों से अनुप्राणित रहता है.

तीन बल

हिंसा, प्रतिहिंसा का मार्ग पशुबल का मार्ग है, वह पशुबल है. प्रेम और सद्व्यवहार का मार्ग मानवता का मार्ग है, वह मानवीय-बल है

सत्य और समर्पण का मार्ग देवत्व का मार्ग है, वह देवीबल है.

मानव, महामानव

जो परिस्थितियों को देख कर चलता है, वह मानव है, परिस्थितियाँ मानव का निर्माण करती हैं.

जो परिस्थितियों को बनाकर चलता है वह महामानव है, महामानव स्वयं परिस्थितियों का निर्माण करता है



चिन्तन की चाँदनी

अ

त

य

ल

मानव का अन्तःकरण अनन्त आत्मबल का अक्षयकोष है । बाहर में वह जितना दीन-हीन-दुर्बल प्रतीत होता है, भीतर में उतना ही समृद्ध, उन्नत एवं सबल है

एकाग्रता, भक्ति, श्रद्धा, साहस, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, विवेक, अनासक्ति अथवा आदि के रूप में उसका अन्तर्बल असोम है, अनन्त है

वह अपने असोम अन्तर्बल (आत्मबल) का परिज्ञान करें, उसे जागृत करें और जीवन-भर में विजग-दुन्दुभि बनाता हुआ आगे बढ़ता चले—इसी पवित्र प्रेरणा के निमित्त ये अक्षरविन्दु निर्मित हुए हैं

मन की कुटिया

मन की कुटिया को सद्विचारों के छप्पर से छाए रखो, ताकि विकारों एवं दुर्विचारों की वर्षा का पानी उसमें न चूए

इसी बात को तथागत ने भिक्षुओं को सम्बोधित करके यों कहा है—

यथागार नृच्छन्नं वृद्धो न समतिविज्जति ।

एवं नभावितं चित्तं रागो न समतिविज्जति ॥

जिस प्रकार छाए हुए घर में पानी नहीं टपकता है, उसी प्रकार सुभावित चित्त में विकार नहीं घुसते.

मन . लाडला बेटा.

जैसे इकलौता बेटा मा-बाप के प्यार में इतरा कर ऊधमी बन जाता है, स्वयं मा बाप और वृजुर्गों की आज्ञा की अवहेलना करने लग जाता है, उसी प्रकार हमारा मन लाडले बेटे की तरह इतराया हुआ भव हमारे (आत्मा के) ही आदेश को ठुकराकर मनमानी करने लग गया है.

मन का मनीषेण

मन एक मनीषेण (Monkey Beg) है, इसमें दुर्विचारों के कंकर नहीं, सद्विचारों के सिक्के भरिए.

मन की तिजोरी

मन मसार की सबसे गुप्त और सुरक्षित तिजोरी है इसके खजाने का पूरा पता स्वयं मालिक को भी नहीं है.

धोखे, तुम इस तिजोरी में क्या भरोगे ?

विकार, वैगनह्य और दुर्भावों का बूटाकरकट ? या नदमाच और सद्विचारों की बहुमूल्य मणियाँ ?

मन की चेन्नी

मनुष्य का मन चेंद्री के समान है इसमें प्रतिमा का मैल लगते ही

जिस साधक का मन साधना में सध गया है, वह संसार के बीच रहता हुआ भी ससार-भाव के साथ कभी भी घुलता-मिलता नहीं.

मन सृष्टि का निर्माता है.

मन ही सृष्टि का निर्माता है जिसने मन को साध लिया, उसने समूची सृष्टि को साध लिया. आचार्य शंकर के शब्दों में—“जित जगत्केन ? मनो हि येन” जिसने मन को जीत लिया उसने जगत् को जीत लिया

मन मशीन है.

मन एक मशीन है. मशीन की जिस प्रकार बार-बार सफाई (ग्रॉइलिंग) करना पड़ता है उसी प्रकार सद्विचारों के मनन से मन का भी ग्रॉइलिंग करते रहिए, वह कभी दुर्विचारों का जग नहीं खायेगा.

नन्हा सा कंकर

तालाब में नन्हा-सा एक कंकर डालते ही जिस प्रकार समूचा तालाब तरंगित हो जाता है, उसी प्रकार मन में विचारों की एक हल्की-सी लहर उठते ही सम्पूर्ण मन आन्दोलित हो उठता है.

मेरुदण्ड

मन जीवन का मेरुदण्ड (रीढ़ की हड्डी) है. मेरुदण्ड की स्वस्थता पर शरीर की स्वस्थता निर्भर करती है, और मन की स्वस्थता पर जीवन की स्वस्थता.



मन का खेत

साधक ! तुमने साधना की खेती की है, मन का खेत त्याग व संयम के हल से जोत कर तैयार किया है क्षमा और करुणा के सुन्दर बीज डाले हैं अब इस खेत में विकारों की घास-पात न उगने दो. यदि उगने लगी है तो काट कर साफ कर दो. अन्यथा वह सद्गुणों की फसल पर छा जायेगी और उसे बढ़ने नहीं देगी.

साधक ! मन का खेत साफ कर लो.

मन की कुटिया

मन की कुटिया को सद्विचारों के छप्पर में छाए रखो, ताकि विकारों एवं दुर्विचारों की वर्षा का पानी उसमें न चूए.

उसी बात को तथागत ने भिक्षुओं को सम्बोधित करके यो कहा है—

यथागार गृच्छन्न वृद्धी न गमतिविज्जति ।

एव नुमावित चित्तं गमो न ममनिविज्जति ॥

जिस प्रकार छाए हुए घर में पानी नहीं टपकता है, उसी प्रकार सुभावित चित्त में विकार नहीं घुसते

मन लाटना वेटा.

जैसे इकलोता वेटा मां-बाप के प्यार में इतरा कर ऊधमी बन जाता है, स्वयं मा बाप और बुजुर्गों की आज्ञा की अवहेलना करने लग जाता है, उसी प्रकार हमारा मन लाडले बेटे की तरह इतराया हुआ अब हमारे (आत्मा के) ही आदेश को ठुकराकर मनमानी करने लग गया है

मन का मनोवेग

मन एक मनोवेग (Mony Beg) है, इसमें दुर्विचारों के ककर नहीं, सद्विचारों के सिक्के भरिए.

मन की तिजोरी

मन ससार की सबसे गुप्त और सुरक्षित तिजोरी है इसके खजाने का पूरा पता स्वयं मानिक को भी नहीं है.

घोली, तुम इस तिजोरी में क्या भरोगे ?

विकार, वैमनस्य और दुर्भावों का कूटाकरफट ? या नदभाव और सद्विचारों की बहुमूल्य मणियाँ ?

मन की चेटरी

मनुष्य का मन चेटरी के समान है. इसमें प्रतिभा का मैल लगते ही

तैज जाग्रत हो जाता है जरा-सा श्रम का बटन दबा कि नही ज्ञान का प्रकाश जगमगा उठता है

मद की परिभाषा

मद, (अहंकार) मदन (काम) और मन को मारने वाला ही सच्चा मद कहलाता है.

मन को घूरा मत बनाओ !

देखो यह गांव के घरे पर समूचे गांव का कूड़ा-कचरा इकट्ठा हो रहा है, गन्दगी फैल रही है, बंदू के मारे दमघुटा जा रहा है, और कितने कीड़े कुलबुला रहे हैं ?

अब उधर देखो, एक निन्दक के मनरूपी घरे पर गांव भरके पापों का कूड़ा-कचरा इकट्ठा हो गया है. उसमें असद्भावों की गंदगी फैल रही है, दुर्वचनों की दुर्गन्ध मार रही है और मात्सर्य तथा द्वेष के कीड़े कुलबुला रहे हैं.

अपने मन को अच्छाइयों की खुशबू से भरा वगीचा नहीं बना सकते हा, तो कम से कम गांव का घूरा तो मत बनाओ !

✓ मन जादूगर है.

मन जादूगर है, वह क्षण भर में आकाश में चौकड़ी भरता है, तो दूसरे ही क्षण समुद्रों में लहरों पर तैरता चला जाता है. एक क्षण पर्वतों की चोटियों पर छलांगे लगाता हुआ मिलेगा तो दूसरे क्षण कहीं अन्धगर्त में ठोकरें खाता होगा.

इस जादूगर की लीला विचित्र है कोई समझ नहीं पाया. इसे छूना 'वायुरि वसु दुष्करम्' है, और इसे पकड़ पाना तो असंभव ! यह तीव्र गति से 'दुद्धम्सो परिवावइ' मनचले घोड़े की तरह दौड़ रहा है, बिना थमे, बिना रुके

मनोयोग

मनोजयी महावीर ने कहा—'परिणामे वधो, परिणामे मोक्षो बन्धन शौर मुक्ति मन के भीतर ही है.

मुक्ति के साधक को सर्वप्रथम मनोजय करना चाहिए. मनोयोग पर विजय प्राप्त करना चाहिए.

जब साधक चौदहवें गुणस्थान में प्रविष्ट होता है तो, सर्वप्रथम मनोयोग का निरोध करता है. मनोयोग का निरोध होने पर वचन-योग और काययोग का निरोध स्वतः हो जाता है.

चार प्रकार के मन

विचारको ने मन की दशाओं का विश्लेषण करके उसे चार स्तरों पर विभक्त किया है.

(१) मरा मन—जिसका आत्मविश्वास टूट गया है, जीवन में आशाएँ निराशा में बदल गई हैं, कुछ भी करने की शक्ति, स्फूर्ति व ऊर्जा जिसमें नहीं है

(२) उरा मन—जिसकी आत्म शक्तियाँ विशृङ्खलित हो गई हैं, जो चलता तो है, पर हर चरण लड़खड़ाता गिरता है, भय-भीत, शकायस्त एवं विशृङ्खलित मन—उरा मन है.

(३) थका मन—जो आशा-निराशा के थपेड़े मारकर घात हो गया हो, जिसमें स्फूर्ति तो है, गति की क्षमता भी है, पर उचित प्रेरणाओं के अभाव में निठल्ला पड़ा रहता है, बेकार टूटी गाड़ी की तरह

(४) जीवित मन—जिसमें आशा, स्फूर्ति और माहम का रक्त दौड़ रहा हो, वह जीवित मन है. उसे न प्रेरणा की जरूरत होती है और न नहारे की.

मन का काम क्या है ?

समाज में दीध शक्ति और सम्मान में रहने का एक गुप्तमंत्र है—
प्रपन्ना अभिमान स्वयं कुचन डालो मन के रहने में नहीं, आत्मा के कहने में धनो

जान की जान मगिने वाला मानी होता है, आत्मा की बात मानने वाला जानी '

जो मन का दास है, वह मनुष्य का दास है, दास का स्वाभिमान और मन्मान कैसा ?

स्वाभिमान और मन्मान की रक्षा के लिए मन के स्वामी बन कर रहो !

तल्लीनता

मानसिक तल्लीनता से शरीर की नसों में एकतानता उत्पन्न होती है. इसीसे शरीर मुखानुभूति करता है तल्लीनता के तीन रूप हैं—काम, भक्ति और ध्यान.

स्त्री विषयक तल्लीनता काम है.

ईश्वर विषयक तल्लीनता भक्ति है.

आत्मा विषयक तल्लीनता ध्यान है

एकाग्रता और पवित्रता

जो पानी स्थिर होगा और स्वच्छ निर्मल होगा, उसी में प्रतिबिम्ब दिखलाई देगा. इसका अर्थ है एकाग्रता का मूल्य तभी है जब उसमें पवित्रता है.

पवित्रता रहित एकाग्रता, स्थिर किन्तु मलिन जल की तरह है.

मैला दर्पण

मन के दर्पण को पोछ कर साफ करो. मिट्टी से मैले दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखलाई नहीं पड़ता.

वासना से मलिन-मानस में ईश्वरीय गुणों का प्रतिबिम्ब कैसे दिखलाई देगा ?

विचारों की पवित्रता

गुप्त से गुप्त विचार को भी कभी अपवित्र न होने दो.

विचार रूपी बीज ही वाणी और व्यवहार के रूप में पल्लवित-पुष्पित होता है.

यदि बीज पवित्र होगा, तो फल-फूल भी निश्चित ही पवित्र और मधुर होंगे.

६।११।१५

एकाग्रता

कार्य सिद्धि के लिए एकाग्रता अमोघ उपाय है बिना एकाग्रता के प्रवृत्ति में प्राण संचार नहीं होता साधना निर्जीव रहती है निर्जीव साधना कभी भी लक्ष्य की ओर कैसे गति कर सकती है ?

भगवान् महावीर ने कहा है —

तच्चित्तं तम्मग्नं तल्लेगे, तदज्झवमिह तत्तिव्वज्झवसारणे ।
तदट्ठोवउत्तं तदप्पियकरणे, तदभावणामाविए ॥

— अनुयोगद्वार ३८

जो करो, वह तन्मय होकर करो, चित्त को वही लगाओ, लेश्या को वही नियोजित करो वैसे ही अध्यवसाय जागृत करो उसके लिए समर्पित हो जाओ, उसी में उपयुक्त हो जाओ, तभी तुम्हारी क्रिया भाव क्रिया होगी, सजीव क्रिया होगी.

एक क्रिया में शक्ति लगाने से क्रिया निरंतर जाती है. अन्यथा वह विरर जाती है

कायोत्तमं मानसं चिकित्सा

मन मस्तिष्क और शरीर के बीच एणुमूत्रीय सम्बन्ध हैं तीनों की सामञ्जस्य बिहीन गति से उत्पन्न होने वाली स्थिति स्नायविक तनाव के रूप में आजकल का प्रमुख रोग है

आजकल का बुद्धिजीवी, राजनयिक प्रायः इस रोग का शिकार होता है दृष्टिगोचर होता है

जैन साधना में इस रोग की एक महत्त्वपूर्ण चिकित्सा है—कायोत्तमं ! कायोत्तमं शरीर की प्रवृत्ति को नयन करता है, मानसिक प्रायेण को कम करता है और मस्तिष्क की गति को अनुमित रखता है

शरीर और मन की चंचलता को कम करना—स्नायविक रोग की सबसे महत्त्वपूर्ण चिकित्सा है

महान श्रुतधर आचार्य भद्रबाहु ने कायोत्सर्ग के पाँच फल बतनाए हैं—

१. दैहिक जड़ता की शुद्धि—श्लेष्म आदि के द्वारा देह में जड़ता आती है कायोत्सर्ग से श्लेष्म आदि दोष नष्ट होते हैं, अतः उनसे उत्पन्न होने वाली जड़ता भी नष्ट हो जाती है.
२. बौद्धिक जड़ता की शुद्धि—कायोत्सर्ग में चित्त एकाग्र होता है. एकाग्रता से बौद्धिक जड़ता नष्ट होती है.
३. सुख-दुःख तितिक्षा—मुख-दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है
४. शुद्ध भावना का अभ्यास होता है
- ५ ध्यानयोग की योग्यता प्राप्त होती है.

मूल मंत्र

‘जैन धर्म का मूल मंत्र है—‘कषाय-विजय’ ! कषाय-विजय’ के लिए ही समस्त साधनों का आलम्बन लिया जाता है पर, आज हो रहा है साधनों के नाम पर कषायों का उद्दीपन !

साधना क्षेत्र के आरोहियों के लिए यह फिसलन चिन्तनीय प्रश्न है

धर्मध्यान

धर्मध्यान (उच्च चिंतन) की आराधना करने वाले साधक के लिए तीन बातें आवश्यक हैं—

(१) हृदय सद्श्रद्धा से अनुप्राणित हो.

(२) निरन्तर स्वाध्याय का अभ्यास चालू रहे

(३) सद्भावना से हृदय को भावित करता रहे

ये तीनों बातें धर्मध्यान के लक्षण, आलम्बन एवं अनुप्रेक्षा से फलित होती हैं.

सन्तुलन

यह शरीर भी चंचल है, और मन भी चंचल है

चंचलता का त्याग करना सहज नहीं सम्पूर्ण चंचलता का त्याग करके जिया भी कैसे जाए ?

अधिक चंचल रहकर भी कोई अपना जीवन कैसे चलाए ?

जीवन की सफलता इसी में है कि चंचलता के साथ स्थिरता का संतुलन जमा रहे

जन परिभाषा में इसी को 'इन्द्रिय-संयम' एवं 'मन. सयम' कहा है.

वेग, आवेग मवेग

सबसे बड़ा सुख मन की शान्ति है

मन तो निरन्तर गतिशील है, वह वेगवान है. किन्तु वेग जब गलत मार्ग में बहता है, तो आवेग बन जाता है आवेग अशान्ति का मूल है.

मनुष्य का मन थकता है तो शान्ति की शरण में जाता है.

शान्ति की ओर मुड़ना ही नवेग है.

सवेग में मन की शान्ति प्राप्त होती है.

/ उपवास अग्नि है

उपवास एक आन्तरिक अग्नि है

अग्नि पाप फल को जलाती है अन्न को पचाकर मधुर बनाती है

उपवास में शारीरिक एवं मानसिक विकार भंग हो जाते हैं, हृदय शुद्ध होकर पवित्र तथा मधुर बन जाता है

उपवास की परिभाषा

उपवास का अर्थ है—समीर में रहना

किनसे समीप ?

स्वर्गात्, निर्मेय एवं इश्वर चित्तवृत्तियों के समीप रहना ! यही

उपवास की सच्ची परिभाषा है

उपवास का अर्थ आहार-त्याग ही नहीं है, वह केवल निवृत्तिपरक साधना ही नहीं है, किन्तु विषय विकार के त्याग की संयुक्त आराधना है

उपवास का प्रयोजन शरीर शोषण ही नहीं, किन्तु पोषण अर्थात् ध्येय को पृष्ठ करना, लक्ष्य की प्राप्ति करना भी है

तथागत बुद्ध ने लक्ष्यपूर्ति के लिए संकल्प किया था—“इस आसन पर बैठे-बैठे मेरा शरीर भले सूख जाएँ, चमड़ी, हड्डी और मांस भले विनष्ट हो जाएँ, किन्तु दुर्लभ बोधि को प्राप्त किए बिना यह शरीर इस आसन से विचलित नहीं होगा.”

इसी प्रकार का घोर संकल्प भगवान् महावीर ने किया था—“मैं सब प्रकार के कष्टों को तब तक सहन करूँगा जब तक केवलज्ञान की उपलब्धि न हो जाए.”

ये दोनों महान संकल्प उपवास के उदात्त प्रयोजन को स्पष्ट करते हैं.

दो साधन

स्वाध्याय और ध्यान—परमात्मभाव की अभिव्यक्ति के लिए दो अमोघ साधन हैं

स्वाध्याय और ध्यान के अभ्यास से परमात्म-ज्योति प्रकट होती है.

२ चमत्कार ।

मैं खड़ा था मधुछत्र (गहद के छत्ते) के पास.

मधुछत्र को तोड़ने के लिए एक आदमी आया. मक्खियाँ उस पर चिपट गईं, तोखें डंक मार-मार कर उसे घायल कर डाला, वह चिल्लाया और उलटे पावों भाग गया.

मैंने अनुभव किया - आदमी के सामने मधुमक्खी की क्या ताकत है ? यह कितनी कमजोर है ? किन्तु उनके सामूहिक आक्रमण ने मनुष्य जैसे बलवान शत्रु को भी परास्त कर दिया. यह संगठन का एक चमत्कार है

भावुक और श्रद्धालु

कागज अग्नि का स्पर्श पाते ही क्षण भर में जल उड़ता है और दूसरे ही क्षण जलकर राख भी हो जाता है

कोयला धीरे-धीरे जलता है, और बहुत देर तक जलता रहता है.

कुछ व्यक्ति उपदेश सुनकर कागज की तरह एकदम प्रज्वलित हो उठते हैं, पर उनका यह प्रकाश क्षणिक होता है, वे भावुक होते हैं.

कुछ व्यक्ति कोयले की तरह धीरे-धीरे, मगर लम्बे समय तक जलते रहते हैं, उनका प्रकाश दीर्घकालिक होता है वे श्रद्धालु होते हैं.

भक्ति

बुद्धि की शुद्धि और सवृद्धि के लिए उसे स्वाध्याय में जोड़िए.

मन की एकाग्रता और प्रसन्नता के लिए उसे भक्ति में लगाइए.

भक्ति की शक्ति

भक्ति एक शक्ति है. वह आसक्ति के बंधनों को तोड़कर मन की विरक्ति को और उत्प्रेरित करती है.

भक्ति का गुण

जब कीचट से कमल पैदा हो सकते हैं, पहाड़ा को तटार चट्टानों से पानी के भरने निकल सकते हैं, और कायले की खानों में हीर प्राप्त हो सकते हैं, तो क्या मानव के अन्तर्स्थल में भक्ति और प्रेम के सुरभित फूल नहीं खिल सकते ?

अमृता भक्ति

जो भक्ति आत्म-प्रसन्नता के लिए ध्यान और निरमृद भाव से की जाती है, वह अमृता भक्ति है.

जो भक्ति आत्म-न्याति के लिए, कामना और भय की भावना में अग्निभूत होकर की जाती है, वह जन्मा भक्ति है

कर्मदेव

जो भक्ति केवल प्रदर्शन, प्रशंसा और लोकवचना के लिए की जाती है वह विषा भक्ति है.

भगवान की खरीदी

भक्त भगवान को खरीद सकता है.

धन से नहीं, बल से नहीं, और संसार के अनन्त वैभव से भी नहीं ।
किन्तु भक्त भगवान को खरीद सकता है—सिर्फ भक्ति के दो सच्चे फूलों से ।

जिन्हें भगवान की खरीदी करनी हो, वे आए, भक्ति के फूल लाए,
जिसके फूल श्रृंखला और सच्चे होंगे भगवान अपने आप उसके फूलों पर विक जाएगा.

आनन्दानुभूति

जिस साधना में साधक को आनन्द की अनुभूति नहीं होती, वह साधना की नहीं जाती, ढोई जाती है

वह शिव नहीं, शव है. वह गंधहीन फूल और जलशून्य सरोवर है.

साधना वह है, जिस में आनन्द की अनुभूतियाँ ऐसे स्फुरित हो जैसे सरोवर में उमिया उछलती हो.

मन, वचन और तन प्रसन्न और प्रशान्त हो, वह साधना है, आनन्द का स्रोत है

आनन्द और शान्ति

आनन्द में एक प्रकार की सवेग अनुभूति होती है, वह वहा लेजाती है, मन व इन्द्रियों को उत्तेजित करती है.

शान्ति आवेगों को अपने उदर में समा लेती है, वह किनारे लगा देती है, उसमें मन व इन्द्रियों को समाधान मिलता है, एक प्रकार की स्थिर, निरावेग अनुभूति होती है

हिए, निराशा अनुभूति होती है

है, उसमें मन व इन्द्रिया की समाधान मिलता है, एक प्रकार की शक्ति शक्तियों की अपने चरम में समा होती है, वह किनारे लगा होती

मन व इन्द्रियों की उत्पत्ति करती है

आनन्द में एक प्रकार की सर्वग अनुभूति होती है, वह वही लगती है,

आनन्द और शक्ति

का खोले है

मन, चरम और तम प्रसन्न और प्रशान्त हो, वह साधना है, आनन्द

सरोवर में उमिषा उलझती हो.

साधना वह है, जिस में आनन्द की अनुभूतियाँ ऐसे स्फुरित हो जैसे

वह शिव नदी, शव है वह गवहीन फूल और जलपूर्ण सरोवर है

साधना की नदी जाती, चौड़ी जाती है.

जिस साधना में साधक की आनन्द की अनुभूति नदी होती, वह

आनन्दानुभूति

पर विक जाणा.

जिसके फूल शूल और सच्चे होगे भावान अपने आप उसके फूलों

जिन्हें भावान की खरीदी करती हो, वे आए, भक्ति के फूल आए,

किन्तु भक्त भावान की खरीद सकता है—सिर्फ भक्ति के दो सच्चे

धन से नही, बल से नही, और ससार के आनन्द वंधन से भी नही ।

भक्त भावान की खरीद सकता है.

भावान की खरीदी

है वह विद्या भक्ति है

जो भक्ति केवल प्रदर्शन, प्रशंसा और लोकवचना के लिए की जाती

विश्वास और विवेक

विश्वास आत्मा की ज्योति है, संशय आत्मा का अन्धकार है. विवेक हृदय का सौरभ है, अविवेक मन की गन्दगी है

आत्मविश्वास

जब तक मैं सोचता रहा, सोचता रहा, आत्मविश्वास विगलित होता प्रतीत हुआ !

जब मैंने अधिक सोचना बन्द करके कार्य करना प्रारम्भ कर दिया, आत्मविश्वास स्फुरित होने लगा

श्रद्धा, अन्धी नहीं है ।

कौन कहता है कि श्रद्धा अन्धी होती है ?

श्रद्धा का अर्थ है—अन्तर्वल । वह धीरज का चिन्ह है श्रद्धा के बिना क्रिया में तीव्रता आ ही नहीं सकती जहाँ तीव्र क्रियाशीलता है वहाँ अन्धता कैसी ?

भगवान की तलाश

मित्र ! भगवान की तलाश में इधर उधर कहाँ भटक रहे हो ? नदी, पर्वत, खण्डहर, मन्दिर क्या ये भगवान के आवास हो सकते हैं ? कहाँ है इनमें पवित्रता ? कहाँ है इनमें ज्योति ?

भगवान का आवास है ज्योतिर्मय चैतन्य-मन्दिर । भावालोक । प्राचीन आचार्य के शब्दों में—

“न देवो विद्यते काष्ठे न पापाणे न मृन्मये ।

भावेहि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम् ।”

देवता न काष्ठ में है, न पापाण में है और न मिट्टी में ही वह तो प्राणि की भावनाओं में रहता है, उसके मकलों में निवास करता है, उसकी श्रद्धा में ही भगवान का आवास है

जिस मन में श्रद्धा की ज्योति प्रज्ज्वलित है, वही भगवान के दर्शन हो सकते हैं

चिन्तन की नादियों

श्रद्धा

आस्था—आचार—चरित्र की जननी है

आस्था के बिना धर्म, देश, समाज एवं परिवार की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है

प्रश्न यह है कि आज मनुष्य की आस्था एक नहीं है, और इससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि आज पुरानी आस्थाएँ टूट रही हैं, और नई आस्था का निर्माण नहीं हो पा रहा है

फिर राष्ट्र के चरित्र का विकास हो तो किस आधार पर ?

धर्म और समाज का अभ्युदय हो तो किस घरातल पर ?

आस्था-श्रद्धा ही जीवन का बल है, सृष्टि का बीज है तथागत बुद्ध के शब्दों में—'सद्धा बीज तपो वृद्धि श्रद्धा बीज है, तपः कर्म वृष्टि है—इसीलिए वेद में कहा है—'श्रद्धे ! श्रद्धापयेह न —हे श्रद्धे ! हमारे मन में विश्वास की ज्योति जलाओ !

चलना : भटकना

भ्रमण तो किसी पथ पर भी किया जा सकता है और घेरे में भी !

पथ पर भ्रमण करना चलना कहलाता है, वह मजिल की ओर बढ़ाता है

घेरे में भ्रमण करना—भटकना है, हजार-लाख वर्ष तक भटकने के बाद भी मजिल तो दूर ही दूर है !

विवेक युक्त साधना चलना है, विवेकहीन साधना-भटकना है

एक है घोड़े का तेज दौड़ना और दूसरा है बैल का कोल्हू के इर्द-गिर्द चक्कर लगाना.

विश्राम और सशय

सशय वह नाजुक फूल है जो जग-सी गर्म हवा का स्पर्श लगते ही मुरझा जाता है

अन्तर्वंग

विश्वास वह हिमालय है, जो प्रलय के तूफानों में भी सदा अविचल, स्थिर खड़ा रहता है.

वातानुकूलित मन

आज का युग वातानुकूलित निर्माण का है मकान, दुकान, रेलगाड़ी, कार आदि प्रत्येक स्थान को वातानुकूलित बनाया जाता है

अब समय है, सम्यग्दर्शन की मशीन से मन को भी वातानुकूलित बनाइए बाहर के सुख-दुःख, सयोग-वियोग आदि के गर्म व शीत वातावरण से सदा अप्रभावित !

सम्यग्दृष्टि साधक का मन वस्तुतः इसी प्रकार का होता है.

सम्यक्त्व का रंग

उपशम और क्षयोपशमसम्यक्त्व का रंग कच्चा रंग है, विपरीत सयोगों की प्रबलता होने पर मिट सकता है. किन्तु क्षायकसम्यक्त्व का पक्का रंग कभी नहीं उतरेगा

जीवन में दृढ़ श्रद्धा और विश्वास का पक्का रंग लगाइए

सम्यग्दृष्टि साधक

कभी-कभी वहनों को पापड़ सेकते हुए देखकर मेरा चिन्तनमूत्र गहरा उतर जाता है—कितनी सावधानी ! न पापड़ जलता है और न हाथ भी !

सम्यग्दृष्टि साधक को भी जीवन में इतनी ही सावधानी रखनी होती है, ससार में सुखों का पापड़ सेकते समय वह वस्तु को भी संभाले रखता है और अपने सद्गुणों की सुरक्षा भी करता है

सम्यग्दर्शन का कनकजन

विजली के नमस्त साधनों से सज्जित भवन में जबतक विजली का कनकजन नहीं किया जाता, तब तक प्रकाश नहीं जगमगा सकता

विभिन्न प्रकार की क्रियाओं से सवलित जीवन-भवन में जबतक सम्यग्दर्शन का कनक्शन नहीं किया जायेगा, तब तक जीवन में प्रकाश कहा से आयेगा ?

सम्यग्दृष्टि

मिथ्यादृष्टि भी ससार में रहता है और सम्यग्दृष्टि भी, मिथ्यादृष्टि ससार में, परिवार में रहता है तो घी की मक्खी की तरह उसी में फँस जाता है, जब कि सम्यग्दृष्टि परिवार, भोग, सुख-दुःख सब का अनुभव करते हुए भी उनसे अलग रहता है।

सेठ का मृत्नीम लाखों-करोड़ों का हिसाब रखता है, लेन-देन करता है, किन्तु उस धन को अपना समझा तो समझ लो जेल के दरवाजे दूर नहीं हैं, हथकड़ियाँ पड़ने की ही है

इस भाव की अध्यात्मवादी आचार्य कुन्दकुन्द ने इस प्रकार व्यक्त किया है

जह विसमुवभु जतो वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि
पुग्गलकमस्सुदय तह भुजदि एव वज्झए णाणी ॥

—समयसार १६५

जिस प्रकार वैद्य (औषध रूप में) विष खाता हुआ भी विष से मरता नहीं, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि आत्मा कर्मोदय के कारण सुख-दुःख का अनुभव करते हुए भी उनसे बद्ध नहीं होता

आत्मा जब पर को अपना समझ लेता है तब ससार की कैद में फँस जाता है, विषयो के विष से ग्रस्त हो जाता है

वहम

‘वहम आस्तीन का साँप है’—यह एक कहावत है। किन्तु साँप एक बार ही काटता है, वहम तो रात-दिन आदमी का रक्त पीता रहता है—कपड़ों में छिपे खटमन की तरह या लकड़ी में घुसे घुन की तरह

भय का सामना करो

भय को टालने का प्रयत्न मत करो, उसे सामने आने दो ! टकराने दो,
और उसका पेट चीर कर हनुमान की तरह निकल जाओ

भय को टालना भय को बढ़ाना है, भय से लड़ना— भय को समाप्त करना है.

निराश न हो

दिल एक शीशा है.

इसे निराशा की ठेस लगी कि फूटा ।

दिल एक फूल है.

इसे नाउम्मीदी की हवा लगी कि मुरझा गया

हिम्मत भले ही हीरे जितनी सख्त हो, पर निराशा की चोट लगते ही वह चूर-चूर हो जाती है.

मन को निराश न होने दीजिए ! मन के उपवन में निरन्तर आशा का शीतल जल छिड़कते रहिए. इसे निराशा की सर्द-गर्म हवाओं से बचाये रखिए.

अभय ही भगवान है

अभय ही भगवान है. जो अभय की साधना करता है, वही प्रभु की आराधना करता है जो सदा भय-भीत, डरा-डरा रहता है, वह प्रति-पल मृत्यु की ओर बढ़ता रहता है.

भगवान महावीर ने प्रश्नव्याकरण सूत्र में अभय का संदेश देते हुए कहा है—

“भीतो भूतेहि विष्पद्
भीतो य भवं न नित्यरेज्ज”

भयाकुल व्यक्ति भूतों का शिकार हो जाता है. वह (भयभीत) कोई उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य नहीं कर सकता, अतः ‘ण माण्यच्च’ कभी भी डरना नहीं चाहिए.

अभय का यही उद्घोष अथर्ववेद के ऋषि ने किया है—

यथा द्यौश्च पृथिवी च न विभीतो न रिप्यतः

एव मे प्राणा मा विभे ।

—अथर्व २।१५।१

जिस प्रकार आकाश कभी नहीं डरता, और पृथ्वी भी नहीं डरती, इसलिए वे कभी नष्ट नहीं होते इसी प्रकार मेरे प्राण ! तू भी कभी किसी से न डर । सदा अक्षय बना रह.

भय मृत्यु है

‘सर्वत्र अभय’ रहने वाला मनुष्य जीवन में सिर्फ एक बार मरता है, जब कि भयभीत रहने वाला एक दिन में कई बार मर जाता है.

भय मृत्यु है, अभय अमृत है

कष्टों का स्वागत करो ।

✓ सचमुच मनुष्य का जीवन रत्न की तरह बिना रगड़ खाए चमक नहीं सकता

और सोने की तरह बिना सघर्षों की आग में तपे उसमें निखार नहीं आ सकता.

मानव ! यदि रत्न और स्वर्ण की तरह चमकना है तो फिर कष्टों और सघर्षों से कतराओ नहीं, उनका स्वागत करो !

निर्भय हो मन !

कायर मनुष्य ससार में जिन्दा नहीं रह सकता, वह जीवित ही मरे के समान है, और मृत्यु भी उसे शीघ्र वरण कर लेती है

कायरता मन में भय पैदा करती है भय मन और हृदय को सकुचित कर देता है. शुष्क बना देता है, और सिकुड़ा हुआ शुष्क हृदय मृत्यु की निशानी है

इसलिए डरो नहीं, भय मत खाओ ! निर्भय हो, और निर्भीक होकर जीवन यात्रा सम्पन्न करो

एक प्रसिद्ध कवि के शब्दों में—

निर्भय हो, निर्भय मानव मन !

निर्भीक वरा पर कर विषरण !

शासन

प्रेम का शासन हृदय पर होता है, उसमें मानवता का संचार है
तलवार का शासन केवल शरीर पर चलता है, उसमें वर्वरता छिपी है

प्रेम का करना

मैंने देखा—पर्वत की कठोर चट्टानों के अन्तरहृदय को भेद कर
शीतल जल के निर्मल निर्भर कल-कल करते हुए प्रवाहित हो रहे हैं.

मेरे विश्वास की दिशा बदल गई—कठोर और नर मानव-हृदय से
भी करुणा, स्नेह एवं प्रेम का निर्भर वह सकता है

वह मानव हृदय पत्थर से भी गया गुजरा नहीं होगा, जिसके भीतर
से प्रेम का भरना नहीं फूट सकता ? स्नेह और करुणा की धारा
प्रवाहित नहीं हो सकती ?

मोह और प्रेम

मोह और प्रेम ! भावनात्मक प्रवाह के दो छोर, इतने ही दूर, इतने
ही विलग जितने पूर्व और पश्चिम !

दोनों का उत्स हृदय है, किन्तु परिणति अत्यन्त विचित्र ! भिन्न !

मोह जीवन के सद्गुणों का विघातक है, प्रेम विधायक !

मोह देह का उपासक है, प्रेम आत्मा का पुजारी !

मोह विकार है, प्रेम शुद्ध संस्कार है !

मोह वासना का त्पान्तर है, प्रेम साधना का राजमार्ग है

प्रेम आवसीजन की भाति प्राणों का पोषक है, मोह हाइड्रोजन की
भाति जीवन सत्त्व का शोषक !

प्रेम की जड़ों

देखो, मैं तुम्हें एक चमत्कारी जड़ी बताता हूँ—जो अमूल्य है, दुर्लभ है,

किन्तु इसके चमत्कार ससार भर में विदित हैं, और एक नहीं, असंख्य चमत्कारों की निधि है

वह जड़ी दुश्मन को भी दोस्त बना देती है, राक्षस को भी देवता बना देती है, टूटे हुए दिलों को दूध पानी की तरह मिला देती है, और इन्सान को भगवान बना देती है !

वह जड़ी क्या है ?

उस जड़ी का नाम है—प्रेम ।

प्रेम और काम

प्रेम और काम में अन्तर है

प्रेम मिलन के लिए है, काम सृजन के लिए. मिलन स्वभाव-सिद्ध है, अतः निष्काम है सृजन प्रयत्न-साध्य है, अतएव सकाम है.

निष्काम मिलन प्रेम है, सकाम मिलन काम है

उत्थान का क्रम

प्रेम से काम, काम से वासना, वासना से व्यभिचार यह पतन का क्रम है.

प्रेम से मिलन, मिलन से निर्दोष सात्विक मनोनुभूति रूप आनन्द और आनन्द से आत्म-विस्मृति, आत्मार्पण—यह उत्थान का क्रम है.

प्रेम का रूप

गुरु-शिष्य के प्रेम में आध्यात्मिक विशुद्धता है.

माता-पुत्र के प्रेम में स्नेहात्मक उज्ज्वलता है.

वहन-भाई के प्रेम में भावों की पवित्रता है.

पति-पत्नी के प्रेम में मन की मादकता है.

सहृदयता

सहृदयता की भाषा वही समझ सकता है, जो स्वयं सहृदय हो

क्रूर हृदय सहृदयता के फूल को वैसे ही कुचल डालता है, जैसे उन्मत्त गजराज कोमल पुष्पलताओं को

१. अहंकार कैसा ?

हजार-लाख कमलों को पैदा करके भी कीचड़ कभी गर्व से फूला नहीं

असंख्य-असंख्य मोतियों को जन्म देकर भी सीप कभी अहङ्कार में इतराई नहीं.

पर, मानव है जो कुछ भी नहीं करके गर्व में अकड़ा जा रहा है

‘मान’ कैसे मिले ?

इङ्ग्लैंड के प्रधानमंत्री एटली ने एक बार कहा था कि—“वह नेता कभी भी सफल नहीं हो सकता, जिसके लिए विरोधियों के मन में भी मान न हो”

और यह तो सर्वविदित ही है कि यह मान कैसे मिलता है ?

उदारता से, सच्चरित्र से, त्याग से, सेवा और सहृदयता से

आज के नेताओं में इन गुणों की ज्यो-ज्यो कमी होती जा रही है, त्यो-त्यो उनका मान गिरता जा रहा है.

अपना मान गिराने वाले वे स्वयं हैं और शिकायत है कि जनता अपने नेताओं का आदर-सम्मान नहीं करती.

प्रत्यंचा

धनुष की प्रत्यंचा की तरह प्रेम की प्रत्यंचा भी अत्यधिक खींचने से टूट जाती है

धोम का मार्ग

~ प्रेम धोम का मार्ग है, और विनय वृद्धि का.

सत्य से समृद्धि प्राप्त होती है, और संयम से सिद्धि.

भगवान महावीर ने कहा है - 'गच्चा नमई मेहावी'—बुद्धिमान ज्ञान प्राप्त करके विनम्र बन जाता है

वृक्ष फल आने पर नीचे नम जाता है, बादल जल भरने पर झुक जाता है, वैसे ही बुद्धिमान ज्ञान पाकर विनम्र हो जाता है

नमते ते गमे

गुजराती में कहावत है—नमते ते गमे जो नमता है, वह सब को प्रिय लगता है

हिन्दी की भी कहावत है—गरमी खावे अपने को, और नरमी खावे गैर को—इस का अभिप्राय भी यही है कि नम्रता बड़े से बड़े शत्रु को परास्त कर देती है

नम्रता पत्थर को मोम बना देती है, जब कार्य सिद्ध करना हो, और मोम भी वज्र का काम कर देता है—यदि उसे हथियार के रूप में प्रयुक्त करना हो

कार्यसिद्धि का मंत्र

जो काम नम्रता से बन सकता है, वह उग्रता से क्यों किया जाए ? और उग्रता से बनेगा भी कैसे ?

जो कार्य गुड देने से हो सकता है वह जहर से क्यों किया जाए ? संभव है कहीं उसका परिणाम ही विपरीत हो जाए. कार्य सिद्धि की वजाय पश्चात्ताप ही हाथ लगे.

कोमल मिट्टी

कोमल मिट्टी के ही घड़े बन सकते हैं, कठोर मिट्टी के नहीं. नम्र और कोमल व्यक्ति ही गुणपात्र बन सकता है, उद्धत और कठोर व्यक्ति नहीं !

जीभ और दांत

एक गुरु ने मृत्यु के समय अन्तिम शिक्षा सुनने के लिए उत्सुक

अपने शिष्यों को सम्बोधित करके मुँह खोलकर कहा— "देखो ! मेरा मुँह देख रहे हो ।"

शिष्यो ने विनम्रता किन्तु आश्चर्यपूर्वक कहा— हाँ ! गुरुदेव !

इसमे क्या है ?

जीभ है !

दाँत ?

नहीं है !

क्या समझे इससे ?

शिष्य संभ्रान्त-से खड़े देखते रहे

गुरु ने इसका रहस्य स्पष्ट करने हुए कहा—जीभ पहले आई और आखिर तक विद्यमान है. दाँत बाद में आए और पहले चले गए । जीभ कोमल है. दाँत कड़े हैं । जो कोमल होता है वह, संसार में अमर रहता है, जो कड़ा होता है वह शीघ्र समाप्त हो जाता है.

विनम्र व्यक्ति स्वयं तो भुक्ता ही है, साथ ही संसार को भी भुका लेता है.

मित्र की पहचान

मित्र वह है जो मत्र को—अर्थात् साथी और सखा की गुप्त बात को पचा सके

जो मित्र की गुप्त बात को भी लाउडस्पीकर की भाँति सर्वत्र प्रचारित करदे, वह मित्र नहीं, शत्रु से भी बढ़कर है.

मित्रता

मित्रता दो प्रकार की है—

सज्जन की मित्रता सोने के वर्तन की तरह जल्दी बनती नहीं, किन्तु बनने के बाद जल्दी टूटती नहीं, और टूटने पर जल्दी ही जुड़ जाती है

दुर्जन की मित्रता—मिट्टी के बरतन की तरह जल्दी ही बन जाती है, और जल्दी ही टूट जाती है, किन्तु टूटने के बाद पुन जुड़ नहीं सकती.

दर्पण • दूर्वीन

सच्चा मित्र दर्पण के समान होता है

वह मित्र के गुण-दोषों का सच्चा स्वरूप उसे दिखाता रहता है कपटी (खुशामदी) मित्र दूर्वीन के समान होता है वह छोटे से गुण को बहुत बड़ा करके दिखा देता है, और बड़े-बड़े दुर्गुणों को छोटे से रूप में भी दिखाता है

पहला मित्र की भलाई चाहता है, दूसरा खुशामद ।

क्रोध और प्रेम

क्रोध जिस दरवाजे को नहीं खोल सकता, प्रेम से वह दरवाजा अपने आप खुल जाता है

अहंकार जिस दुर्ग को विजय नहीं कर सकता, समर्पण उसे क्षण भर में अपने अधीन कर लेता है

पुराने जमाने में एक राजा था । एक बार वह बहुत बड़ी सेना लेकर अपने शत्रु राजा को विजय करने के लिए चल पड़ा

बहुत दिनों तक घोर संघर्ष करने पर भी दोनों ओर से कोई किसी के सामने परास्त नहीं हुआ आक्रामक सेना लाख प्रयत्न करने पर भी दुर्ग को भेद नहीं सकी

एक दिन अचानक भूकम्प आया, किला ध्वस्त हो गया, और हजारों आदमी मलने में दबकर मर गये.

शत्रु की यह विपन्नता देखकर आक्रामक राजा का हृदय द्रवित हो गया । उसने आदेश दिया—सेना वापस राजधानी की ओर चले, हम युद्ध नहीं करेंगे

सेनापति ने कहा —“महाराज ! विजय का यही तो अनुकूल अवसर

है चलिए किले के भीतर चलकर हम शत्रु की राजधानी पर अधिकार कर लें."

राजा ने गम्भीर स्मित के साथ कहा - "सेनापति ! क्या कभी वीमार और दुर्घटनाग्रस्त अपग के साथ कुशती लड़ी जाती है. यदि विजय की ही आकांक्षा है, तो पहले ये किले की दीवारें दुरुस्त करवा दो, हम फिर पुन युद्ध करेंगे "

यह सवाद जब उस विपद्ग्रस्त राजा ने सुना तो स्नेह और समर्पण के जल से उसका हृदय छलछला उठा, वह उसी क्षण किले से बाहर आया, और बोला - "भाई राजा ! तुम जब इस किले को दुरुस्त करा सकते हो, तो लो यह किला मैं तुम्हे ही दिए देता हूँ. तुम भीतर आ जाओ ! और इस राजधानी को सभालो".

प्रेम और समर्पण का भाव जगने के बाद कौन किसकी राजधानी भोगे और कौन ले ?

आक्रामक राजा ने विपन्न राजा के साथ मैत्री का हाथ बढ़ाया, दोनों प्रेमपूर्वक मिले

क्षमा का मोहिनीरूप

पौराणिक आख्यान के अनुसार जब शक्र ने क्रुद्ध होकर विकराल प्रलयरूप धारण किया तो विष्णु ने मोहिनीरूप बनाकर उनके प्रचण्ड क्रोध को शान्त किया.

इस आख्यान की फलश्रुति को समझिए—क्रोध का विकराल रूप क्षमा के मोहिनीरूप से ही शान्त हो सकता है.

शान्ति कहा ?

अशान्ति से छटपटाते हुए विराट ऐश्वर्य और वंभव संपन्न सम्राटों ने एक अकिंचन शान्ति देवता ने पूछा—प्रभो ! शान्ति कहाँ है ? कैसे प्राप्त होगी ?

शान्ति देवता ने गम्भीर स्मित के साथ उत्तर दिया—तुम्हारे भीतर ! इच्छामो के त्याग से वह प्राप्त होगी.

ज्ञान और भक्ति

विषयो से मन को हटाने का निषेधात्मक उपदेश ज्ञान है, मन हटाकर ईश्वर में लगाने का विधेयात्मक रूप भक्ति है

निषेधात्मक उपदेश से जब साधना में परितृप्ति नहीं मिली तो विधेयात्मक रूप भक्तिमार्ग का उदय हुआ

सेवाधर्म

सेवा करना एक अलग बात है, और सेवा को धर्म मानकर जीवन में उसकी आराधना करना बिल्कुल अलग बात है

जो सेवा को साधन नहीं, किन्तु साधना मानता है, जीवनधर्म के रूप में स्वीकार करता है, और व्रत के रूप में निभाए चलता है, वस्तुतः वह सेवाधर्मी है

वडप्पन का गज

तुम्हारे वडप्पन का गज क्या है ?

क्या तन से, धन से, जन से और बल से ही तुम अपनी महत्ता का कीर्तिमान स्थापित करना चाहते हो ?

सचमुच महानता का गज तन-धन-जन नहीं, किन्तु मन है जिसका मन बड़ा है, वही बड़ा है

मित्र क्यों नहीं मिलता.

एक सज्जन की शिकायत थी कि उन्हें 'कोई अच्छा मित्र नहीं मिलता '

मैं इस बात पर चिन्तन करता करता सज्जन के व्यक्तित्व का पर्दा उठाकर भीतर गहरा चला गया. देखा वहाँ, माया की कटौली भाड़ियों में अहंकार का नाग फन फुंकारता हुआ बैठा है अपनी विष ज्वालाओं से आस-पास का वातावरण जहरीला बना रखा है.

मैंने सोचा—जहाँ कपट के तीखे कांटों के बीच अहङ्कार का नाग छिपा

है, क्या वहाँ कोई मित्रता का चरण बढ़ानेवाला आ सकता है ? उन सज्जन की यह शिकायत दुनियाँ से नहीं, अपने आप से ही है.

मौन

मौन रहना अपने में कुछ महत्व नहीं रखता !

मौन का महत्व है उसके उद्देश्य में, मौन यदि भय से प्रेरित है तो वह पशुता का चिन्ह है, संयम में उत्पन्न मौन—साधुता है.

५/१२ मौन : शक्ति का स्रोत

शक्ति को संचित करने का एक अपूर्व साधन है—मौन !

मौन से विकेंद्रित शक्ति संचित होती है, वाणी में बल और तेज जाग्रत होता है मनोबल प्रदीप्त होता है,

मौन का अर्थ

मौन का क्या अर्थ है ?

नहीं बोलना !

यह स्थूल अर्थ है—और प्रायः साधारण मनुष्य इसी अर्थ में 'मौन' का भाव ग्रहण करते हैं

क्या मौन का यह अर्थ गलत है ?

गलत नहीं, किन्तु अपूर्ण अवश्य है, अधूरा है

मौन का सही अर्थ समझाने के लिए प्राचीन आचार्यों ने ये चार रूप बतलाए हैं

१—वाणी का मौन—चुप रहना, सावद्य वचन न बोलना

२—मन का मौन—मन में असत् विकल्पो का न उठना, डगधर-उधर न भटकना.

३—शरीर का मौन—इन्द्रियो को विषयों से निवृत्त रखना, शान्त रखना

४—आत्मा का मौन—समस्त बाह्य भावों से पराङ्मुख रहकर आत्मभाव में निमग्न होना

प्रथम मौन सामान्य है, अन्तिम मौन सर्वोत्कृष्ट ।

मौन और मुनि

साधना के द्वार पर मौन की और क्रमशः बढ़ने वाला साधक मीनी
—मुनि कहलाता है

मौन रखने वाला मुनि होता है—“मौनादमुनि ”

पर, कंसा मौन ?

वाणी का, मन का, या आत्मा का ? वस्तुतः जो आत्मा का मौन रखता है, वही ‘मुनि’ होता है

मनन और मुनि

महोत्मा बुद्ध ने कहा है—

‘यो मुनाति उभे लोके मुनि तेन पवुच्चति’ (धम्मपद)

जो दोनों लोकों का मनन करता है, वह मुनि है अर्थात् जो साधक जीवन के इस पार और उस पार—दोनों पार आनन्द, सुख एवं समृद्धि का दर्शन करता है, और उसे प्राप्त कराने वाला अनुकूल आचरण करता है, वही वस्तुतः मुनि है

मनन — एक लोक का नहीं, उभय लोकानुसारी होना चाहिए

‘या लोकद्वयसाधनी तनुभूता सा चातुरी चातुरी’

वस्तुतः जो उभयलोक को सफल करने वाला चिन्तन है, वही चिन्तन है, वही चातुरी है, वही मनन है और वही मुनि है

• हीरे के समान

हीरे के समान तुम्हारे जीवन में निर्मल कान्ति और आभा है तो फिर चिन्ता न करो, अपने आप स्वर्णसिंहासन मिल जायेगा.

पश्चात्ताप का पानी

पश्चात्ताप का पानी भूलों की गन्दगी को धोकर साफ कर देता है

अन्तर्यामि

पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त दोष विशोधन की दो क्रमिक सीढियाँ हैं। प्रायश्चित्त वही कर सकेगा जिसके मन में अपने कृत पापों के प्रति पश्चात्ताप होगा।

पश्चात्ताप से पाप जल जाते हैं, प्रायश्चित्त उन्हें बुहारकर साफ कर देता है।

जीभ और दांत

एक दिन दातो ने जीभ से कहा—तुम दिनभर चपर-चपर करती रहती हो, यह ठीक नहीं, हम बत्तीम हैं, कहीं विगड़ गए तो तुम्हारा कचूमर निकाल देंगे।

जीभ धीमे से मुस्कराई, भैया ! बत्तीसों के बीच में अकेली बंठी हैं, तों समझलो कुछ है ! कभी कुछ कह दूँगी तो बत्तीसों को तुड़वा डालूँगी !

ऋणमुक्ति

इच्छा और आशक्ति से प्रेरित होकर जो धनसंग्रह किया जाता है, वह समाज का ऋण है।

सेवा और परहित में अर्पण करने से व्यक्ति उस से उऋण (ऋणमुक्त) हो सकता है।

कर्म और वृत्ति

कर्म दूषित हो गया हो तो धवराने की कोई बात नहीं, किन्तु वृत्ति दूषित नहीं होनी चाहिए।

कर्म वस्त्र है, वृत्ति जल है, कर्म को वृत्ति पवित्र बना सकती है, किन्तु वृत्ति ही दूषित हो गई तो ?

मेवा

मेवा का महत्व इस बात में नहीं है कि वह छोटी है या बड़ी ! किन्तु इस बात में है कि वह पवित्र है या अपवित्र, शुद्ध भाव से की गई है या अशुद्ध भाव से ! किन्हीं द्वायंत्रों की गई है, या निष्काम परार्थ वृत्ति से



चिन्तन की चाँदनी

जी

व

न

द

र्श

न

८ जीवन एक विराट् असण्ड सरित् प्रवाह है सरिता में
 आया हुआ, कूड़ा-कचरा जिस प्रकार उच्छन्नलहरो
 द्वारा बाहर फेंक दिया जाता है. और सरिता का नीर
 सदा निर्मल, स्वच्छ बना रहता है

उसी प्रकार जीवन-सरिता में विचार और आचार की
 लहरें निरन्तर उद्यत होती हुई उसमें आया हुआ अमद्
 विचार व अमद् आचार का कूड़ा बाहर फेंकती हुई इस
 धारा को सतत स्वच्छ बनाए रखती है.

विचार व आचार की इन विविध तरंगों का समशील
 रूप ही जीवन है.

जीवन दर्शन—अर्थात् अन्तर्दर्शन ! अपने उदात्त और
 ऊर्ध्वगामी ध्येय के प्रति निष्ठापूर्वक गतिशील रहना,
 विचार और आचार को उदात्तता, पवित्रता और
 समशीलता, यम यही हमारा जीवन-दर्शन है.

जीवन—दर्शन

जीने का तरीका

जीने के दो तरीके हैं—अंगार और राख

तुम्हे जीना है तो अन्तरंग की उष्मा को बनाए रखो, अंगार की तरह तेजस्वी और प्रकाशमान बन कर जीओ ! राख की तरह निस्तेज, रूक्ष और मलिन बनकर नही !

अन्तर्दृष्टि

जीवन एक दर्पण है, दर्पण के सामने जैसा विम्ब आता है, उसका प्रतिविम्ब दर्पण में अवश्य पड़ता है जब आप दूसरों के दोषों का दर्शन करेंगे, चिन्तन और स्मरण करेंगे तो उनका प्रतिविम्ब आपके मनोरूप दर्पण पर अवश्य चित्रित होता रहेगा. प्रकारान्तर से वे ही दोष चुपचाप आपके जीवन में अकुरित हो जाएंगे

इसीलिए भगवान महावीर का यह अमरसूत्र हमें सर्वदा स्मरण रखना चाहिए—‘सपिक्खए अप्पगमप्पएण’ सदा अपने से अपना निरीक्षण करते रहना चाहिए दृष्टि को मू दकर अन्तर्दृष्टि से देखना चाहिए. आत्मा का अनन्त सौन्दर्य दिखलाई पड़ेगा.

चार स्तर

जीवन के चार स्तर हैं—

जो विकार व वासनाओं का दास है—वह पशु है.

जो विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है—वह मनुष्य है.

जिसने विकारों पर यत्किंचित् विजय प्राप्त करली—वह देव है.

जो सम्पूर्ण विकारों पर विजय प्राप्त कर चुका —वह देवाधिदेव है.

त्रिभुज

विजली के पंखे के त्रिभुज की तरह जीवन के त्रिभुज हैं—बुद्धि, भावना और कर्म, अर्थात् ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य ।

अनुशासन कला है.

अनुशासन करना भी एक कला है. कब कहा जाए और कब सहा जाए इस विज्ञान को समझने वाला ही दूसरों पर अनुशासन कर सकता है. केवल कहा जायेगा तो स्नेह का घागा टूट जाएगा केवल सहा जाएगा तो धैर्य का घागा हाथ से छूट जाएगा.

कहना, सहना की मर्यादा को समझने वाला ही सच्चा अनुशास्ता हो सकता है.

साधक का मन

साधक का मन संसार में दर्पण की तरह रहता है. विश्व की हलचल का प्रतिबिम्ब उस पर अवश्य गिरता है, किन्तु वह उसके भीतर संस्कार नहीं बन पाता.

जीवन को तपाए

जल को तपाइए, वह वाष्प बनकर आकाश को छूने लगेगा.

जीवन को तपाइए, वह हल्का होकर ऊर्ध्वगामी बनेगा.

भगवान महावीर ने उस जीवन को श्रेष्ठ जीवन बताया है, जो बाहर भीतर एक रूप हो 'जहा अंतो तहा बाहि' जैसा भीतर वैसा बाहर !

वस्तुतः वह अंगूरी जीवन है. जिसका बाहर भीतर एक समान मधुर, मृदुल और सरल होता है

जीवन अखण्ड सत्ता है.

जीवन एक अखण्ड सत्ता है, उसे 'व्यक्तिगत जीवन' और 'सार्वजनिक जीवन' इन दो खण्डों में विभक्त करना उसके सहज सौंदर्य को नष्ट करना है

जीवन का सत्य, शिव, सुन्दर' रूप उसकी अखण्डता में है एकरूपता में है. उसे अनेक मुखों में व्यक्त करना तो बहुरूपियापन है.

दो चिड़िया

एक चिड़िया — काले कजरारे बादलों में अपना घोंसला बनाने के लिए अनन्त आकाश में उड़ान भरने लगी. हवा के झोंके से बादल इधर-उधर भटकते बिखराते और चिड़िया भी उनके पीछे-पीछे भटकती-भटकती क्लान्त श्रान्त हो गई. बादलों में उसे कहीं ठौर नहीं मिली दूसरी चिड़िया—पर्वत के उच्च शिखर पर अपना घोंसला बनाने को चली. कुछ ही समय में वह पर्वत शिखर पर पहुँच गई और एक सुरक्षित स्थान पर सुन्दर छोटा-सा घोंसला बनाकर आनन्द से रहने लगी.

मानव ! तुम्हारा लक्ष्य किधर है ? क्षणभंगुर सुहाने बादलों की ओर या अचल पर्वत शिखर की ओर ? चिड़िया की गति का परिणाम देखकर अपना लक्ष्य पुनः सोच-विचार कर स्थिर करो ।

सफलता का गुर

कार्य में सफल होने का एक सबसे बड़ा गुर है—प्रसन्नता में कार्य प्रारम्भ करो और समाप्त नहीं होने तक जुटे रहो

संघर्ष ही जीवन है. संघर्ष से आगे बढ़ने की प्रेरणा स्फूर्त होती है. जीवन में तेजस्विता व परिपक्वता आती है संघर्ष से कतराने वाला जीवन में प्रगति नहीं कर सकता.

गुणग्रहण की दृष्टि !

हर एक व्यक्ति में कोई न कोई गुण या विशेषता अवश्य रहती है. यदि आप में देखने की दृष्टि है, और ग्रहण करने की क्षमता है तो हर व्यक्ति से आप गुण या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और अपने जीवन को महान बना सकते हैं

जीवन विद्यालय है

यदि विश्व की घटनाओं को पढ़ने की दृष्टि खुली है तो जीवन का प्रत्येक क्षेत्र विद्यालय है. जगत की प्रत्येक घटना और प्रत्येक पुरुष गुरु है. उनसे आप कोई न कोई नया पाठ सीख सकते हैं.

कच्चा घड़ा

कच्चे घड़े में रखा हुआ अमृत स्वयं भी नष्ट हो जाता है, और घड़ा भी फूट जाता है.

कच्चे साधक को दिया हुआ सद्ज्ञान, स्वयं भी विनष्ट हो जाता है और साधक भी मार्ग च्युत हो जाता है.

इसीलिए आचार्य ने कहा है — "आमकुम्भा एव वारिगर्भा " कच्चे घड़े में पानी की तरह कच्चे साधक का ज्ञान स्वयं को भी नष्ट करता है, और ज्ञान भी व्यर्थ जाता है ।

गया हुआ कार्यकर्ता

पका हुआ घड़ा, तपा हुआ सोना और नया हुआ कार्यकर्ता सर्वत्र ही आदरणीय होता है.

पका घड़ा

जो घड़ा अग्नि में तपकर पका नहीं, वह न पानी धारण कर सकता है और न अन्य कुछ भी ।

जो व्यक्ति साधना की अग्नि में तपकर परिपक्व नहीं बना, वह सद्गुणों को कैसे धारण कर सकता है ?

दो प्रकार की मनोवृत्ति

ससार में दो प्रकार की मनोवृत्ति है—

श्वान वृत्ति—कुत्ता पत्थर पर झपटता है, पत्थर मारने वाले पर नहीं. श्वान वृत्ति वाले व्यक्ति कष्टों के पीछे परेशान होते हैं, कष्ट के मूल कारण को नष्ट नहीं करते.

सिंह वृत्ति—सिंह पत्थर पर नहीं, पत्थर मारने वाले पर झपटता है सिंह वृत्ति वाले व्यक्ति कष्टों की परवाह नहीं करते, किन्तु उनके कारणों को ही नष्ट करना चाहते हैं.

अभ्यात्म की भाषा में पहली निमित्त-परक दृष्टि है. दूसरी उपादान-परक !

जीवन

वर्ष के टुकड़े की तरह यह जीवन प्रतिक्रिया गलता जा रहा है
पूरव की धूप की तरह यह जीवन प्रतिफल पश्चिम की ओर ढलता जा रहा है.

मानव ! सावधान हो ! वर्ष के गलने से पहले, दिन के ढलने से पहले उसका सदुपयोग कर लो

जीवन सफर है.

छोटी-सी सफर और यात्रा के लिए कितनी तैयारी करते हो ? इस-लिए कि कहीं आगे कष्ट उठाना न पड़े !

जीवन की अगली सफर के लिए क्या कुछ तैयारी कर रहे हो ?

जीवन दर्शन

यह कितना बड़ा आश्चर्य है कि छोटी-सी सफर के लिए इतनी तैयारी ? और इतनी लम्बी सफर के लिए इतनी लापरवाही ?

वशीकरण मंत्र

किसी भक्त ने एक सिद्धयोगी से विश्व को वश में करने के लिए वशीकरण मंत्र पूछा.

योगी ने बतलाया—वशीकरण मंत्र तो बतलाता हूँ, किन्तु उसकी साधना करनी होगी.

भक्त साधना के लिए वचनबद्ध होकर मंत्र पूछने लगा तो योगी ने बताया - नम्रता और मधुरवचन ये दो ऐसे वशीकरण हैं, जिससे समस्त ससार तुम्हारे वश में आ सकता है, किन्तु इनकी साधना सतत चालू रखनी होती है.

सुख-दुःख भी अतिथि है

भारतीय संस्कृति में अतिथि देवता का प्रतिरूप है, देवता की भांति उसका स्वागत किया जाता है

सुख दुःख भी जीवन के अतिथि हैं, फिर इनका भी स्वागत क्यों नहीं किया जाए ?

आदरणीय, आचरणीय

महापुरुषों के उदात्त जीवन चरित्र को केवल आदरणीय ही नहीं, उसे आचरणीय भी बनाइए !

अमृत की प्रशंसा और स्तुति करने मात्र से कभी कोई अमर नहीं बन सका.

जल-जल पुकारने से कभी किसी की प्यास नहीं बुझी !

फिर महापुरुषों की स्तुति करने मात्र से महान् कैसे बन जाओगे !

मिठाइयो की सूची बनाने से तो अच्छा है कि रूखी-सूखी रोटी खाकर ही पेट भर लिया जाए ।

आमके पेड़ों की सिर्फ गणना करने से तो अच्छा है कि बेर खाकर ही क्षुधा शान्त करली जाए !

लकड़ी का बादाम

क्या मिट्टी के सुन्दर फलों से कभी मधुर-रस प्राप्त हुआ है ?
क्या लकड़ी के मेवे और बादाम से दिमाग को स्निग्धता और ताजगी मिली है ? नहीं !

तो फिर केवल पुस्तकीय ज्ञान से हृदय में आलोक कैसे जगमगाएगा ?
और केवल शाब्दिक ज्ञान से निर्वाण का परमसुख कैसे प्राप्त होगा ?
भूख मिटाने के लिए वास्तविक फल चाहिए, और निर्वाण प्राप्त करने के लिए ज्ञानमय आचरण चाहिए

विकार वृद्धि

आचारहीन विचारक्रान्ति से विचारों की शुद्धि नहीं, किन्तु विकारों की वृद्धि होती है । जैसे कि दूषित वायु सेवन से स्वास्थ्य की शुद्धि नहीं, किन्तु रोग की वृद्धि होती है.

शीशे की आख

शीशे की आख देखने के लिए नहीं, केवल दिखाने के लिए होती है वैसे ही आचारहीन ज्ञान आत्म-दर्शन के लिए नहीं, किन्तु अह प्रदर्शन के लिए होता है.

सर्वश्रेष्ठ

विश्व के समस्त प्राणियों में मानव श्रेष्ठ है, समस्त मानवों में ज्ञानी श्रेष्ठ है और समस्त ज्ञानियों में आचारवान ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है.

जीवन दर्शन

पहले खुद चख लें !

भोजन पकाने वाला पहले शाक आदि बनाकर स्वयं चखता है, उसका स्वाद आदि देखता है. इसी प्रकार उपदेश करने वाले को पहले अपने तत्वज्ञान का स्वयं आस्वाद (आचरण) करके फिर उपदेश करना चाहिए.

आत्मा की प्रतिध्वनि

आचार आत्मा की प्रतिध्वनि है और विचार बुद्धि की कौतुक-क्रीड़ा !
आचार हृदय सापेक्ष है और विचार अव्ययन एव मन से प्रतिफलित !
आचार और विचार का मधुर मिलन ही हृदय और बुद्धि का सगम है, आत्मा और मन का सम्मिलन ।

त्रिवेणी

जिस जीवन में विनय, विवेक और विद्या की पावन त्रिवेणी बह रही हो, वह जीवन स्वयं में एक पुण्यतीर्थ है, जन, मन की श्रद्धा का पावन केन्द्र है.

गुलदस्ते का फूल

आचारहीन विचार गुलदस्ते का वह फूल है. जिसका रूप रंग कितना ही मोहक हो, जिसकी सौरभ कितनी ही मादक हो, किन्तु वह कितनी देर के लिए ?

वह टहनी से टूट चुका. पृथ्वी से उसे पोषण नहीं मिल रहा है, वह कुछ क्षण में ही मुरझा जायेगा

जिन विचारों को जीवन-रस का पोषण नहीं मिल पा रहा है, क्या वे उस फूल की तरह कुछ ही क्षणों में मुरझा नहीं जायेंगे ?

चरित्र का तैल

दीपक में तैल डाले बिना वह प्रज्ज्वलित नहीं हो सकता, आन्धोक

नहीं दे सकता, वैसे ही जीवन दीपक में चरित्र का तैल दिए बिना वह ससार को क्या, अपने घर को भी आलोकित कैसे कर पायेगा ?

मजाक

मैंने देखा—एक अस्वच्छ, मलिन और गन्दा व्यक्ति गला फाड़-फाड़कर दुनिया को स्वच्छता और सफाई का उपदेश कर रहा था !

और दूसरी ओर देखा—एक दुराचारी पंडित ऊँचे स्वर से नैतिकता और सदाचार की कहानियाँ सुना कर जनता को सदाचार की शिक्षा दे रहा था.

दोनों में क्या अन्तर है ?

क्या दोनों ही स्वच्छता और सदाचार को मजाक नहीं कर रहे हैं ?

जीवन का बगीचा

तुम्हारे जीवन के बगीचे में केवल शब्दों का घास-पात खड़ा है, मोठी और आदर्श बातों की हरियाली भी खूब है, किन्तु भाव और कर्म का कोई भी फलवान वृक्ष नजर नहीं आता !

कैसा है यह तुम्हारा जीवन-बगीचा !

आचार का फ्रेम

तुम्हारे विचारों की तस्वीर भले ही सुन्दर है, मनोमोहक है, किन्तु जब तक वह आचार के फ्रेम में नहीं मढ़ी जा सकती, तब तक जीवन रूपी गृह की शोभा कैसे बढ़ाएगी !

विचारों की तस्वीर को आचार के फ्रेम में मढ़वा दो ! तस्वीर भी चमक उठेगी और घर भी !

कैमरा-एक्सपोज़

प्रभो ! मेरी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अन्तर्भेदी होती जाए.

जीवन दर्शन

मेरी दृष्टि केमरा के समान बाह्य वानावारण को अंकित करने में ही केन्द्रित न हो जाए ।

मेरी दृष्टि एक्सरे के समान अन्तर्भेदी हो, बाह्य को नहीं, अन्दर को देखे, तन को नहीं, मन की गति को देखे, देह को नहीं, आत्मा को परखे जड़ को नहीं, चैतन्य का दर्शन करे.

प्रभो ! मेरी दृष्टि में वह तेज जागृत हो, समस्त बाह्य आवरणों को चीरकर अन्तःस्थित आत्मदेव के दर्शन कर सके.

खाने के तीन मानदण्ड

भूख से कम खाने से—शरीर में स्फूर्ति और स्वास्थ्य अच्छा रहता है.
भर पेट खाने से—शरीर में आलस्य एवं जड़ता बढ़ती है.

भूख से अधिक खाने से—शरीर निकम्मा और रोगी हो जाता है

कितना खाएं ?

खाना कितना खाएं ? इस सम्बन्ध में एक प्राचीन कहानी ध्यान देने योग्य है—

ईरान के एक बादशाह अदशीर बावकान ने अपने हकीम से पूछा—
हमको दिन-रात में कितना खाना चाहिए ?

हकीम ने जवाब दिया—१०० दिरम (अर्थात् ३६ तोला)

बादशाह घबराया हुआ-सा बोला—इतने कम खाने में शरीर कैसे चलेगा ?

हकीम ने उत्तर दिया—शरीर के पोषण के लिए इससे अधिक नहीं चाहिए. वीर्य बढ़ाने के लिए जितना चाहे पेट में भर लें ।

भगवान महावीर ने भोजन के सम्बन्ध में साधक को बार-बार यही निर्देश दिया है अल्प आहार करें, परिमित भोजन करें.

‘अप्पाहारे, मियामणे’, अप्पपिण्डामिपणामि, आदि साधक के ये विशेषण बात के सूचक हैं.

श्रीमत् सेठ के घर पर पुत्रविवाह की धूमधाम मची हुई थी। हजारों मित्र-स्वजन आ जा रहे थे नाना प्रकार के मिष्ठानों से दावत का रंग जम रहा था बची हुई जूठन बाहर फेंकी जा रही थी। जूठन पर एक कौआ कुरा-कुरा करता हुआ आया, आस पास के अपने जाति बन्धुओं को बुला लाया और सभी मिलकर फुदक-फुदक कर खाने लगे।

दूसरी ओर जूठन पर कुत्तों की एक टोली लपक पड़ी दो चार कुत्ते इकट्ठे हुए। गुर्र-गुर्र होने लगी, एक दूसरे को भोंकने लगे, काटने और भगाने लगे आखिर एक जबर्दस्त कुत्ता जूठन पर अधिकार करके अकेला ही खाने लगा। बाकी कुत्ते दूर-दूर खड़े जीभ लपलपा रहे थे एक ओर कौआ का भ्रातृ मिलन ! प्रेम निमंत्रण ! दूसरी ओर कुत्तों का जाति विद्वेष, गुर्राकर अकेले खाना ! मेरे चिन्तन के तार भन-भना उठे—

सभ्यता की ऊँची बात करने वाले मनुष्यो ! तुम्हारे खाने का तरीका कौन-सा है ?

राजा और राजनीति

एक चीनी सत से किसी राजनीति के खिलाड़ी ने प्रश्न किया— सबसे अच्छा राजा कैसा होता है, और सबसे श्रेष्ठ राजनीति क्या है ?

महात्मा कुछ देर मौन रहने के बाद बोले —

सबसे अच्छा राजा वह है, जिसके बारे में जनता केवल इतना जानती है कि—वह जीवित है और उसका राज चल रहा है

दूसरे दर्जे का राजा वह है, जिसके सम्बन्ध में जनता काफी जानती है, और उसकी प्रशंसा भी करती हो

जिन राजाओं से जनता भय खाती रहती है—वे निकृष्ट राजा हैं।

और सब से निकृष्ट राजा वे हैं जिनकी निन्दा जनता खुले आम करती हो—सन्त ने कहकर प्रश्नकर्ता की ओर देखा !

प्रश्नकर्ता जिजासा भरी दृष्टि से संत के मुख की ओर देखता रहा, वह उत्सुक भी था, अतृप्त-सा भी संत ने राजनीति का मर्म समझाते हुए कहा—

जनता का जीवन, धान के पौधों का जीवन है, और राजा का जीवन पवन का जीवन है। पवन जिधर को जायेगा, धान के पौधे उधर ही झुक जायेंगे, शासक यदि सदाचारी होगा तो जनता को सदाचार के मार्ग पर चलाने के लिए आदेश निकालने की जरूरत नहीं होगी।

जनता का हृदय सहज ही स्वच्छ एवं द्रवणशील होता है उसमें हस्तक्षेप करना योग्य नहीं। कानून का दबाव और सजा की धमकी—दोनों ही स्वस्थ प्रशासन का चिन्ह नहीं हैं।

कानून जितने अधिक बनेंगे, चोरो की संख्या भी उतनी ही अधिक बढ़ती जायेगी।

अच्छा शासक वह है, जो अफसर और कानून की जगह जनता के विश्वास पर चलता हो और अच्छी राजनीति वह है—जो भय के आधार पर नहीं, विश्वास और प्रेम के आधार पर खड़ी हो।

प्रश्नकर्ता ने एक पवित्रता के साथ संत को अपना राजनीति-गुरु स्वीकार किया और चल पड़ा।

अफसर और बाघ

जहाँ शासक आलसी, और अदक्ष होता है, वहाँ अधिकारी तेजतर्रक, दुष्ट और चोर होते हैं और जहाँ अधिकारी दुष्ट एवं चोर होते हैं उस राज्य में जनता कभी-भी सुखी नहीं हो सकती।

इसीलिए यह चीनी कहावत प्रसिद्ध है—“लोभी और चोर अधिकारी नरभक्षी बाघों से भी अधिक भयानक होते हैं”

कहते हैं कि एक नुशासक के राज्य में एक गाँव था, जो पहाड़ों और जंगलों के बीच पड़ता था। बाघ जब तब जंगल में निकल कर आते और एकाध मनुष्य को चट कर जाते।

एक यात्री वहाँ आया, गाँव वालों की परेशानी सुनकर कहा—यहाँ से कुछ ही दूर पर अमृत गाँव है, वहाँ जाकर क्यों नहीं बस जाते, वहाँ तो बाघों का कोई भय नहीं।

गाव वाले एक साथ बोल पड़े—अरे ! क्या कहते हो ? वहां के तो अफसर लोग ही बाघ है. न जाने किस समय आए और किस घर से किसको उठाकर ले जायें ? हम यहाँ से नहीं जाएंगे.

वस्तुतः सदाचारी शासक जनता का पिता व बन्धु होता है, तो दुराचारी लोभी शासक बाघ, व खूखार भेड़िये से कम नहीं है.

जीवन की परिभाषा

गुरु से शिष्य ने पूछा—जीवन क्या है ?

गुरु ने गम्भीर भाव मुद्रा में तीन चित्र उपस्थित किए

एक चित्र प्रस्तुत करते हुए गुरु ने कहा—यह बालक का चित्र है

दूसरा चित्र स्वस्थ स्फूर्त युवक का था और तीसरा चित्र गम्भीर वृद्ध पुरुष का.

गुरु ने शिष्य की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा, और फिर समाधान की भाषा में बोले—बचपन की चंचलता, यौवन का उत्साह और बुढ़ापे की गम्भीर विचारशीलता—इन तीनों का समवाय है—जीवन !

शिष्य ने प्रसन्न होकर गुरु को प्रणाम किया .

जीवन का वोभ ।

एक दुर्बल, जरा जीर्ण बूढ़ा जेठ की दुपहरी में लकड़ियों का वोभ सिर पर उठाए हाफता हुआ चला जा रहा था चिलचिलाती धूप और सिर पर भारी वोभ—वृद्ध घबरा उठा, इस घबराहट-अकुलाहट में ही उसके मन में इस दीन-हीन जीवन के प्रति घृणा और निराशा जगने लगी

विचागे की उथल पुथल में वृद्ध ने सिर पर का गट्ठर उतार कर एक पेठ के नीचे पटक दिया, और छाया में सुस्ताता हुआ आर्तस्वर में पुकार उठा—“हे मृत्यु देवता ! कहां चले गए ! मुझ अपनी शरण में क्यों नहीं ले लेते !”

कहते हैं वृद्ध की पुकार यमराज ने सुनी और एक दूत को वृद्ध के पास भेज दिया.

दूत ने वृद्ध के पास आकर कहा—कहो, क्या चाहते हो ? यमराज ने तुम्हारी पुकार पर मुझे सहायता करने के लिए भेजा है, क्या कुछ काम है ?”

यमदूत की सूरत देखते ही बुढ़े की सिट्ठी-पिट्ठी गुम हो गई वह घबराया, और हाथ जोड़कर बोला—“महाराज ! कुछ नहीं, यही कि यह गट्ठर उठाकर मेरे माथे पर धर दीजिए ।”

यमदूत कुछ देर वृद्ध की ओर धूरकर देखता रहा, आखिर में एक व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोझ वृद्ध के सिर पर धर दिया, बुढ़ा हांफता हुआ आगे चला दिया

हिन्दू की परिभाषा

एक आचार्य ने हिन्दू की परिभाषा करते हुए लिखा है—हिंसा से जिसका चित्त दुःखित होता हो, वह हिन्दू. हिंसया चित्त दुःखोति यम्य स हिन्दु..

हिन्दू-करुणा और प्रेम का एक रूप है । सहयोग और सद्भाव की परिभाषा है.

क्या आज का हिन्दू अपने इस मूल स्वरूप की रक्षा कर रहा है ?

अलंकार : अहंकार

राम धरती का अलंकार है, रावण धरती का अहंकार !

जो स्वयं रमता है (आनन्दित रहता है) और दूसरों को रमाता है—वह राम है.

जो स्वयं रुदन करता है, और दूसरों को भी रुलाता, है वह रावण है.

भरत . भरण का प्रतीक

भरत भारतीय संस्कृति में भरण—(सज्जनों के पालन-पोषण) का प्रतीक है.

जो अपने हृदय को सदा सद्गुणों से भरा रखता है, और दूसरों के हृदय को भी सद्गुणों से भरता है, वह भरत है।

शत्रुघ्न !

राम का सहोदर होने का वही अधिकारी है—जो शत्रुघ्न होगा अर्थात् काम, क्रोध, मात्सर्य, आदि शत्रुओं का हनन करने वाला ही शत्रुघ्न का पद पा सकता है

लक्ष्मी • लक्ष्मण

जो सुलक्षणों (सद्गुणों) से युक्त है, वह इस युग का लक्ष्मण है। भारतीय संस्कृति लक्ष्मी सपन्न को नहीं, किन्तु लक्षण सपन्न को ही महापुरुष मानती है। राम लक्ष्मी से नहीं, किन्तु लक्ष्मण से ही सदा प्यार करते थे

काम • राम आराम

जहाँ काम है, वहाँ राम (विवेक) नहीं रह सकेगा जहाँ राम नहीं रहेगा वहाँ आराम (आनन्द) कैसे रहेगा ? आराम पाने के लिए राम को रखिए, राम को रखने के लिए काम रूपी रावण को परास्त करना ही होगा

✓ चरित्र की रक्षा

अपने चरित्र की सदा सावधानी से रक्षा कीजिए वह काच के वर्तन की तरह इतना नाजुक है कि एक बार ठेस लगने ही चकनाचूर हो जाता है

✓ विजेता कौन ?

ससार में सबसे बड़े तीन शत्रु हैं—

दरिद्रता

जीवन दर्शन

रोग.

मूर्खता.

जो इन शत्रुओं को जीतता है, वही ससार में विजेता का पद प्राप्त करता है.

पिता का ऋण

एक दिन आकाश में काली घटाएँ छाई हुई थी, बादल गर्ज-गर्ज गहरा रहे थे सागर की छाती पर

सागर ने व्यथित स्वर में बादलों को पुकारा—“बेटा ! जिसने जीवन पाया, क्या उसी के मिर पर यो निर्लज्ज होकर गरज रहे हो ?”

बादल वीखला उठे, कड़क-कड़क कर विजलियाँ कौंधने लगी, गड़गड़ करते हुए ओलों ने सागर की छाती को क्षण भर में वीध डाला ।”

सत्रस्त सागर ने गहरा नि श्वास ग्रीचा— “ओ मेरे प्रिय पुत्र ! क्या इसी प्रकार पिता के ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करोगे ?”

जीवन-शोधन

‘जीवन निर्वह’ व्येय नहीं हो सकता, यह तो एक वृत्ति मात्र है हमारा व्येय है—जीवन-शोधन !

जिमका लक्ष्य जीवन-शोधन पर केन्द्रित है, वह कभी भी, किसी भी परिस्थिति में ‘जीवन निर्वह’ के निम्न तरीके नहीं अपना सकता.

जीवन संगीत

जीवन एक संगीत है. स्वर, पाद्य और ताल के सुमेल में ही संगीत की मधुरिमा है, जीवन-संगीत की स्वर-संगति आज विषम हो रही है. आत्म-देव का स्वर किसी अन्य रूप में सुगरित हो रहा है तो वाणी का तबला कुछ अन्य राग आलाप रहा है, और आचरणों की तान तो कुछ अलग ही बनभना रही है. तीनों की विसंगति से जीवन का संगीत विषम हो रहा है.

भूकम्प का झटका

भूकम्प का हल्का-सा झटका अनुभव होते ही जनता सावधान होकर घरों से निकलकर बाहर आ जाती है.

मन में विचारों का हल्का-सा झटका लगते ही प्रबुद्ध साधक सावधान होकर सकल्प-विकल्प की परिधि से बाहर निकल कर खड़ा हो जाता है

जीवन का रहस्य

एक दिन की बरसात ने मुझे जीवन का रहस्य समझा दिया !

काले-कजरारे गहन बादलों को चीरती हुई एक प्रभामयी विद्युत् रेखा चमक गई, क्षण भर के लिए दिशाएँ जगमगा उठी !

देखने वालों की आँखें चुधिया गई . आशा भरी नजर से ससार ने कहा - बहुत जोर से चमकी !

तभी मेघ की गभीर गर्जना से धरती-आकाश गडगड़ा उठा !

ससार ने विश्वास के साथ कहा—अब बहुत जोर से पानी बरसेगा.

मैंने चिन्तन सूत्र जोड़ा—चमकने के बाद गर्जना सार्थक है, विश्व-सनीय है

पर, मैंने देखा कि आज का मानव तो चमकने से पहले ही गर्जना शुरू कर देता है, निस्तेज जीवन ! और धुआधार भाषण !

दो प्रकार के साधक

कुछ साधक धातु-पात्र के समान होते हैं, ये मान-अपमान, क्षुधा-पिपासा आदि सकटों की चोट खाकर भी अक्षुण्ण, अविभक्त बने रहते हैं

कुछ साधक मिट्टी के पात्र के समान होते हैं, वे मन पर छोटी-सी भी चोट लगते ही खण्ड-खण्ड हो कर बिखर जाते हैं,

जीवन सिद्धि का मंत्र

भोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखता है स्वतन्त्रता अपना स्वार्थ भी देखती

है, और परमार्थ भी. संयम सिर्फ परमार्थ देखता है.

भोग से स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता से संयम—तीनों का यह क्रमिक आरोहण ऊर्ध्वगमन है, जीवन सिद्धि का मंत्र है

तीन योग

गीता में तीनों योग का उपदेश है—भक्तियोग, ज्ञानयोग, एवं कर्म-योग ! यह जीवन का सम्पूर्ण दर्शन है.

भक्ति में हृदय होता है, ज्ञान में आँखें होती हैं तथा कर्म के पंर होते हैं.

भक्ति में एक प्रकार की आकुलता है, ज्ञान में शान्ति है, कर्म में सजीवता है.

असर

तुम्हारी भावना में पवित्रता और कर्तव्य में तेजस्विता है, तो पहला असर तुम्हारे जीवन पर पड़ेगा दूसरी अवस्था है पड़ोसियों व साथियों को प्रभावित करने की और तीसरी अवस्था में पहुँचने पर उसका प्रभाव समाज व जगत को भी आवेष्टित कर लेगा



सगति का फल

सरिता का मधुर जल सागर में जाकर खारा क्यों हो जाता है ?

अमृत-सा मीठा दूध काजी का स्पर्श पाकर फट क्यों जाता है ?

एक ही उत्तर है—“ननर्गजा दोष गुणा भवन्ति” सगति का परिणाम है.

दुर्जन का सग

दुर्जन की सगति कभी भी सुखप्रद नहीं हो पाती. दुर्जन की अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों ही दुःखप्रद होती हैं जैसे कि जलने हुए कोयले का स्पर्श हाथ को जला सकता है, और बुझे हुए कोयले का स्पर्श हाथ को काला कर सकता है.

बर्फ के निकट बैठने से ही मन शीतलता से प्रसन्न हो जाता है, और अग्नि के पास बैठने से गर्मी से घबराने लगता है

दुर्जन का सहवास होते ही हृदय कष्ट से अकुलाने लगता है, और सज्जन के दर्शन करते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है.

यह संगति का स्पष्ट परिणाम है

सत कबीर ने इसीलिए कहा है

कविरा संगति साधु की ज्यो गाधी की वास !

जो कछु गाधी दे नही, तो भी वास सुवास !

और दुर्जन की संगति कैसी है, जानते हैं ?

शराबी का सहचर्य !

शराब नही पीने पर भी उसकी दुर्गन्ध से सिर फटने लग जाता है
संगति करने से पहले उसके गुण-दोष पहचान लो ! अच्छी संगति से
सदा आनन्द उल्लास प्राप्त होगा, और बुरी संगति से कष्ट एव पीडा !

अग्नि का स्पर्श

निस्तेज काला कोयला भी अग्नि का स्पर्श होते ही रक्त वर्ण होकर
तेज से चमक उठता है तो क्या पापी और पतित व्यक्ति साधु पुरुष
के ससर्ग में आकर सज्जन और सदाचारी नही बन सकते ?

११

जैसा संग, वैसा रंग

ईंट या पत्थर की दीवाल पर लगाया गया सीमेन्ट भी ईंट-पत्थर
की तरह वज्र लेप बन जाता है. और यदि मिट्टी की दीवाल पर
लगाया गया तो मिट्टी की तरह कमजोर ही रहेगा ! जैसा संग
वैसा रंग !

घन्दन, चन्दन

वन्दन, चन्दन से भी अधिक शीतल है. चंदन का लेप क्षणिक सुवास

जीवन दर्शन

और तात्कालिक ताजगी देता है. किन्तु वन्दन की मधुरिमा तो हृदय को सदगुणों के सुवास से भरकर सदा के लिए नवस्फूर्ति देती रहती है. वन्दन चमत्कार है क्रुद्ध को शान्त करता है, उद्धत को विनम्र बनाता है. विद्या का द्वार खोलता है और व्यक्तित्व पर ग्राव चढ़ाता है

५ साधना का मार्ग

साधना का मार्ग पर्वत की चढ़ाई है. उसकी अमित ऊँचाई को छूना कठिन है, किन्तु जीवन की श्रेष्ठता उसी में है.

भोग और वासना का मार्ग चिकनी और ढालू जमीन का रास्ता है, इसलिए आसान है, किन्तु खतरनाक भी !

ज्ञान : क्रिया

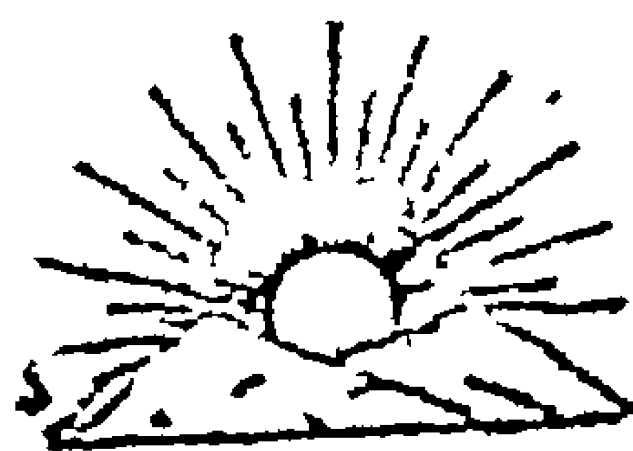
ज्ञान के द्वारा तत्त्व का स्वरूप समझा जाता है, क्रिया के द्वारा तत्त्व की उपलब्धि होती है.

साधना का आरोहण

आत्म-ज्ञान के बिना चित्त सन्देहरहित नहीं होता

आत्म-प्रतीति के बिना आत्मा की ओर निश्चित श्रद्धायुक्त प्रयाण नहीं होता आत्मानुभव के बिना अखण्ड चेतन सत्ता की अनुभूति नहीं होती.

आत्मज्ञान से आत्म-प्रतीति और आत्म-प्रतीति से आत्मानुभव यह साधना का क्रमिक उच्च आरोहण है.



चिन्तन की चाँदनी

जा

ग

र

ण

जागृति जीवन है, निद्रा मृत्यु ।

जागृति में जीवन का कण-कण स्फूर्तिमान, तेजोदीप्त
एव क्रियाशील रहता है

जागरण का सन्देश देते हुए एक महान् जैनाचार्य ने
कहा है—

“जागरह परा णिच्च, जागरमाणस्य वट्ठे बुद्धी”
मनुष्यो ! जगते रहो, जागृत मनुष्य की बुद्धि सदा
स्फूर्तिमान रहती है.

उन्माद, दिव्य, मादक, बुद्धिमानी, निद्रा और मत्तन-
जागरण वर्तमानमानस से मय जीवन को जागृति में
मूलवस्त्व है, जागरण के प्रतीक हैं

जागरण



जागते रहो !

जगना जीवन है, सोना मृत्यु ! जो सदा जगता रहता है, उसकी बुद्धि भी जगती रहती है.

प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री सघदास गरिण ने कहा है—

जागरह ! णरा णिच्च जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी

—वृह० भाष्य ३३८३

मनुष्यो जागते रहो ! जागते रहने वाले की बुद्धि भी सदा जागृत रहती है

जो सोता है, उसका ज्ञान भी सो जाता है, जो आलस्य करता है, उसकी बुद्धि स्खलित हो जाती है—

“मुवति सुवतस्स सुय सकिय खलिय भवे पमत्तस्म”

—निशीथ भाष्य ५३०४

संसार के जितने भी महापुरुष हुए हैं, बड़े-बड़े वैज्ञानिक और विद्वान हुए हैं उनकी साधना का मूल मंत्र यही रहा है—सदा जागृत रहो, कार्य में जुटे रहो, और अखण्ड अविचल निष्ठा के साथ अपने ध्येय की आराधना करते रहो

✓

आलस्य चूहा है

आलस्य एक चूहा है, जो जीवन की डोरी को धीरे-धीरे काटता रहता है.

आलस्य खदान की एक आग है, जो धीरे-धीरे सुलग कर संपूर्ण खदान को स्वाहा कर डालती है.

जो सिद्धि का अमृत चाहता है, उसे आलस्य के जहर से वचना होगा. भगवान बुद्ध के शब्दों में—

“प्रमादो मच्चुनो पद”

—धम्मपद २११

प्रमाद—आलस्य ही मृत्यु का मुख है.

आचार्य संघदासगणि ने यही बात कही है—

“आलस्तेणसमं सोक्खं”

—बृह० भा० ३३८५

आलस्य के साथ सुख का कोई मेल नहीं है

तेज प्रकट होगा

मैंने देखा एक बालक सलाई लेकर उसे दियासलाई पर रगड़ने की वजाय पत्थर पर बार-बार रगड़ कर उससे आग प्रकट करने की कोशिश कर रहा था. पर उसकी सलाइयाँ टूट गई, आग नहीं जली.

मेरे चिन्तन का सूत्र भनभनाया—मन भी एक सलाई है, किन्तु जब आत्मभाव के साथ उसकी रगड़ होगी तभी उससे तेज प्रकट होगा. पुद्गल रूपी पत्थर के साथ रगड़ करने वालों का प्रयत्न तो इसी बालक के तुल्य है

✓

वृक्ष का मूल

उत्साह जीवन—वृक्ष है जिस वृक्ष का मूल सूख गया, वह वृक्ष संसार से मिट गया.

जिमका उत्साह समाप्त हो गया, वह जीवन संसार से लुप्त हो गया.

उत्साह का जहाज

जीवन समुद्र के समान है, इसमें कर्तव्य का अथाह जल भरा है तुम इस समुद्र को पार करना चाहते हो, तो उत्साह के जहाज पर चढ़ो, और खेतें जाओ, खेतें जाओ किनारा अवश्य मिलेगा.

✓ शीशेनुमा उत्साह

उत्साह को शीशे जैसा नाजुक नहीं, वज्र जैसा कठोर बनाइए !

शीशे पर जरा-सी आंच लगी कि वह टूट जाता है जरा-सी असफलता मिली कि उत्साह भग हो जाता है शीशेनुमा उत्साह प्रगति के पथ पर नहीं बढ़ सकता !

धूप और तूफान

क्या भीष्म ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप उन वृक्षों को सुखा सकती है, जिनकी जड़ों के नीचे मधुर जल का स्रोत प्रवाहित होता रहता है ?

क्या आधी और तूफान उन महावृक्षों को हिला सकती हैं, जिनकी जड़ें जमीन में बहुत ही गहरी चली गई हो ?

नहीं !

तो फिर क्रोध की धूप उन हृदयों को शुष्क नहीं बना सकती, जिनके अन्तस्तल में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित हो रही हो

लोभ और वासना के तूफान उन महान आत्माओं को विचलित नहीं कर सकते जिनके चिन्तन की जड़े ज्ञान की अतल गहराई को छूने लगी हो.

गजसुकुमाल, आर्यस्कन्दक और स्थूलिभद्र की जीवनगाथाएँ इस सत्य को प्रतिध्वनित करती आई हैं.

तीक्ष्ण चिन्तन

यदि तुम्हारा चिन्तन लोहे की तीक्ष्ण कील के समान तीक्ष्ण एवं सूक्ष्म हुआ तो वह जीवन के समस्त रहस्यों में उसी प्रकार अन्तर्हित हो जायेगा जिस प्रकार कि तीक्ष्ण कील लकड़ी के सूक्ष्म छेदों में घुस जाती है !

जागरण

यदि लोहे की मोटी छड़ के समान निम्न स्थूल ही रहा तो वह किसी भी रहस्य को नहीं पा सकेगा।

विश्वदर्शन· आत्मदर्शन

दूरबीक्षण यंत्र लगाकर असंख्य तारों और नक्षत्रों की गणना करने वाले, एव समुद्र की अतल गहराई का दर्शन करने वाले मानव के पास आज वह दृष्टि कहा है कि वह अपने भीतर में झाँककर आत्म-दर्शन भी कर सके।

विश्व दर्शन की होड़ में आज आत्म-दर्शन कीन कर रहा है ?

सूखा वृक्ष

जिस वृक्ष की जड़ें सूख गई हैं, वह पानी सीचने से भी हरा-भरा नहीं होता, वल्कि सड़ने लग जाता है इसी प्रकार जिस हृदय में विवेक या सद्भाव नष्ट हो चुका है, उसको सद्शिक्षा देने से लाभ नहीं, किन्तु हानि ही होती है

बुद्धि और हृदय

बुद्धि ने कहा—देखो मेरा चमत्कार, मैंने सब शास्त्रों का निर्माण किया है

हृदय ने कहा—मेरा चमत्कार भी देखो, मैंने सब कलाओं का आविष्कार किया है

बुद्धि सिर्फ 'मत्य' को देखती है, हृदय 'शिव' व 'सुन्दर' को भी।

विवेक

आलस्य में पशुता है, कर्म में जीवन है, विवेक में मनुष्यता है।

भौतिकवन की तात्कालिक तीक्ष्ण प्रभावशीलता हिंसक को कुम-लाती है।

आत्मिकवन की सतत निश्चित सफलता अहिंसक को उत्साहित करती है।

भौतिक बलका प्रभाव क्षणिक है, आत्मिक बल का चिरस्थायी !

अवज्ञापात्र

ससार में अवज्ञा उसी की होती है, जिसमें तेज नहीं होता

जलती हुई आग को कोई पैरो से नहीं रोदता, किन्तु राख को हर कोई रोदता है.

मानव ! तू स्वयं तेज हो, अमृत हो—यजुर्वेदीय मंत्र की भाषा में—
“तेजोऽसि, अमृतमसि”

तू तेज रूप हो, दीप्तिमान हो और अमृत स्वरूप हो तू अपने स्वरूप को प्रगट करो, फिर किसकी हिम्मत है कि वह तुम्हारी अवज्ञा कर सके.

युवा कौन ?

✓ युवा कौन ?

जिसकी धमनियों में उत्साह और उल्लास का रक्त दौड़ रहा है, वह वृद्ध होकर भी युवा है.

जिसके मन और बुद्धि पर आलस्य व निराशा की झुरियाँ पड़ गयी हैं, वह युवा होकर भी वृद्ध है

✓ साहस और कायरता

सरलतापूर्वक अपने दोष और भूलों को स्वीकार करना सबसे बड़ा साहस है.

अपने दोषों पर शब्द-जाल का पर्दा डालकर छिपाना सबसे बड़ी कायरता है

✓ नाविक कौन ?

खतरे से डरने वाला, कष्टों से घबराने वाला और आपत्तियों से भय-

जागरण

भीत होने वाला, जीवन में किसी भी तरह का क्रान्तिकारी काम नहीं कर सकता.

जो सर्वत्र भूत ही भूत देखता रहता है, उसे देवता के दर्शन कैसे हो सकते हैं ?

नाविक जब लंगर खोलकर चल देता है, लहरों के थपेड़ों से जूझता हुआ सघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है, तो आधी तूफान में पीछे नहीं देखता—वह किनारे तक पहुँच जाता है

जो तूफानों से घबराता है, वह नाविक नहीं हो सकता जिसके पास तूफानों से भिड़ जाने का होसला है, वही सफलतापूर्वक अपनी नौका से सकता है.

परिवर्तन

'अवस्था के अनुकूल व्यवस्था'—यह स्थितिपालक मनोवृत्ति है, जिनमें परिवर्तन करने की कल्पना नहीं, उसे वर्दाशित करने की क्षमता नहीं, उन्हें यह स्थितिपालकता रवीकार्य है

“मानव ! तुम्हारा इतिहास विकास और क्रान्ति का इतिहास है, तुम निरन्तर आगे से आगे बढ़ते रहे हो तुम्हारे प्राप्य की इयत्ता नहीं है, तुम्हारा लक्ष्य अनन्त आकाश से भी ऊँचा है जीवन के बंधे बंधाये कठघरों में रहने वाले तुम नहीं हो तुम्हें इन बन्धनों को तोड़कर जीवन मुक्त होना है विकास के चरम बिन्दु पर पहुँचना है.

लोह-शृंखलाओं को तोड़कर तुम आगे बढ़ो और अपने लक्ष्य के अनुकूल व्यवस्था बनाओ ! और उम और चल पड़ो !...

रोओ मत !

परिस्थितियों के ठुकराए युवक ! रोओ मत ! आंसू मत बहाओ !

ये आंसू, आंसू नहीं है, अन्तःकरण के मानसरोवर में भावनाओं की शुक्तियों में जन्म लेने वाले ये बहुमोल मोती हैं

यह अश्रु-जल पारा पानी नहीं है ! हममें तुम्हारे युवा-पोषण की मुघा धूल-धुलकर बही जा रही है, मिट्टी के मोल !

तुम्हारी पराजित-सी आंखों के सम्पुट से उद्भूत यह कवोष्ण जलधारा
जब गुलाबी कपोलों को भिगोती हुई नीचे उतरती है तो इसमें तुम्हारा
शौर्य लजाता हुआ-सा बहता है

ये आंसू तुम्हें दर्शक जनता के दया-पात्र बना सकते हैं, श्रद्धा-पात्र
नहीं।

तुम्हारी धमनियों में दौड़ता हुआ साहस का उष्ण रक्त, आंसू के
माध्यम से अपनी उष्मा समाप्त किए जा रहा है !

युवक ! तुम अग्निपुंज हो ! तेजस्वरूप हो ! रोना, नीचे गिरना,
तुम्हारा लक्ष्य नहीं हृदय को रिक्त किए—सुनसान बैठना युवक शक्ति
का अपमान है

उठो ! साहस और सत्संकल्प से मन को भरो ! विश्व की रिक्तता
को कर्तव्य से पूर्ण करो । —

“लोक पृण, छिद्र पृण ।”

—यजुर्वेद १२।५४

तुम समस्त विश्व की रिक्तता को भर दो । जगत के समस्त छिद्रों को
भर दो । स्वयं पूर्ण होकर ससार को पूर्ण बनाओ !...

✓ सिद्धि एक से नहीं.

एक अंगुली से कभी गांठ नहीं खुलती, एक हाथ से कभी ताली नहीं
बजती, एक पाव से कभी चला नहीं जाता फिर एकांगी साधना से
प्रभु को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

केवल वाणी की प्रार्थना प्रार्थना नहीं, वाणी-विलास है प्रार्थना में
मन और वचन दोनों मिलने चाहिए, मन की पवित्रता एवं तल्लीनता
जब होगी तभी वचन व्यापार प्रार्थना का रूप लेगा और जीवन की
सिद्धि का द्वार उन्मुक्त करेगा

अपने बल पर...

कण्टो से-वे घबराते हैं जिनमें साहस की कमी होती है, और दूसरों
का सहारा वे ताकते हैं जिनका आत्म-विश्वास मूर्दा होता है

जिनमें साहस, शौर्य एवं आत्म-विश्वास जीवित है, जिनके प्राणों में
कृतित्व की ऊर्जा स्फूर्त हो रही है वे कभी कण्टों, व भयों से आतंकित

नहीं होते, दूसरो का सहारा नहीं ताकते वे चलते रहते हैं, बढते रहते हैं, केवल अपने बल पर !

भगवान महावीर की सेवा में देवराज इन्द्र उपस्थित हुए, प्रार्थना करने लगे—“भगवन् ! आपके साधनाकाल में अनेक उपसर्ग, बाधाएँ और सकट आने वाले हैं प्रभो ! आप तो उनसे निर्भय हैं, किन्तु मुझे सेवा का अवसर दीजिए, मैं सतत आपकी सेवा में रहकर उनका निवारण करता रहूँ.”

ध्यानस्थ प्रभु ने निमेष खोले और एक मंदस्मित के साथ गभीर वाणी में कहा—देवराज ! यह कभी संभव नहीं है कि कोई भी साधक दूसरो के सहारे पर सिद्धि प्राप्त कर सके. अतीत, अनागत और वर्तमान में जितने भी साधक हुए हैं, और होंगे वे सब अपने साहस और आत्म-विश्वास के बल पर ही सिद्धि प्राप्त करते रहे हैं— “स्वकीर्णैव गच्छन्ति जिनेन्द्रा परमागतिम्.”

प्रभु के आलौकिक आत्म-तेज से दीप्त वचन सुनकर देवराज चरणों में श्रद्धावन्त हो गए

भूख कैसे मिटे ?

भूख कैसे मिटे ? खाने से या देने से ?

पेट की भूख ग्रहण करने से मिटती है, पर मन की भूख बड़ी विचित्र है वह आदान—लेने से नहीं, प्रदान—देने से मिटती है.

यदि आपको स्नेह एवं सम्मान की भूख है, तो उसे बटोरिए मत, उसे बाँटते जाइए—आपकी भूख मिट जायगी !

आप किसी को स्नेह एवं सम्मान देने के लिए मजबूर मत कीजिए, बल्कि आपका स्नेह तथा सम्मान पाकर वह देने के लिए स्वयं मजबूर हो जाएगा.

मन की भूख, लेने से नहीं, देने से ही मिटती है. आदान नहीं, प्रदान चाहती है

यह जीवन क्या है ? भूलो की गठरी !

भूल करना, भूल होना जीवन का सहज क्रम है भूलो से ही मनुष्य बुद्धिमानी का पाठ पढ़ता है बुद्धिमानी का माने ही है—भूलो से सीखा हुआ पाठ !

बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा—तुम इतने बुद्धिमान कैसे बने ? तुम्हारा गुरु कौन है ?

बीरबल ने गभीर होकर उत्तर दिया—‘मेरे गुरु का नाम है मूर्ख !’ मूर्खों की मूर्खता को देख कर ही मैंने सीखा कि जो काम करने से मूर्ख कहलाते हैं वह काम न किया जाय, वस, मैं बुद्धिमान बन गया ! भूल भले हो, पर शर्त यह है कि एक ही प्रकार की भूल दुवारा न हो

भगवान महावीर की दिव्य वाणी में यही तथ्य यो ध्वनित हुआ है—

“इयाणि णो, जमह पुव्वमकासी पमाएण”

—आचाराग १।१।४

जो भूल प्रमादवश एक बार कर चुके हो, अब उसे पुनः दुहराओ मत !

“वीय त न समायरे”

—दशवै ८।३१

दुवारा उस भूल का आचरण न करे वस, इसी का नाम है बुद्धिमानी !

सफलता का गुरु

एक सफल उपन्यास लेखक से पूछा गया—“आप उपन्यास सम्राट् कैसे हो गए ?”

छोटा-सा जबाब मिला—“एक दिन भी लिखने की नागा न करने से”

सफलता का ठोस गुरु यह है कि निरन्तर काम में जुटे रहो मुलायम रस्सी पत्थर पर निशान कर देती है निरन्तर गिरने वाली जल का बूँदे सिलाखण्ड पर गड़्ढा बना देती है और निरन्तर कार्य में लगा आदमी आकाश के तारे तोड़ लेता है

संस्कृत के एक नीतिकार का यह वचन स्मृति में रखिए -

"अवन्व्यं दिवम कुर्यात्"

थोड़ा य बहुत काम अवश्य करिए, दिन को फालतू-खाली मत लौटने दीजिए !

ॐ विपत्तियों से लड़ना सीखो !

मनुष्य विपत्तियों से लड़कर ही महान बन सकता है ?

रामायण सुनते हो, महाभारत पढ़ते हो, कल्पसूत्र और आचाराग का वाचन करते हो, इशु के जीवन चरित्र पढ़ते हो, मुहम्मद साहब की जीवनी का अध्ययन करते हो, किसलिए ? इसीलिए न कि आपके पूर्वजों ने किस प्रकार कष्टों में भ्रमण किया है, विपत्तियों से जूझे है. और उन तकलीफों के खेल में विजयी बनकर ही वे महापुरुष बने हैं. अपने को विपत्तियों से लड़ने के लिए तैयार कर लो. पत्थरों की यह नदी बह रही है, तनकर खड़े हो जाओ, और उस पार पहुँचो ! उस पार पहुँचने वाला ही इस जीवन यात्रा का सच्चा पथिक है.

शक्ति का परिचय

मनुष्य दीन नहीं है सर्वसमर्थ है. उसने क्या नहीं किया—

शेर जैसे हिंसक पशु को उगने सीखने में वन्द कर दिया.

हाथी जैसे शक्तिशाली को अपने द्वारों पर नचाया.

जिराफ जैसे लम्बे जानवर को भी बाँधलिया.

ह्वेल जैसे भारी भरकम जीव को भी पकड़लिया.

धूँक को बर्फ बना देने वाली सर्दों से बचने का उपाय निकाला.

पत्थर का पिघलाने वाली गर्मी को ठण्डा बनानिया.

घिजली जैसी दानवी से चक्की पिसवाली.

फिर क्या वह जीवन के छोटे-मोटे दुःखों को दूर नहीं कर सकता ?

क्या मन को बचन बनाने वाले विकल्पों पर विजय नहीं पा सकता ?

अवश्य ! अवश्य ! पर तभी, जब वह अपनी अनन्त आत्म-शक्ति से परिचित होगा ।

—

• लकड़ी और चन्दन

समय एक नदी की भाँति बहता जा रहा है- इसमें काँटे भी हैं, फूल भी हैं, लकड़ी भी है, चन्दन भी ! काँटों से बचकर फूल चुनलो, लकड़ी को छोड़कर चन्दन बीन लो ।

दो परिभाषाएँ

जिसका विचार सिर्फ देखने—“पश्यति” तक ही सीमित रहता है, वह पशु है

जो देखता है, और उस पर चिन्तन-मनन भी करता है—“मनुते” वह मनुष्य है

✓ विचारशीलता

निर्णय करने में जल्दबाजी न करो,
कार्य करने में ढिलाई न करो,
फल पाने में अधीर न बनो !

‘कार्य के आदि-अन्त में ‘धैर्य’ एवं मध्य में ‘त्वरा’—यह प्रत्येक प्रवृत्ति को सफल बनाने का नियम है.

क्या चाहिए ?

कहो, तुम्हें क्या चाहिए !

धर्म या धन ?

सिद्धि या प्रसिद्धि ?

दया या प्रेम ?

अधिकार या कर्तव्य ?

दान या पुरुषार्थ ?

आश्रय या प्रेरणा ?

नी की तरह जलो !

घनीभूत विकराल अंधकार को चीरती हुई छोटी-सी ली, निर्भयता पूर्वक सिर ऊपर उठाती है, और धीरे तमस् को लील जाती है.

अथाह सागर के विशाल वृक्ष पर लहराती हुई नौका अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती हुई सागर की अपार दूरी नाप लेती है.

अनन्त आकाश के विस्तार पर व्यग करता हुआ विमान उनके ओर-छोर को रोद डालता है

युवक ! तुम ली की तरह जलो ! नौका की तरह चलो ! विमान की तरह उड़ो ! जीवन का अनन्त पथ प्रशस्त करते हुए आगे बढ़ो !

बीज की तरह.

साधक ! तुम कहीं भी रहो ! बीज की तरह सदैव पूर्णता की खोज में रहो. लघु से महान् बनने की दिशा में बढ़ते रहो. पाताल से आकाश की ओर बढ़ने की साधना करते रहो.

बीज—बीज रूप में कठोर होता है, किन्तु अनुकूल अवसर पाते ही अंकुर के रूप में अपनी कोमलता को व्यक्त कर देता है. सूरज के आतप से और चन्द्र की चन्द्रिका से भी वह लाभ उठाता है. रात के मलिन अंधकार से भी और दिन के उज्ज्वल प्रकाश से भी वह पोषण प्राप्त करता रहता है.

बीज की यह कला तुम्हारा जीवन दर्शने स्पष्ट करेगी.

आशा, उत्साह का सम्बल

उत्साही युवक ! उत्साह तुम्हारी परिभाषा है, आशा तुम्हारा जीवन है. तुम निराशा का आश्रय न लो !

भिर पर उमड़ती हुई काली घटाएँ और घट्ट-घट्ट कर फड़कती हुई बिजलियाँ तुम्हारे मन को भयभीत नहीं कर सकती. सौर्य तुम्हारे शोणित में बेलाकुल है, वन तुम्हारी भुजाओं में नहरा रखा है.

सिर पर मडराती हुई घटाएँ तुम्हे जीवनदान देगी. कड़कती हुई बिजली तुम्हारे पथ को आलोकित करेगी, प्रतिकूलताएँ अनुकूलता में बदल जाएंगी !

युवक घबराओ नहीं ! आशा और उत्साह का सम्बल लिए बढ़ते चलो !

प्रगति के दो चरण

कुछ व्यक्ति सोचते हैं, और इतना अधिक सोचते हैं कि करने को समय ही नहीं रह पाता.

कुछ व्यक्ति करते हैं, और इतनी तेजी से करते हैं कि सोचने का अवकाश भी नहीं मिल पाता

ये दोनों ही प्रगति के अवरोधक तत्त्व हैं. दोनों से ही प्रगति अवगति होती है.

सही सोचना, आवश्यक सोचना, जल्दी सोचना.

सही करना, आवश्यक करना, जल्दी करना.

प्रगति के ये दो चरण जहाँ हैं, वहाँ गति है ऊर्ध्वगति है

प्रदर्शन

प्रदर्शन में स्व-दर्शन ओभल हो जाता है, केवल पर-दर्शन ही मुख्य रहता है.

जिसे स्व-दर्शन अर्थात् आत्म-दर्शन करना है, उसे प्रदर्शन से वचना चाहिए. उसी प्रकार जैसे कि शीतलता चाहने वाला धूप से वचता है.

आशा : निराशा

मानव ! जब तुम आशाओं के मनोरम महल खड़े करते हो, तो कितना सुख मिलता है ?

और जब वे महल ढहने लगते हैं तो कितना दुख होता है ?

यदि तुम ये महल खड़े करना ही छोड़ दो, तो सुख-दुख के द्वन्द्व से छुटकारा नहीं हो जाए ?

जागरण

१०३

नींव को ईंट, बनाम ध्वज !

मन्दिर के शिखर पर हवा में सुन्दर ध्वज लहरा रहा है.

दूसरी ओर नींव में एक मौन ईंट पड़ी है, सब की आँखों से ओझल !
सुस्थिर ! चुपचाप !

ध्वज मन्दिर का केवल प्रतीक है, ईंट उसका आधार है

मानव ! तुम मानव-मन्दिर के ध्वज बनना चाहते हो, या नींव को ईंट !

सोचो ! निर्णय करो ! और फिर तदनुसार आचरण भी !

बन्धन अपरिपक्व के लिए हैं !

परिपक्व के लिए कोई बन्धन नहीं, कोई उपदेश नहीं. बन्धन और उपदेश अपरिपक्व के लिए ही हैं

वृक्ष फल को तब तक बांधे रखता है, जब तक वह पकता नहीं

गुरु शिष्य को तब तक उपदेश देता है जब तक कि वह परिपक्व नहीं होता.

भगवान महावीर ने कहा — "उहेसो पासगम्य नहि" द्रष्टा और विवेक-
वान के लिए आदेश-उपदेश नहीं है ।

मृत्यु क्या है ?

मृत्यु क्या है ?

जीवन के समस्त कृतित्व का अन्तिम मूल्यांकन !

मृत्यु नो परीक्षा है. जो वर्ष भर के अध्ययन का अन्तिम परिणाम घोषित करती है

जिनने शानदार ढंग में जीया नहीं, उनकी मृत्यु शानदार कैसे हो सकती है !

सुन्दर व सुन्दर मृत्यु के लिए सुन्दर व सुगम जीवन जीना सीखो.

• मुर्दा जिन्दगी

लुढ़कती-घिसटती जिन्दगी क्या काम की ? वह तो मुर्दा जिन्दगी है.
जीना है तो गतिशील और स्फूर्तिमय जीवन जीओ ! मुस्कराहट और
प्रसन्नता बिखेरते जीओ ।

शूल न बनिए

यदि आप सूर्य के समान तेजस्वी तथा चाँद के समान शीतल नहीं बन
सकते हैं, तो कोई बात नहीं, किन्तु राहू तो मत बनिए.

यदि आप फूल के समान सुरभित नहीं बन सकते हैं, तो कोई बात
नहीं, किन्तु शूल तो न बनिए !

• भविष्य को बनाइए !

जो भूत है, वह गुजर चुका, उसे बदला नहीं जा सकता किन्तु जो
आने वाला भविष्य है, वह तुम्हारे हाथ में है, उसका "सुन्दर" से
सुन्दरतम निर्माण किया जा सकता है.

यजुर्वेद के महान भाष्यकार आचार्य उव्वट ने कहा है—

“भूत सिद्ध , भव्य साध्य भूतं भव्यायोपदिश्यते”

भूत सिद्ध है, और भविष्य साध्य है भविष्य के सुन्दर निर्माण के
लिए ही भूत का उपदेश (आदर्श) है.

स्मृति का विपर्यास

मानव ! तू अपनी स्मृति को सुधार ! दूसरो ने तुझे क्या कहा. कैसा
कहा, यह तो तू बहुत याद रखता है, किन्तु तुमने दूसरो को क्या
कहा, कैसा कहा, यह भूल जाता है

स्मृति का यह विपर्यास जीवन में सकट पैदा करने वाला है.

चौरासी अंगुल का शरीर

एक प्राचीन उक्ति है कि—प्रत्येक मनुष्य का शरीर आत्मागुल से
चौरासी अंगुल का होता है

इसका तात्पर्य समझने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि चौरासी के चक्कर को काटने के लिए प्रत्येक एक अंगुल का महत्व है.

चौरासी के चक्कर को समाप्त करने के लिए चौरासी अंगुल प्रमाण शरीर का सदुपयोग कीजिए.

भूल को स्वीकार करो ।

- भूल हो जाना बुरा नहीं है, किन्तु भूल को स्वीकार न करना बुरा है. और उससे भी ज्यादा बुरा है भूल को छिपाने के लिए दूसरी भूल करना.

भूल को स्वीकार करने का अर्थ है भूल से होने वाले दम्परिणामों से वचना. भविष्य को सुखमय बनाना.

समय का प्रवाह

नदी के प्रवाह की भांति समय का प्रवाह अविराम गति से वह रहा है, इसे कोई रोक नहीं सकता हा, मोड़ सकता है, और जीवन के क्षेत्रों में पानी सींचकर आनन्द की फसल पैदा कर सकता है

उठान ।

पक्षी अपने धूलि-धूसरित पंखों को फड़-फड़ाकर निर्धूल करके अनन्त गगन की उड़ान भरता है.

मेरे मन ! तুম भी अपने विकार-धूलि से लिप्त पंखों (मन व बुद्धि) को फड़फड़ाओ, निर्मल बनो और फिर आत्म-विकास की अनन्त उड़ान भरते हुए चल पडो !

सँकेष्ट की मुई ..

सँकेष्ट की मुई की तरह निरन्तर गतिशील रहो. नले ही आज तुम्हारी गति को कोई समझ पाये या नहीं, किन्तु निश्चित मजिल

पर पहुँचते ही सबको सावधान कर देगी और तुम्हारी सतत गति-शीलता पर ससार चकित होकर देखता रह जायेगा

क्षण ही जीवन है

जिसने एक 'क्षण' खो दिया, उसने समूचा जीवन खो दिया ।

क्षण-क्षण-क्षण । असंख्य क्षणों की कड़ी ही तो जीवन की शृंखला है
क्षण-क्षण-क्षण । असंख्य क्षणों का समवाय ही तो क्षीरसागर है

'क्षण' के बिना जीवन शून्य है, क्षण के बिना क्षीरसागर भी सूखा है
इसीलिए सावधान किया गया है—

“क्षणक्षणेन विद्यामयं च संचयेत्”

क्षण-क्षण और क्षण-क्षण करके विद्या और अर्थ का संचय करते जाइए.

वर्तमान क्षण ।

यद्यपि वर्तमान का क्षण तुम्हें बहुत ही छोटा-सा प्रतीत होता है, पर वह बहुत मूल्यवान है

क्या तुम नहीं जानते, चिन्तामणि कितना छोटा होता है ? पर एक ही मणि जन्म भर के दारिद्र्य को मिटा सकता है

क्या तुम नहीं जानते, अमृत का एक क्षण कितना छोटा होता है ? पर वह मूर्च्छित प्राणों में नवजीवन का संचार कर सकता है.

चिन्तामणि और अमृतक्षण से भी अधिक छोटा और इसलिए अधिक मूल्यवान है वर्तमान का 'क्षण' ।

वर्तमान के क्षण की कद्र करो, वह तुम्हें निहाल कर देगा विधि के समस्त वरदानों का द्वार खोल देगा सृष्टि का अनन्त वैभव भुजाओं में सिमट जाएगा.

जिसने वर्तमान को मूल्यहीन समझा, उसका जीवन मूल्यहीन होगया वह विधि के वरदानों में वंचित रह गया.

अतीत के क्षण 'कत्र' में सो गए, और भविष्य के क्षण अभी गर्भ में अव्यक्त है. वर्तमान तुम्हारे हाथ में है.

भगवान महावीर ने इसी वर्तमान को 'क्षण' (श्रवसर) कहा है—

“त्वरं जाणाहि पंडिए”

— आनारांगसूत्र

इस क्षण को समझने वाला मेधावी है, वह समय को गफलत में नहीं खोए—

“समय गोयम । मा पमायए”

उत्तराध्ययन-१०।१

क्षण भर भी प्रमाद न करो

स्वयं तैरना सीखें !

जो स्वयं तैरना नहीं जानता, वह दूसरों को कैसे तिराएगा ? यदि किसी डूबते हुए को बचाने का प्रयास करेगा तो स्वयं भी डूब जाएगा और उसे भी ले डूवेगा.

जो विषयों के सागर में स्वयं तैरना नहीं जानता, वह दूसरों को क्या उपदेश करेगा ?

यदि उपदेश करने जाएगा भी तो, कहीं स्वयं ही लोकपणा के प्रवाह में डूब कर ससार को भी डूबो देगा.

अपनी पहचान !

भगवान महावीर ने जागरण का उद्घोष करते हुए कहा है—

“नं बुज्झह । किं न बुज्झह !”

—सुवण्णसूत्र

अपने को समझो, अपनी अनन्त शक्तियों को पहचानो !

अभी तत्त क्यों न समझ रहे हो !

मनुष्य अनन्त शक्ति का त्वाँत है, जब वह करवट लेगा तो पर्वत भर-घरा जाएंगे, हवाएं सहम जाएंगी, दिनाएं काँप उठेंगी, और सूर्य-चाँद चौकड़ी भूल जाएंगे । मगध की प्रत्येक शक्ति उसके चरणों में आकर विनत हो जाएगी !

किन्तु हनुमान की तरह उसे भी शाप मिला हुआ है, जब तक कोई दूसरा उसे अपनी शक्ति का भान नहीं कराएगा, उसका अनन्त आत्मबल उद्दीप्त नहीं होगा !

अनन्त आत्म-शक्ति के उद्बोधक भगवान महावीर ने उसे प्रबुद्ध किया—जागो ! तुम देवताओं के प्रिय हो, विश्व के सर्वतोमहान प्राणी हो, और अनन्त वीर्यशाली हो !

अपने को दीन-हीन समझने वाले दिग्भ्रान्त मानव ! अब अपने आत्म-स्वरूप का भान करो ! अपनी पहचान करो !

गेंद और ढेला

४ मैंने देखा एक गेंद और एक ढेला ।

गेंद जितने वेग से गिरता है उतने ही वेग के साथ फिर उछलकर ऊपर उठ आता है

और मिट्टी का ढेला ! एक बार गिरते ही जमीन से चिपक जाता है; फिर उठने का नाम नहीं लेता

उत्साही व्यक्ति गेंद के समान है, हजार-हजार विपत्तियों में गिरकर भी वह उछल कर उनसे उभर आता है

और निरुत्साही व्यक्ति मिट्टी के ढेले के समान ! गिरने बाद उठने का साहस ही नहीं करता !

तुम ढेले नहीं, गेंद बनो

५ कष्ट सहन

कष्ट सहन करने से मनुष्य के भीतर तीव्र स्फूर्ति जग जाती है. गेंद को नीचे फेंकने से वह अधिक वेग के साथ उछलती है भाप (वाष्प) को दवाने से वह तीव्र वेग के साथ धक्का मारती है

पुरुषार्थ का फल ।

अतीत के श्रेष्ठ पुरुषार्थ का फल है वर्तमान जीवन का आनन्द ।

जागरण

१०६

यदि वर्तमान में श्रेष्ठ पुत्र पाय नहीं होगा तो भविष्य का आनन्द कैसे प्राप्त होगा ?

महत्वाकांक्षा

मनुष्य की आकांक्षाओं में महत्वाकांक्षा का प्रमुख स्थान है, जीवन की उन्नति और कार्यसिद्धि के लिए कुछ हद तक इसका अनिवार्य महत्व भी है.

महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए मनुष्य श्रम एवं निष्ठा को भूलकर भाग्य के पीछे दौड़ता है, ज्योतिषियों को जन्मपत्री और सामुद्रिकों को हाथ दिखाता फिरता है, और जानना चाहता है कि उसके जीवन में वह समय कौन-सा आयेगा जब वह बड़ा आदमी बनेगा

वस्तुतः बड़ा आदमी बनने में शारीरिक लक्षणों का वह महत्व नहीं है, जो उसके चरित्र व आचरण का है जिसका चरित्र ऊँचा है, वह महान बन सकता है, साहस, आत्म-विश्वास एवं कार्यदक्षता ही मनुष्य को बड़ा बनाती हैं

ज्ञान : उपदेश

उपदेश दिया हुआ नहीं लगता. अन्तर से जगना चाहिए दिया हुआ उपदेश और मुना हुआ ज्ञान आकाश से बरसने वाले पानी की तरह मन की भूमि पर गिरते ही सूख जाता है.

मन जब जागृत होता है, तब ज्ञान हृदय के अन्तरात्मा में स्फुरित होता है, और वह भीतर में स्फूर्त ज्ञान पृथ्वी के अन्तराल में छिपा जलस्रोत है, जो प्रतिफल, प्रतिक्षण अपनी शीतलता के द्वारा वनस्पति का पोषण करता रहता है.

कण्टों की अग्नि !

कण्ट अग्नि है, जलने दो उसे, घबराओ मत !

कण्टों की अग्नि का स्पर्श पाकर जीवन की मोमवत्ती प्रज्ज्वलित हो जायेगी, गुणों की अगवत्ती महक उठेगी और तुम्हारे चरित्र का स्वर्ण निम्बर जाएगा !

जीवन में कण्टों की अग्नि का जलने दो, उसमें घबराओ मत !

२०६

चिन्तन की चाँदनी

व्य

ष्टि

और

स

म

ष्टि

✓ विचारक ने उत्तर दिया—नहीं वह तो जन्म से नहीं, योग्यता ने प्राप्त अधिकार है यदि जन्म-सिद्ध अधिकार होता तो हर समाज में बालको को मत-स्वातंत्र्य, मूर्खों को विचार स्वातंत्र्य और दुराचारियों को आचार स्वातंत्र्य मिलना चाहिए था ? और तब समाज और शासन का क्या रूप होता, भगवान ही जाने ।

स्वतन्त्रता का जलकण

एक तोता खुशी में फुदकता हुआ, वृक्ष की टहनियों पर मचल-मचल कर किलक रहा था उसकी मस्तीभरी किलकारियों ने एक रसिक का मन मोह लिया. रसिक ने पकड़ा, और रत्नजटित स्वर्ण-पिंजर में बंद कर के अपने शयन-कक्ष के आगे टांग दिया

बच्चे प्यार से 'मिट्ठु-मिट्ठु' पुकार कर उसे किशमिश खिलाते गृह-स्वामिनी उसे चादो के प्याले में मीठा दूध पिलाती, सभी कोई खुश थे, तोते की तीखी किलकारी पर बच्चे ताली पीट कर भूम उठते थे

एक दिन गृहस्वामी ने देखा - तोता किलकता है, पर उसमें वह मस्ती नहीं, जो उस दिन उस वृक्ष की टहनियों पर सुनी थी तोता धूँध में तृप्त था, पर अनन्तगगन में उन्मुक्त विहार की श्रृंखला उसे कचाट रही थी रसिक ने दूध का कटोरा सम्मुख रखते हुए तोते की आँखों में झाँक कर देखा तो जैसे वह कह रहा था—

“तुम्हारे इस क्षीर सागर से भी अधिक मीठा है नीलगगन से गिरता हुआ ओस का वह एक जलकण, जिसमें आजादी की मधुरता एवं पवित्रता है. इन मेवों, और मिष्टान्तों से भी अधिक मधुर है, वृक्ष की टहनियों पर लटकता हुआ वह वनफल, जिसमें स्वतन्त्रता का माधुर्य है”

स्वतन्त्रता की वर्षगांठ ।

आज स्वतन्त्रता की वर्षगांठ है

विद्यार्थियों ! दृढमकल्प करो कि तुम अपनी स्वतन्त्रता की उत्तरोत्तर

जिल्लन की चौकनी

विकसित करते रहोगे. राजनैतिक स्वतन्त्रता से बौद्धिक स्वतन्त्रता और आत्मिक स्वतन्त्रता की ओर प्रस्थान करते रहोगे.

क्या तुम अपने चरित्र, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ के स्वर्ण पात्र में स्वतन्त्रता सिंहनी के दूध को ग्रहण करके अपने शौर्य एवं पराक्रम को विश्वकल्याण के लिए अर्पण करोगे ?

सुख की गेंद

~ सुख एक गेंद के समान है

गेंद को अपने हाथ में पकड़कर बैठने से आनन्द नहीं आता, किन्तु दूसरो की ओर फेंकने में ही आनन्द आता है

अपने सुख की गेंद को भी दूसरो को दीजिए, आनन्द की अनुभूति जगेगी, निश्चित जगेगी

✓ नेता अभिनेता !

आज के नेता अभिनेता की तरह सिर्फ चुनावो के मंच पर ही अपनी कलावाजी दिखाने के लिए जनता के समक्ष प्रस्तुत होते हैं.

उन्हे जनता-जनार्दन के सुख से कोई वास्ता नहीं, वे निर्मोही सत की तरह जनता के सुख-दुख से दूर रहकर केवल अपनी ही चिन्ता— अर्थात् अपने घर, अपने परिवार, अपनी कुर्सी एवं अपने दल की ही चिन्ता में डूबे रहते हैं

समाज के दो वर्ग !

वर्तमान समाज में दो वर्ग बने हुए हैं

एक वे—जिनके पास भूख से अधिक भोजन है.

दूसरे वे—जिनके पास भोजन से अधिक भूख है.

आज का संघर्ष इन्ही दो वर्गों का संघर्ष है अर्थात् भोजन और भूख का संघर्ष है

धृष्टि और समष्टि

११५

चित्रकार की तूलिका रंगों की मोहक-छटा में सौन्दर्य का वाह्य दर्शन करा सकती है, किन्तु आत्मा के अनन्त सौन्दर्य को शब्दों की तूलिका से सजाकर अभिव्यक्त करने की कला तो कवि के पास है

कलाकार....

काटा चुभने पर काटे की पीड़ा का ज्ञान करना—सामान्य मनुष्य का सामान्य स्वभाव है

विना काटा चुभे ही उसकी वेदनानुभूति को गमकना—विशिष्ट स्वभाव है

पहली कोटि—सामान्य जन की है

दूसरी कोटि—कलाकार की है

प्लास्टिक के फूल

✓ पहले कागज के फूल आते थे अब प्लास्टिक के फूल भी बनने लगे हैं. देखने में सुन्दर, रंगविरंगे, सदा खिले हुए ताजा प्रतीत होने वाले, प्राकृतिक फूल से भी अधिक मोहक !

पर, उस सौन्दर्य के साथ सौरभ कहाँ है ? उस रंगीनी के साथ माधुर्य कहाँ है ?

मचमुच आज का मानव प्लास्टिक का फूल बनता जा रहा है. कृत्रिम सुन्दरता के आवरण में सद्गुणों की सुवास कहीं गायब हो रही है ?

प्रतिबिम्ब !

दर्पण में आकृति का प्रतिबिम्ब दिखलाई देगा, यदि आकृति सुन्दर होगी तो प्रतिबिम्ब भी सुन्दर आएगा.

जनता दर्पण है, व्यक्ति के चरित्र का प्रतिबिम्ब, उसमें उद्भासित

होता है यदि चरित्र सुन्दर होगा तो प्रतिविम्ब निश्चय ही सुन्दर होगा.

तीन कोटिया

- दूसरो की भूल देखकर जो अपनी भूल सुधार लेता है, वह ज्ञानी है.
एक बार भूलकर के जो सुधर जाता है, वह अनुभवी है
जो बार-बार भूल करके भी सुधर नहीं सकता, वह मूर्ख है

जन • स्वजन . सज्जन

सौ जन मे कोई एक 'स्वजन' मिलता है, किन्तु हजार 'स्वजन' मे भी कोई 'सज्जन' मिल पाता भी है या नहीं ?

श्ववृत्ति—अश्ववृत्ति

दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ देखी जाती हैं—श्ववृत्ति और अश्ववृत्ति.

श्ववृत्ति—कुत्ता रोटी का टुकड़ा डालने वाले हर किसी के सामने पूँछ हिलाने लग जाता है

अश्ववृत्ति—घोड़ा अपने स्वामी को देखकर ही हिनहिनाता है, हर किसी के सामने नहीं

तुम जिस मनोवृत्ति को पसन्द करते हो, उसे जीवन मे अपना लो.

• दो गोलियाँ

चीनी की गोली (टिकिया) पानी में डाली गई तो गिरते ही गल कर पानी-रूप हो गई

काँच की गोली पानी में गिरी तो वैसी की वैसी ही पड़ी रही

कुछ श्रोता चीनी की गोली के समान उपदेश के जल में तदाकार हो जाते हैं. किन्तु कुछ काँच की गोली की तरह पानी में रहकर भी सूखे-के-सूखे रह जाते हैं

व्यष्टि और ममष्टि

वाटरप्रूफ और फायरप्रूफ वस्तुओं पर पानी और अग्नि का कोई असर नहीं हो सकता.

आज के मानव का मस्तिष्क भी लेक्चर-प्रूफ हो गया है. उसे चाहे जितने भी लेक्चर-भाषण सुनाइए, उसके मन और मस्तिष्क पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता.

❧ थर्मामीटर !

कुछ व्यक्ति समाज के थर्मामीटर होते हैं उनका गुण यह है कि वे समाज के हर एक गुण-दोष को सूचित करते रहते हैं.

किन्तु, उनका सबसे बड़ा दोष यह है कि इस वृत्ति से उनका स्वभाव दूषित हो जाता है, वे कभी भी अपना दोष नहीं देख पाते.

भगवान महावीर की भाषा में वे तृतीय पुरुष को श्रेणी में आते हैं—

“परस्त्रिणामं एगे वज्ज पामद्व णो अप्पणो”

वे दूसरों का ही दोष देखते हैं अपना नहीं.

अगारा

विद्यार्थी संसार का वह जगमगाता अगारा है, जो लोहे को भी भस्म कर सकता है.

किन्तु आज उस पर अज्ञान की राख चढ़ चुकी है. उस राख को हटाने के लिए प्रेरणा की एक तेज फूँक की आवश्यकता है.

वानक का जीवन !

वानक का जीवन कच्ची धातु के समान है. उसमें जैसा चाहें वैसा मिश्रण करके मन इच्छित रूप दिया जा सकता है

दिल को बात तब छूती है, जब हृदय में श्रद्धा हो, और दिमाग को बात तब छूती है जब बुद्धि हो

आज के विद्यार्थी के पास दिमाग तो है, किन्तु दिल नहीं बुद्धि तो है किन्तु श्रद्धा नहीं. इसीलिए उसका ज्ञान बुद्धि की खिड़की से छनकर हृदय में उतर नहीं रहा है.

उसकी बुद्धि प्रखर है, किन्तु हृदय कुण्ठा-ग्रस्त हो रहा है.

✽ छेदवाला घड़ा

छेदवाला घड़ा जब तक पानी में रहता है, भरा-भरा लगता है, किन्तु पानी से बाहर आते ही खाली

विद्यार्थी ! तुम्हारा जीवन ऐसा तो न हो कि जब तक विद्यालय में रहे अध्ययनरत रहे, किन्तु बाहर आते ही रिक्त, शून्य हो जाए.

✓ खाली लिफाफा !

जिस विद्यार्थी के जीवन में विनय एवं सच्चरित्र नहीं है, उसका जीवन उस शानदार लिफाफे के समान महत्वहीन है, जिसके सुन्दर कागज पर मनोहर एवं सुरम्य चित्र अंकित है, कलात्मक अक्षर-विन्यास से सज्जित है, किन्तु खाली है, भीतर पत्र नहीं है

जीवन की उर्वरभूमि

विद्यार्थी !

तुम्हारा जीवन समाज और राष्ट्र की रोड है तुम समाज के नव-निर्माण के लिए सकल्प करो ! तुम्हें चट्टान की तरह कठोर, तूफान की तरह गतिशील और धूमकेतु (अग्नि) की तरह ज्वलनशील बनना है

तुम्हारा जीवन वह उर्वरभूमि में है, जिसमें बोया गया सच्चरित्र का छोटा-सा बीज भी शतशाखी के रूप में समाज को शीतलछाया और मधुर फलों से कृतार्थ करेगा

विद्यार्थी जीवन समाज की प्रगति रेखा का आदि बिन्दु है. यह नींव की वह ईंट है, जिस पर राष्ट्र के गौरव का महल सजा होता है

विद्यार्थी !

विद्यार्थी !

तुम, भावी भारत की नौका के कर्णधार हो ।

दंश में सुख, समृद्धि और शान्ति की गंगा लाने के लिए तुम्हें भगीरथ बनना है.

दुःख, दीनता, दरिद्रता और दुराचार के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए तुम्हें ही अभिमन्यु बनना है.

नवजागरण और नैतिकक्रान्ति का शख फूँकने के लिए तुमको ही श्रीकृष्ण बनना है.

जागो ! विद्यार्थी ! भावी भारत का नक्शा तुम्हारे हाथों के बीच है

माता-पिता !

पिता ने गर्वोद्दीप्त भाषा में कहा—मैं योग्य पुत्र पर अपना सम्पूर्ण प्रेम न्योछावर कर देता हूँ.

माता विनीत स्वर में मुस्कराई—मैं तो पुत्र मात्र पर स्नेह वरमाती हूँ, मेरी नजर में योग्य और अयोग्य का भेद ही नहीं है.

देवप्रयी !

माता !

देवप्रयी का महान् संगम तुम्हारे में हुआ है, तुम विश्व की पूजनीया हो !

तुम बालक को जन्म देती हो, अतः ब्रह्मा के समान वन्दनीया हो !

तुम शिशु का पालन-पोषण कर सक्षम बनाती हो, अतः विष्णु के समान अर्चनीया हो ?

तुम सन्तान के दु खो व दुर्गुणों का विनाश करने में समर्थ हो, अतः शकर के समान अर्चनीया हो !

देवत्रयी का महान् सगम, माता के जीवन का महान्-दर्शन है

ज्योतिशिखा ।

भारतीय नारी शील की ज्योतिशिखा पर पतंगों की भाति जलकर भस्म होना जानती है, किन्तु सरकस के शेरों की तरह हटारों के सपाटे में कलावाजी दिखाकर दीनता पूर्वक जीना नहीं जानती

तरुणी-तरणी

साथी ! सावधान !

तरुणी को तरणी (नौका) के रूप में समझकर चलो ! वह अपने आश्रितों को मँझधार में डुवो भी सकती है, और पार भी लगा सकती है

पीयूषघट

कोई पूछे, उन कलम की कौतुक-क्रीड़ा करने वालों से, कि उन्होंने नारी के कृष्णपक्ष को ही चित्रित करके क्यों रख दिया ? उसके शुक्लपक्ष की उज्ज्वल तस्वीर वे क्यों नहीं खींच सके ?

उसे वासना का कर्दम कहकर दूर-दूर रहने की प्रेरणा ही क्यों दी ? उसके जीवन में खिले साधना के शतदलों की सौरभ-स्निग्ध गाथा क्यों न गार्ई ?

उसे 'विषवेल' और 'नरक की खान' कहकर अपमानित क्यों किया ? उसके तप-त्याग, सेवा-स्नेह के पीयूषघट का बखान क्यों नहीं किया गया ?

यद्यपि जन्तुसंस्कृति ने नारी के दोनों पक्षों को प्रस्तुत किया है, सूर्यकान्ता और नागश्री के विषवेलि रूप को, तो काली, मुकाली, चेलना, कमलावती आदि के अमृत-रूप को भी !

विद्यार्थी जीवन समाज की प्रगति रेखा का आदि बिन्दु है. यह नींव की वह ईंट है, जिस पर राष्ट्र के गौरव का महल खड़ा होता है.

विद्यार्थी !

विद्यार्थी !

तुम, भावी भारत की नीका के कर्णधार हो !

देश में सुख, समृद्धि और शान्ति की गंगा लाने के लिए तुम्हें भगीरथ बनना है.

दुःख, दीनता, दरिद्रता और दुराचार के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए तुम्हें ही अभिमन्यु बनना है.

नवजागरण और नैतिकक्रान्ति का शख फूँकने के लिए तुमको ही श्रीकृष्ण बनना है.

जागो ! विद्यार्थी ! भावी भारत का नक्शा तुम्हारे हाथों के बीच है.

माता-पिता !

पिता ने गर्वोद्दीप्त भाषा में कहा—मैं योग्य पुत्र पर अपना सम्पूर्ण प्रेम न्योछावर कर देता हूँ

माता विनीत स्वर में मुस्कराई—मैं तो पुत्र मात्र पर स्नेह वरसाती हूँ, मेरी नजर में योग्य और अयोग्य का भेद ही नहीं है.

देवप्रयी !

माता !

देवप्रयी का महान् संगम तुम्हारे में हुआ है, तुम विश्व की पूजनीया हो !

तुम बालक को जन्म देती हो, अतः ब्रह्मा के समान नन्दनीया हो !

तुम शिशु का पालन-पोषण कर सक्षम बनाती हो, अतः विष्णु के समान अर्चनीया हो ?

तुम सन्तान के दु खो व दुर्गुणों का विनाश करने में समर्थ हो, अतः
शकर के समान अर्चनीया हो ।

देवत्रयी का महान् संगम, माता के जीवन का महान्-दर्शन है

ज्योतिशिखा !

भारतीय नारी शील की ज्योतिशिखा पर पतंगों की भाँति जलकर
भस्म होना जानती है, किन्तु सरकस के शेरों की तरह हटरो के
सपाटे में कलाबाजी दिखाकर दीनता पूर्वक जीना नहीं जानती

तरुणी-तरणी

साथी ! सावधान !

तरुणी को तरणी (नौका) के रूप में समझकर चलो ! वह अपने
आश्रितों को मँझधार में डुबो भी सकती है, और पार भी लगा
सकती है

पीयूषघट

कोई पूछे, उन कलम की कौतुक-क्रीड़ा करने वालों से, कि उन्होंने
नारी के कृष्णपक्ष को ही चित्रित करके क्यों रख दिया ? उसके
शुक्लपक्ष की उज्ज्वल तस्वीर वे क्यों नहीं खींच सके ?

उसे वासना का कर्दम कहकर दूर-दूर रहने की प्रेरणा ही क्यों दी ?
उसके जीवन में सिले साधना के शतदलों की सौरभ-स्निग्ध गाथा
क्यों न गाई ?

उसे 'विषवेल' और 'नरक की खान' कहकर अपमानित क्यों किया ?
उसके तप-त्याग, सेवा-स्नेह के पीयूषघट का वत्सान क्यों नहीं किया
गया ?

यद्यपि जैनसंस्कृति ने नारी के दोनों पक्षों को प्रस्तुत किया है,
सूर्यकान्ता और नागश्री के विषवेल रूप को, तो जाली, मुकाली,
चेलना, कमलावती आदि के अमल-रूप को भी ।

नारी का द्वितीय हर ही जैन संस्कृति में उजागर हुआ है
नारी ! तुम अपने अमृत-रूप को देखो, समझो !

नारी-नाझे....

भारतीय संस्कृति में नारी का वही महत्व है, जो मानव देह में नाड़ी का ! वह संस्कृति की बुद्धि, समृद्धि और शक्ति की अविद्य शक्तियों का स्रोत है.

सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के रूप में मानव आदिकाल से उसकी उपासना, अर्चना एवं पूजा करता आया है.

नारी की परिभाषा

नारी क्या है ?

न + अरि—जिसका कोई दुश्मन नहीं ।

प्रेम और वात्सल्य की रसधारा !

त्याग और बलिदान की कहानी !

स्नेह और अद्भुत की मूर्ति !

सेवा और सहिष्णुता का अमर सगीत !

नारी की गरिमा

नारी ! तुम प्रेरणा की जीती जागती प्रतिमा हो ! तुमने मानव को सदा कर्तव्य के लिए उत्प्रेरित किया है, त्याग, बलिदान का पाठ पढ़ाया है और दिग्भ्रान्त वन्धुओं को स्नेहमयी मधुर वाणी में मार्ग दर्शन किया है.

तुम ही हो, बाहुवली के अवरुद्ध मानस में निम्न की निमगारी सुलगाकर ज्योति प्रज्ज्वलित करने वाली—ब्राह्मी सुन्दरी की मधुर गिरा ।

तुम ही हो, राजुन की कठवनी लवहार ! जिन्होंने उगमगति द्युतेजि के चरकों को साधना पथ पर स्थिर कर दिया ! तुम ही हो, माता

की करुण पुकार, जिसने कर्तव्य-विस्मृत अरण्य की मोहनिद्रा भंग कर पुनः साधना पथ पर आरुढ कर दिया

तुम ही हो, मैत्रेयी और गार्गी की वह आध्यत्मिक-स्वर व्यञ्जना जिसने युग के भौतिक कुण्ठाग्रस्त मानस को भकभोरा—येनाहनामृता स्या किं तेन कुर्याम् (जिस धन से मैं अमर नहीं बन सकूँ, उसको लेकर क्या करूँ),

तुम ही हो मदालसा की वह मधुर दुलार जिसने पालने में सोए शिशुओं को—“बुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि” की लोरियाँ सुनाई.

तुम ही हो चारुभाषिणी चेलना की तर्कप्रवण प्रज्ञा—जिसने सम्राट् श्रेणिक के धार्मिक व्यामोह को दूर हटाकर धर्म का शुद्ध दर्शन कराया.

तुम ही हो, सूर और तुलसी को साहित्य-गगन में मूर और चन्द्र बनाकर चमकाने वाली चिन्तामणी और रत्नावली की प्रेरणा से भरी मधुर भाव व्यञ्जना !

नारी ! तुम सदा सदा से महान् रही हो, प्रकाशस्तम्भ बनकर युग-मानस का पथ प्रदर्शन करती आई हो !

आज अपने गौरव-मण्डित अतीत का दर्शन करो !

नारी ! तुम महान् रही हो, अपनी महानता का जयनाद आज पुन उद्घोषित करो

✓ धन को समाज के खेत में डाल दो !

कूड़े-ककट को एकत्रित करके घर में रखा तो वह गन्दगी पैदा करेगा, उसमें कीड़े फुलवूलाएंगे, यदि उस गन्दगी को खेत में बिखेर दी जाये तो खाद बनकर नई फसल तैयार कर देगी, गन्दगी जिन्दगी बन जायेगी.

धन की भी यही स्थिति है. यदि उसे अपनी तिजोरी में बन्द करके रखा तो गमता के कीड़े कुलवूलाने लगेंगे उसे समाज के खेत में डाल दो, वह नई सृष्टि का निर्माण कर देगा.

जो है, सो दो

कहावत है—‘देव सो देवता’—जो देता है वह देवता है तुम्हारे पास जो भी है, वह अर्पण कर दो ! चिन्ता न करो, यदि धन, अन्न अथवा अन्य वस्तु नहीं है तो ?

देखो ! तुम्हारे पास हाथ है न ? इन हाथों से किसी वेदना से कराहते हुए मानव के आँसू पोछ सकते हो जिनके दिल का दिया निराशा की आँधी से बुझ-चुका है, उनके लिए प्रेरणा-प्रदीप बन सकते हो ! मन के द्वारा उनके प्रति शुभ कामना कर सकते हो ? मीठी वाणी से उनको सान्त्वना दे सकते हो ? फिर तुम देना क्यों भूल रहे हो ?

देने वाला मधुर !

मैंने नदी से पूछा—तुम्हारा ही पानी समुद्र में जाता है, फिर क्या कारण है कि नदी का पानी मीठा है और समुद्र का पानी खारा ?

कलकल करती हुई नदी ने ज़मे उत्तर दिया — मैं सतत दान करती रहती हूँ, जबकि समुद्र सिर्फ संग्रह ही करता रहता है.

जो देता रहता है, व मधुर बना रहता है. संग्रह करने वाला घृणा व कटुता का पात्र होता है.

मधुन्दान

वही दान मधुर होता है जो दाता अपनी स्वेच्छा में देता है, आग्रहपूर्वक लिए हुए दान में खटास आ जाती है.

फल वही मधुर होता है जो वृक्ष स्वयं देता है, तोट कर लिए हुए फल खट्टे होते हैं

सत्ता की गैद !

जनतन्त्र के गिनाड़ियों ! सत्ता की गैद को पकड़ कर मत बँटो !

जब तक यह गैद दौड़ती रहेगी तभी तक गैल चलेगा, दर्शन, गिनाड़ी दोनों को आनन्द आयेगा गैद को पकड़कर बैठ गये कि गैल खतम !

तैरने के लिए जल फेंकिए !

जो व्यक्ति जल में तैरना चाहता है, वह जल को हाथों से दूर फेंकता है.

संसार सागर में तैरना चाहते हो, तो परिग्रह रूप पानी को दूर फेंकते रहिए.

नेता की परिभाषा

एक विचार गोष्ठी में चर्चा का विषय था— नेता की परिभाषा.

एक वक्ता ने कहा— 'नेता वही हो सकता है, जो सड़क पर की गई वक्ती की भाँति दूसरों को मार्गदर्शन करता रहे, पर स्वयं जहाँ है वही स्थिर रहे."

दूसरे वक्ता मंच पर आये, और नेता की परिभाषा करने लगे—
"नेता, वह पेशेवर चित्रकार है, जो योजनाओं में देश का सुनहला भविष्य अंकित करके गरीब जनता को खुश करने का प्रयत्न करता है "

"आकाशवाणी केन्द्र की भाँति डधर-उधर की चुलबुली खबरें सुनाकर लोगों का जमघट लगाने वाला नेता होता है"— तीसरे प्रवक्ता ने परिभाषा दी.

तभी सभापति महोदय ने परिचर्चा का उपसंहार करते हुए कहा—
"नेता वह है, जो आदर्श की बात कर सकता है, भविष्य की सुनहली कल्पनाओं से जनता का मन मोह सकता है, लच्छेदार भाषण दे सकता है, स्वयं खाकर दूसरों को खिला सकता है, सब कुछ करके भी वह कमल की भाँति सदा निर्लेप—(अथत् निर्दोष) सिद्ध हो सकता है "

रमणीय या बीनल ?

यह विषय क्या है ?

महाकाल का एक अभिनय ! इसे न रमणीय कहा जा सकता है, न बीभत्स ! न अगूत कहा जा सकता है, न विष !

एक ओर प्रभात की सुनहली किरणों में मोहक आशा एवं सरसता छिपी है, तो दूसरी ओर सव्या की पीली उदास छाया में अनन्त भविष्य की निराशा !

एक ओर यौवन का मदकल-हास है, तो दूसरी ओर जरा का क्रूर भट्टहास !

एक ओर सौरभ से मदमाती कलियों की मधुर अंगड़ाई है, तो दूसरी ओर मुरझाकर धूलि-लुण्ठित होने की नीरव सुस्ती !

फिर कौन क्या जाने, महाकाल का यह नाटक रमणीय है, या बीभत्स !

पत्थर और आदमी

एक पत्थर रास्ते में पड़ा था, कोई अभिमान में अकड़ा हुआ घनी उधर से गुजरा, पत्थर की ठोकर लगी और मुँह के बल गिर पड़ा.

“मुझे उठाकर एक ओर रखदो न ? पत्थर मूक भाषा में बोला.”

“वदतमीज ? यही पर पटा ठोकरें खाने लायक है”—घनिक ने घूर कर कहा, और ऐंठा हुआ-सा आगे चल दिया. पीछे से आते हुए एक मजदूर ने पत्थर को आत्मीयभाव के साथ उठाया और मन्दिर की सीढ़ी पर रख दिया

सायकाल मन्दिर की बूटी पुजारिन आई, उसने पत्थर पर सिन्दूर का टीका लगाया और लाकर अपनी देव परिषद् में बिठा दिया.

दीपक जले, आरती होने लगी । वही ठोकर खाने वाला घनिक उसी पत्थर के सामने हाथ जोड़कर नतमस्तक खड़ा है, बड़े कातर स्वर में याचना करता है—पुत्र के लिए—“कुल का एक उजियारा दे दो देव । इस मन्दिर पर स्वर्णकलश चढ़ा दूंगा ” बहुमूल्य पदार्थों में अर्चना कर दो क्षण तक देवता की प्रसन्नता के लिए हाथ जोड़े खड़ा रहा

और पत्थर मनुष्य की इस विवेकमृदता को देखकर स्तम्भित-सा रह गया.

बुराई-भलाई से कोई अलग चीज नहीं है

भलाई ही तो गलत जगह, गलत समय, गलत पात्र के साथ, गलत तरीके से की जाने पर बुराई का नाम पाती है

गुलाब का फूल डाली से अलग होकर मिट्टी में मिल सकता है, और भट्टी पर चढ़कर इत्र भी बन सकता है

तुम मिट्टी में मिल जाते हो तो बुराई शेष रहेगी, भट्टी में चढ़कर इत्र बन कर गन्ध छोड़ जाते हो तो भलाई शेष रहेगी

इतिहास का सार

ससार का इतिहास इस प्रथम वाक्य से प्रारम्भ होता है—मनुष्य जन्मा ! और उस इतिहास का अन्तिम वाक्य है— मनुष्य मरा ।

‘जन्म और मृत्यु’ इसके सिवाय मनुष्य जाति का और क्या इतिहास हो सकता है ?

कहा जाता है कि एकवार ईरान की गद्दी पर एक बादशाह बैठा, उसने देश भर के चोटी के विद्वानों को बुलाकर अपनी इच्छा जाहिर की— कि विश्व की मानव जातियों का एक सम्पूर्ण इतिहास तैयार कीजिये जिससे मुझे राज्य संचालन में सुविधा हो, और यह जान सकूँ कि और देशों के राजा लोग अपना राज-काज कैसे चलाते हैं, और दुनिया के इतिहास में कैसे-कैसे राजा हुए हैं ?

बादशाह की आज्ञा से देशभर के विद्वान इतिहास निर्माण के काम में जुट गए पूरे मनोयोग एवं तल्लीनता के साथ कार्य करते हुए बीस साल के बाद विद्वान लोग राज-दरबार में पहुँचे. उनके साथ १२ ळ्ट थे जिन पर इतिहास की ६६ हजार जिल्दें लदा हुई थी

बादशाह ने इतनी जिल्दें देखी तो सिर पर हाथ रखा, काश ! आप लोग इतिहास को सक्षिप्त रूप में तैयार करना । इतनी जिल्दें तो मैं जिन्दगी भर रात-दिन पढ़ता रहूँ तब भी पूरी नहीं पढ़ पाऊँगा ।”

वादशाह के आदेश ने पण्डित लोग दुवारा पुस्तकालयों की ओर चल पड़े बीस साल बाद फिर लौटे तो उनके पास सिर्फ एक ऊंट और दो खच्चर थे जिस पर एक हजार जिल्दे थीं। बादशाह ने देखा तो फिर मिर घुनकर कहा—उफ ! आपने मेरा मतलब नहीं समझा ! इतिहास को और सक्षिप्त कीजिए.

पण्डित लोग पुनः इतिहास को सक्षिप्त करने में जुट गए बीस साल बाद लौटकर आए तो उनके साथ केवल एक खच्चर था और उस पर एक ही जिल्द लदी हुई थी !

द्वारपाल ने पण्डितों का स्वागत करके कहा—“जनाव, जल्दी कीजिए, क्योंकि बादशाह अन्तिम मार्गें गिन रहे हैं !”

पण्डित लोग बादशाह के पास महलों में पहुँचे, बादशाह ने मृत्यु-शय्या पर करवट बदलते हुए उस जिल्द पर निराशा की दृष्टि डाली और बोले—“हाय ! अब मैं मनुष्य जाति का इतिहास पढ़े बिना ही इस ससार से विदा हो रहा हूँ !”

तभी बूढ़े राजपण्डित ने कहा—नहीं, जहाँपनाह ! ऐसा नहीं हो सकता ! यह जिल्द और भी सक्षिप्त की जा सकती है, और आपके लिए उसका सार मैं एक वाक्य में ही कहे देता हूँ—

“सब जन्मे, सबने कष्ट भोगे, और सब मर गये !”

बादशाह ने आराम से अन्तिम साँस ली ।

मनार का इतिहास

संसार का इतिहास जानना चाहते हो ? तो, लो पढ़ो ! सागर की छाती पर छठानी बलसाती हुई लहरों का चंचल उत्थान-पतन !

तो, लो पढ़ो, प्रकृति के अचल से साथ-साथ चलते हुए रोद-रगणीय जरा-मृत्यु के विभिन्न, विचित्र रूप !

मुख-दुःख के मिश्रित सम्मोहन में घड़ती हुई मृष्टि की घटावन को पढ़ो, संसार का इतिहास अपने आप खुलकर सामने आ जायेगा

चिन्तन की चाँदनी

अ

न्तः

श

ल्य

मनुष्य के प्रयत्न, पुरुषार्थ एवं पराक्रम का अन्तिम
काम्य है—मन प्रमदता, आनन्द एवं शान्ति.

प्रमदता, आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति तब स्फुटित
होती है, जब हृदय मरन, निर्मल एवं निःशल्क हो.

सत्य—अर्थात् काटा, जिस हृदय में कांटा चुभा हो,
वह आनन्द की अनुभूति कैसे कर सकेगा ? जिस शरीर
में कांटा चुभ गया हो, उसे चैन कैसे पड़ेगा ?

दुर्विचार—काम, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, प्रमाद,
दुःखा, निंदा में सब मन के काटे हैं. भगवान् महावीर
ने उन्हें 'वन्त, वग्ग के मुदमज्ज' — "गुहमिज्ज" --
महकल गुहा में हैं.

जिस हृदय में शल्क है, वह दुःखी है. जिसका शल्क
निकल गया, वह परमगुणी है.

कुविचार

कुविचार एक जहरीले फोड़े की तरह है.

फोड़े का आप्रेशन करके जब तक उसका मवाद बाहर नहीं निकालोगे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी.

कुविचार को नष्ट करके जब तक उसकी भावना मन से बाहर नहीं निकलेगी, तब तक मन शान्त एवं प्रसन्न नहीं होगा.

✓ लोभी और पारा

मैंने देखा है—लोभी और कजूस आदमी दान और सेवा की बात आने पर वैसे ही खिसक जाते हैं, जैसे अगुली से छूने पर पारा खिसक जाता है

विषयो की गोली

मछली आटे की गोली को देखती है, किन्तु उसमें लगे काटे को नहीं देखती और उसमें फस जाती है

भौतिक विषयो को घोर आकृष्ट होने वाले प्राणी विषयो की वास्तविक मधुरता देखते हैं, किन्तु उनके कटू परिणाम को नहीं देखते और वे उनमें आसक्त हो जाते हैं.

अफीम का फूल बहुत सुन्दर लगता है, किन्तु उसका रस कितना नशीला और जहरीला होता है ? सत्ता और सम्पदा भी प्रारम्भ में सुन्दर प्रतीत होती है किन्तु उनका रस-परिणाम अन्त में नशीला और खतरनाक होता है.

अन्धा कौन ?

✓ जो धर्म के स्थान पर धन को पूजता है, सन्त की जगह पन्थ को महत्व देता है, और प्रेम की जगह मोह का आदर करता है, समझलो वह आंखें होते हुए भी अन्धा है

तप्त तवा

मैंने देखा, सुना और अनुभव किया है, ईर्ष्यानु का हृदय तप्त तवे की तरह प्रतिक्षण जल-जलकर काला होता जाता है.

ईर्ष्या की नागिन

मानव !

तुम ईर्ष्या की काली नागिन से सदा डरते रहो ! उसकी विषैली फुंकार तन, मन और जीवन के कण-कण को विषमय बना देगी. तुम्हारी दैहिक एवं मानसिक शक्तियों के रस को जलाकर भस्म कर डालेगी

प्रबुद्ध मानव ! ईर्ष्या-नागिन से सदा सावधान रहकर चलो.

चिन्ता

चिन्ता मधुमक्खी है, इसे जितना हटाने का प्रयत्न करो, उतनी ही अधिक चिपटेगी

तीन अंगुली !

मैंने देखा—जब दूसरों के दोषों की ओर दृष्टि करने के लिए मेरी एक अंगुली लट्ठी, तो सहसा तीन अंगुलियाँ मेरी तरफ झुट गईं.

मैंने सोचा—दूसरो की ओर एक बार देखने से पहले अपनी ओर तीन बार देखो यही प्रकृति का संकेत है सस्कृति का संदेश है

आलोचक कौन ?

✓ आलोचना वही करता है, जो स्वयं कुछ नहीं कर पाता.

जो स्वयं कर्तृत्व संपन्न है, वह कभी दूसरो की आलोचना नहीं करेगा, वह तो अपने निर्मल कर्तृत्व से विश्व का मार्गदर्शन ही करता रहेगा.

सहस्राक्ष

आज का मनुष्य दूसरो के दोष देखने के लिए सहस्राक्ष बन रहा है.

किन्तु दुःख तो इस बात का कि वह अपने दोष देखने के लिए तो आज एकाक्ष भी नहीं रहा, बिल्कुल अन्धा बन गया है

राह नहीं, सूर्य

मेरे मित्र ! तुम दूसरो के तेज को मिटाने के लिए मन-ही मन जल कर काले राहू बन रहे हो ?

दूसरो के तेज को समाप्त करने की भावना पहले तो उचित नहीं, फिर भी यदि है, तो सूर्य की तरह अपना प्रचण्ड तेज निखारो, अपने आप तुम्हारे सामने दूसरो का तेज फीका पड़ जायेगा.

✓ दोषज्ञ ।

गुणज्ञ की तरह दोषज्ञ होना भी एक विशेषता है किन्तु अन्तर इतना ही है कि—गुण दूसरो के देखने चाहिए और दोष अपने

जो अपने गुण और दूसरो के दोष देखता है, वह गुणज्ञ की जगह अहंकारी और दोषज्ञ की जगह 'निन्दक' का पद पाता है

दोष-दृष्टि

दोष दृष्टि—वरन्तुत एक दोष है. इसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी पण्डित होते हैं

किन्तु इस दूषण को भूषण भी बनाया जा सकता है. वशतें कि वह दृष्टि दूसरो की ओर न घूम कर अपनी ओर घूम जाए.

जिसने अपने दोष देख लिए, वह फिर कभी दूसरो के दोष देखना ही नहीं चाहता.

सजातीय

दोष वही देखेगा, जिसमें स्वयं में दोष होंगे.

दोष के पास ही दोष आता है दोष-दोष परस्पर सजातीय हैं, वन्धु है.

आलोचना

आलोचना एक साबुन है, जो मैल को धोकर साफ कर देता है.

पर, आश्चर्य है कि इस का प्रयोग हर कोई दूसरो की सफाई के लिए करता है. अपनी सफाई के लिए कोई ध्यान भी नहीं देता.

विकारो का रावण !

मन के सिंहासन पर जब तक विषय विकारों का रावण बैठा है, तब तक विवेक-वैराग्य का राम वहाँ आएगा ही नहीं.

यदि मन के सिंहासन पर विवेक-वैराग्य के राम को बँठाना है, तो विकारो के रावण को दूर भगाइए. आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है—

ताव ण ऐज्जइ अप्पा विसएत्तु णरो पक्कट्टए जाव

जब तक मनुष्य विषयो को जानता है, तब तक आत्मा को नहीं जान सकता. विषयो को भुलाने से आत्मा को जाना जायेगा.

मूल क्या है ?

मनोविज्ञान के आचार्य फ्राइड ने 'काम' को सब प्रवृत्तियों का मूल माना है.

नवीन समाजवाद के आचार्य कार्ल मार्क्स नमस्त प्रवृत्तियों का मूल 'अर्थ' मानते हैं.

अध्यात्म के आचार्य काम एव अर्थमूलक समस्त प्रवृत्तियों (कर्म) का मूल प्रेरक 'मोह' मानते हैं—'कम्म च मोहप्पभव वयंति'

—भगवान महावीर (उत्तराध्यायन)

मुर्दे

मुर्दे दो प्रकार के होते हैं—

एक मृत मुर्दे, जो श्मशान में जला दिए जाते हैं, या कब्र में दफना दिए जाते हैं एक जीवित मुर्दे—जो अपनी लाश खुद उठाए समाज में घूमते फिरते हैं, गन्दगी और सड़ाद पैदा करते रहते हैं.

जिनके उत्साह की ऊष्मा ठंडी पड़ गई हैं, जो बात-बात में दूसरों का सहारा ताकते हैं, हर काम को 'कल' पर टालकर 'आज' पड़े-पड़े चित्ताना चाहते हैं वे कायर और आलसी व्यक्ति जीवित मुर्दे हैं, उनके आलस्य की वदवू से समाज का स्वास्थ्य चौपट हो जाएगा, सावधान !



चार परिभाषाएँ

✓ जो आवश्यकता से अधिक चाहता है, वह दरिद्र है.

जो आवश्यकता के अनुरूप चाहता है, और प्राप्त कर लेता है, वह धनवान है

जो कभी आवश्यकता के लिए कुछ चाहता नहीं, वह सन्त है.

और जो कभी आवश्यकता का अनुभव भी नहीं करता, वह परमयोगी है

दरिद्र कौन ?

दरिद्र कौन ? एक प्रश्न चारों ओर गूँज उठा ! उत्तर नहीं मिला सभा में आमीन बड़े-बड़े मेठ-साहूकार और सच्चाट भी मौन थे.

सन्त ने कहा—यथा धन के अभाव में कोई दरिद्र होता है ?

सबकी आकृति स्वीकृति मूलक थी.

किन्तु इस दूषण को भूषण भी बनाया जा सकता है.
दृष्टि दूसरो की ओर न घूम कर अपनी ओर घूम जाए.
जिसने अपने दोष देख लिए, वह फिर कभी दूसरो के दोष
नही चाहता.

सजातीय

दोष वही देखेगा, जिसमे स्वयं में दोष होंगे.

दोष के पास ही दोष आता है. दोष-दोष परस्पर सजा
बन्धु है.

सा

आलोचना एक साबुन है, जो मैल को धोकर साफ कर देता है.
पर, आश्चर्य है कि इस का प्रयोग हर कोई दूसरों की सफाई के
करता है. अपनी सफाई के लिए कोई ध्यान भी नहीं देता.

विकारो का रावण !

मन के सिंहासन पर जब तक विषय विकारों का रावण बैठा है, त
तक विवेक-वैराग्य का राम वहाँ आना ही नहीं.

यदि मन के सिंहासन पर विवेक-वैराग्य के राम को बैठाना है, तो
विकारो के रावण को दूर भगाइए. आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है—

ताव न ऐज्जइ मप्पा विसम्मि परो पवट्टए जाय.

जब तक मनुष्य विषयों को जानता है, तब तक आत्मा को नहीं जान
सकता विषयो को भुलाने से आत्मा को जाना जायेगा

मूल क्या है ?

मनोविज्ञान के आचार्य फ्राइड ने 'काम' को सब प्रवृत्तियों का मूल
माना है.

नवीन समाजवाद के आचार्य कार्लमार्क्स समस्त प्रवृत्तियों का मूल
'अर्थ' मानते हैं.

विज्ञान के दर्शन

अध्यात्म के आचार्य काम एवं अर्थमूलक समस्त प्रवृत्तियों (कर्म) का मूल प्रेरक 'मोह' मानते हैं — 'कम्म च मोहप्पभवं वयति."

—भगवान महावीर (उत्तराख्ययन)

मुर्दे

मुर्दे दो प्रकार के होते हैं—

एक मृत मुर्दे, जो श्मशान में जला दिए जाते हैं, या कब्र में दफना दिए जाते हैं एक जीवित मुर्दे — जो अपनी लाश खुद उठाए समाज में घूमते फिरते हैं, गन्दगी और सडाद पैदा करते रहते हैं.

जिनके उत्साह की ऊष्मा ठंडी पड़ गई है, जो बात-बात में दूसरों का सहारा ताकते हैं, हर काम को 'कल' पर टालकर 'आज' पड़े-पड़े विताना चाहते हैं वे कायर और आलसी व्यक्ति जीवित मुर्दे हैं, उनके आलस्य की बढ़व से समाज का स्वास्थ्य चौपट हो जाएगा, सावधान !

चार परिभाषाएँ

✓ जो आवश्यकता से अधिक चाहता है, वह दरिद्र है.

जो आवश्यकता के अनुरूप चाहता है, और प्राप्त कर लेता है, वह धनवान है.

जो कभी आवश्यकता के लिए कुछ चाहता नहीं, वह सन्त है.

और जो कभी आवश्यकता का अनुभव भी नहीं करता, वह परमयोगी है

दरिद्र कौन ?

दरिद्र कौन ? एक प्रश्न चारों ओर गूँज उठा ! उत्तर नहीं मिला. सभा में आसीन बड़े-बड़े सेठ-साहूकार और मन्नाट भी मौन थे.

सन्त ने कहा—क्या धन के अभाव में कोई दरिद्र होता है ?

सबकी आकृति नवीकृति मूलक थी.

‘तब तो मैं भी दरिद्र हूँ’—सन्त की वाणी पर सब चौक उठे, “नहीं !
नहीं ! आप तो सम्राटों के सम्राट हैं ”

तो क्या दरिद्र वह है जिसके हृदय में परितृप्ति नहीं है ?

सभी श्रोता अपने-अपने भीतर दृष्टि गड़ाए बैठे थे.

सन्त ने दरिद्र की सच्ची परिभाषा की—दरिद्रता द्रव्य में नहीं, दिल
में रहती है, धन-हीन दरिद्र नहीं, किन्तु धन होने पर भी जिसके दिल
में तृप्ति और संतोष नहीं है, वही दरिद्र है

तृष्णा ।

तृष्णा प्रारम्भ में वामन की तरह लघुरूप लेकर चलती है, किन्तु
धीरे-धीरे विष्णु की तरह विराट् रूप बनाकर ससार को अपने गर्भ
में समाहित कर लेना चाहती है.

परिग्रह विग्रह है.

आत्मद्रष्टा की दृष्टि में उपाधियाँ व्याधियाँ हैं, पलोक (प्रशसा) शोक
हैं और परिग्रह विग्रह है.

तीन रोग : एक दवा

मन का रोग है—आधि.

तन का रोग है—व्याधि.

धन का रोग है—उपाधि.

और तीनों रोगों की एक दवा है—समाधि !

बहुरूपियापन

मनुष्य के आचार-विचार में आज विचित्र बहुरूपियापन आ रहा है
उसके मन और वाणी में अन्तर है, वाणी और कर्म में विसंगति है,
कयनी और करनी में भेद है, कहनी और रहनी में बहुरूपियापन
छाया हुआ है.

मिशन की धारणा

उसके मुह पर मधुरता है, किन्तु हृदय में घोर कटता छलछना रही है. उसकी वाणी फूल वरसाती-सी लगती है, किन्तु उसके हाथ तो ससार के लिए काटे ही वो रहे हैं.

हाथी के दांतों की तरह उसका जीवन भी दिखाने का और, बरतने का और ! यह बहुरूपियापन ही आज की अशान्ति, दुःख एवं असफलताओं का मूल है

अन्धबल ।

✓ नीतिबल, ससार व्यवहार को देखकर चलता है.

आत्मबल, अपने अन्तःकरण को देखकर चलता है किन्तु जो न ससार व्यवहार को देखता है और न अन्तःकरण को, वह तो अन्धबल है.

वासना और व्यभिचार

शारीरिक सुख की कामना, वासना है, भोग है वासना जब नीति, समाज और सदाचार की मर्यादा को लाघ जाती है तो व्यभिचार कहलाती है

अत्याचार और कायरता

अत्याचार और कायरता में कोई अन्तर नहीं.

कायर आत्म-रक्षा के लिए अत्याचारी बनता है और अत्याचारी अपने से बड़े अत्याचारी के समक्ष कायर बन जाता है

केले के छिलके

दुष्ट व्यक्ति सड़क पर गिरे हुए उस केले के छिलके के समान हैं, जिसका भूल ने स्पर्श होने पर भी व्यक्ति ओघेमुँह गिर पड़ता है

दुःख का मूल ।

पेट का विकार ही सब रोगों की जड़ है ।

घोर मन का विकार ? मनोर के नमस्त दुःखों का मूल है.

आत्म-प्रशंसा मृनकर गुब्बारे की तरह फूलनेवालों को यह भी जान लेना चाहिए कि— गुब्बारे की फुलावट कब तक है ?

पराई हवा पर, और पराई प्रशंसा पर क्या कभी क्षणभर का भी भरोसा किया जा सकता है ?

/ कर्तृत्व और कीर्ति

यदि तुम्हारे में गुण है तो प्रशंसा अपने आप प्राप्त होगी.

फूल में सौरभ है तो मधुकर अपने आप आ जायेंगे.

कर्तृत्व है, तो कीर्ति अपने आप फैल जायेगी

मोह के बादल !

दिग्दिगन्त को आलोकित करने वाला सूर्य का प्रसर-प्रकाश, और शान्त रात्रियों को विहंसानेवाली चन्द्र की शीतल-शुभ्र निर्मल-ज्योत्स्ना बादलों के नीलाभ आवरणों से ढँककर घुंघली पड़ जाती है. पर क्या वह बादलों का घुंघलका चिरकाल तक उस प्रकाश पुंज को ढँके रख सकता है ?

नहीं.

साधक ! तुम्हारी आत्मा के दिव्य प्रकाश पर भी मोह के बादल घिर आए हैं और तुम अन्धकाराच्छन्न-से हो रहे हो, आत्म-चिन्तन के दक्षिणी पवन से उन बादलों को नष्ट-भ्रष्ट कर डालो.

आत्मज्योति निखर उठेगी. दिव्य प्रकाश विहंस उठेगा.

✓ मोह का आवरण

मोह सबसे बड़ा आवरण है, मोह का आवरण हटें बिना न सम्यग्-दर्शन की प्राप्ति होती है, न आवकघर्म, श्रमणघर्म और न केवल-ज्ञान की ही

सत्य के द्वार पर मोह सबसे बड़ा कपाट है सत्य का साक्षात्कार करना है तो मोह का दुर्भेद्य कपाट तोड़ डालिए.

गणधरगीतम के मन में एक सूक्ष्म-राग था, मोह था। और उस मोह के आवरण ने उनके केवलजानालोक को भी आच्छादित किए रखा, जब तक आवरण नहीं हटा, आलोक प्रगट नहीं हुआ। जब तक वह कपाट तोड़ा नहीं गया, सिद्धि का द्वार नहीं खुला

सचमुच मोह एक ऐसा जहरीला कांटा है, कि जब तक लगा रहता है, मन एक सूक्ष्म अकुलाहट और पीड़ा से व्यथित रहता है।

मन की प्रसन्नता और स्वस्थता के लिए मोह के कांटे को निकाल फेंकिए

मोह की खुजली....

मोह एक खुजली है। खुजली से ग्रस्त व्यक्ति को खुजलाने में आनन्द की अनुभूति होती है, मोह से ग्रस्त व्यक्ति को भोगों में आनन्द की अनुभूति होती है

जिसके अन्तःकरण में मोह के कीटाणु नहीं रहे, उसे भोग, रोग के समान लगते हैं, जैसे कि स्वस्थ व्यक्ति को खुजलाना विमारी जैसा लगता है

✓ मोह और प्रेम

मोह और प्रेम में महान अन्तर है दोनों पूर्व और पश्चिम की तरह कभी नहीं मिलने वाले दो किनारे हैं।

प्रेम आक्सिजन की तरह प्राणपोषक है, और मोह हाइड्रोजन की तरह प्राणशोषक। प्रेम आत्मा के अन्तःकरण से प्रस्फुटित होने वाला मधुर स्वरनाद है, मोह मन की विह्वलदशा में गुनगुनाया हुआ स्पन्दनहीन गान है

प्रेम की निर्मल और पवित्र धारा में आत्मगुणों का पल्लवन होता है। मोह की कल्मष-पंकिल वीथियों में आत्महता कीटाणु कुलबुलाते रहते हैं। प्रेम आत्मा का सरगम है, मोह चिकारों का अट्टहास !

प्रेम चैतन्य देही को उपासना करता है, मोह जड़ देही को।

प्रेम जन्मान्तर का शुद्ध संस्कार है, मोह जन्म-जन्म में घनीभूत होता हुआ मानसिक विकार है.

प्रेम की पगडण्डियां साधना और योग की ओर बढ़ती हैं, मोह के कुटिल कदम वामना और भोग की ओर लड़खड़ाते रहते हैं.

प्रेम और मोह का उद्भव अन्तःकरण के सागर में होता है. परन्तु एक जीवनदायी अमृत है, तो दूसरा सर्वघाती हलाहल विष !

मेरे मन ! तू प्रेम की साधना कर ! प्रेम की अग्नि जला, पर उसमें मोह का धुआं न होने दे.

मोह का वधन !

एक छोटा सा कोमल-कोमल लघु चरणोंवाला मधुर काठ में छेद करके उससे बाहर आ सकता है, परन्तु कमल की कोमल पल्लवियों को नहीं छेद सकता ?

क्यों जी ?—प्रज्ञा ने पूछा.

हृदय ने उत्तर दिया—फूलों के साथ अमर का निगड-स्नेह वधन है. काठ के साथ वह निर्मम है स्नेह कभी-कभी वधन की वेष्टियां बन जाता है, और निर्मम कभी-कभी मुक्ति का द्वार खोल देता है.

मोहन !

भगवान् अपने गुणात्मक नाम से सुविश्रुत हैं. उनके हजारों नाम हैं, सभी अपने में किसी विशिष्ट गुण की अभिव्यजना लिए हुए हैं.

‘मोहन’—भगवान् का मधुर नाम है—कितनी गम्भीर व्यंजना है इस नाम में—मोह + न । जिसे किनो में मोह नहीं, मोह दाय है. प्रभु का पवित्र नाम इन दोषों ने दूषित कैसे हो सकता है ?

मोहन का पवित्र नाम लेने के लिए, मन को मोह रहित करना होगा. मोहन के दर्शन करने के लिए दृष्टि को मोह मुक्त करना होगा. मोह के घर में रहने वाला मोहन का दर्शन नहीं कर सकता. मोहन की उपासना करने वाला कभी मोह के चपुन में नहीं फसता.

आओ । मोह का निवारण करे, तभी मोहन के दिव्य दर्शन होंगे.

पाप . ताप . सताप

पाप निश्चय ही मन में ताप पैदा करता है, और ताप जन्म-जन्म तक सताप का कारण बनता है

बहुत सोचना बीमारी है.

बहुत सोचना भी एक बीमारी है.

जो जानदार है, वह जवान है, जवान ज्यादा नहीं सोचता, वह शीघ्र ही निर्णय पर पहुँचता है और क्षणभर में कार्य सम्पन्न ।

सोचना, सोचना और बहुत सोचना—इस का नाम है बुढ़ापा ।
सोचते-सोचते कुछ नहीं करना—इसका नाम है मृत्यु ।

डॉक्टर यदि रोगी को देखकर घटो सोचता रहे तो, रोगी मर न जाये?
रेलगाड़ी का ड्राइवर यदि सोचता ही रहे तो रेलों की भिड़न्त कराके
सैकड़ों को मौत के घाट नहीं उतार दे.

शीघ्र सोचना, शीघ्र करना जानदार जवानी है

उदासी और निराशा

महापुरुष भी कभी-कभी उदासी और निराशा के शिकार हो जाते हैं. पर, वे उससे भागने की कोशिश नहीं करने. वे उदासी और निराशा में लड़ने हैं उनके सामने जीवन का एक निश्चित उद्देश्य होता है, और उसी उद्देश्य को सामने रख कर वे अपने कार्य में जुट जाते हैं निराशा और उदासी उनकी प्रेरणा बन जाती है

चिन्ता . चिन्ता का नाम दुर्जन

चिन्ता करना और चिन्ता में फँसना—एन में बहुत बड़ा अन्तर है
चिन्ता करना चिन्तनशीलता है, समझान की तलाश है, और
चिन्ता में फँसना—घबराकर 'हाय-हाय' करना है, धैर्य गँवकर निराशा में डूब जाना है

चिन्ता करने में चिन्ता मनुष्य की चेरी बन कर वश में रहती है, विपत्ति में हाथ बंटाती है.

चिन्ता में फंसने पर चिन्ता भूत बनकर सर पर सवार हो जाती है, साहस की कमर तोड़ देती है.

जब किसी विपत्ति में फंसने पर उसके निस्तार का उपाय सोचा जाता है, तो वह चिन्ता, सोचना या चिंतन कहलाएगा.

और जब विपत्ति से घबराकर 'हाय मरे' 'हाय मरे' पुकार कर निराशा के अवकार में भटक जाते हैं तो वह चिन्ता या फिक्र कहलाएगी.

पहली स्थिति में चिन्ता सर्जक है, चिन्ता-चेरी है, दूसरी स्थिति में चिन्ता विनाशकारिणी है, चिन्ता चुड़ैल है.

चिन्ता-चेरी को अपनाइए और चिन्ता-चुड़ैल से बचिए ।

पैसा और पाप

पंडित लोग कहते हैं—पैसा और पाप की राशि एक है जहाँ पैसा होगा वहाँ पाप भी होगा.

वर्तमान का चिन्तनशील मानस आज धनकुवेर अमेरिका की जीवन-दिशा के सम्बन्ध में नितातूर है. वहाँ पैसा अधिक है, इसलिए पाप भी अधिक हो रहा है, हत्याएं और व्यभिचार भी अधिक फैल रहा है.

प्रे० कॅनेडी, मार्टिन लूथर किंग और राबर्ट फॅनेडी जैसे शान्तिप्रिय महामानवों की नृशम हत्याएं देखकर समार चौंक उठा है कि धन-कुवेर अमेरिका के लोग कहो विश्व के सबसे अधिक भयानक व्यक्ति तो नहीं हैं ?

धन का पदार्थ

धन एक ऐसा पदार्थ है, जो पाप और मूर्खता को अपने मोह आयरण में छिपा देता है.

पर, यह भूलना नहीं चाहिए कि वे पर्दे की ओट में और भी गहरे पनपते जाते हैं.

अर्थ . व्यर्थ या सार्थ

अर्थ व्यर्थ नहीं है, पर उसके बिना ससार में मनुष्य का जीवन व्यर्थ हो जाता है. बिना परो के पक्षी की, और बिना पतवार (मस्तूल) के नौका की जो गति होती है, वही गति ससार में अर्थाभाव से पीड़ित दरिद्र मनुष्य की होती है

अर्थ जीवन के लिए अर्थपूर्ण (सार्थ) है, पर उसकी सार्थकता इसी बात में है कि मनुष्य उसे अपनी वासनापूर्ति का साधन न बनाए. अपने भोग एवं अहंकार की परितृप्ति के लिए नहीं, किन्तु जीवन-यापन के लिए ही अर्थ का उपयोग करे

भोग

भोगजन्य सुखों के अन्त में दुःख की अनुभूति छिपी है, जिस प्रकार कि सेक्रीन की मधुरता के अन्त में कड़वाहट छिपी रहती है

जिस प्रकार बर्फ की शीतलता में भी उष्णता रही हुई है, उसी प्रकार भोगासक्तिजन्य शान्ति के अन्त में पश्चात्ताप का सताप छिपा हुआ है.

इमली की छाया शीतल भले ही लगे, किन्तु वह सुखद नहीं है, शरीर में ऐंठन पैदा कर देती है, अग-प्रत्यग में दर्द होने लगता है विषय-भोग से प्राप्त होने वाली सुखानुभूति भी इसी प्रकार की है

✓ चिन्ता का

विषयों का वह एक ऐसा चिन्ता फल है, जिन पर निरन्तर अगणित मनुष्यों ने अपनी हड्डी-पसली तोड़ दी, पर फिर भी मनुष्य नहीं समझा है ? गिरता ही जा रहा है

भूख !

भूख-शब्द दो अक्षरों के संयोग से बना है, भू+ख.

‘भू’—का अर्थ है पृथ्वी, और ‘ख’—का अर्थ है आकाश. जो पृथ्वी और आकाश को एक करदे—उसका नाम है भूख !

‘भूख’ की पीड़ा सबसे विकट व अमह्य है. तलवार के घावों से नहीं डरने वाले भूख से व्याकुल होकर छटपटाने लग जाते हैं.

माया का जाल

माया एक जाल है. दीखने में सुन्दर ! छूने में कोमल !

किन्तु इस जाल में फँसने के बाद, न फँसनेवाला निकल सकता है, और न फँकने वाला. दोनों ही उसमें फँस जाते हैं.

निन्दा

साथी ! तुम्हारी निन्दा या आलोचना वस्तुतः झूठी है, तो तुम्हें निन्दक पर क्रोध नहीं, दया आनी चाहिए कि वह व्यर्थ ही तुम्हारे निमित्त से पतित हो रहा है.

यदि तुम मानते हो कि निन्दा सही है, सत्य है, तो फिर तुम्हें कृतज्ञ व विनम्र बनना चाहिए कि उसने कृपा करके तुम्हें सावधान किया है

गन्ता की दासता

अर्थ और सत्ता की दासता बड़े से बड़े मनुष्य को भी मत्वहीन बना देती है

द्रोपदी के चीरहरण के समय भी भीष्म जैसे महारथी को भी इसानिए मौन रहना पड़ा कि वे दुर्योधन की सत्ता के चंगुल में फँस गए थे.

गाँठ में रस नहीं

ईश्वर में सद्युत्तरम व्यनछलाना है, पर मैंने देखा—जहाँ गाँठ है, वहाँ रस नहीं.

जीवन भी अमृत रस से भरा हुआ ईख है, किन्तु जहाँ गाँठ लग गई वहाँ रस नहीं रह पाता.

विषयों का व्यामोह

मैं नदी के किनारे खड़ा-खड़ा देख रहा था कि—एक कुत्ता हाँफता हुआ आया और नदी के भीतर चला गया. पानी के भीतर वह गले तक डूबा जा रहा था, किन्तु फिर भी जीभ लपलपाकर पानी को चाटने का प्रयत्न उसका चालू था.

मेरे मन में एक विचार रेखा कौंध उठी—ससार के अज्ञानियों की यही दशा है. दुःख में आकण्ठ डूबे हुए हैं, मृत्यु सामने खड़ी है, फिर भी विषयों को चाटने का व्यामोह नहीं छोड़ सकते.

क्रोध का उफान !

क्रोध का उफान 'फूटसाल्ट' की तरह होता है, किन्तु जो उसे पीजाए वह दुर्गुणों को हजम करके जीवन में मधुरता प्राप्त कर लेता है.

क्रोध का आदि अन्त

क्रोध का प्रारम्भ करते समय मनुष्य केवल मूर्ख ही होता है, किन्तु अन्त होते-होते तो वह अपराधी भी बन जाता है.

और फिर अपने अपराध पर आँसू भी बहाने लग जाता है.

अमृतजड़ी

क्रोध का उपचार एक ही है—विचार. क्रोध के दुष्परिणामों पर यदि विचार किया जाए तो क्रोध उत्पन्न ही नहीं होगा, यदि हो गया तो बहुत ही शीघ्र समाप्त हो जायेगा.

इसलिए आचार्यों ने क्रोध के ज्वर को अमृतजड़ी 'अपायचिन्तन' (दुष्परिणाम का चिन्तन) बतलाई है.

धर्म और गुण

क्रोध को धर्मोत्तम नहीं, कि विवेक का दीपक गुन हो गया

लोभ का तूफान आया नहीं, कि शान्ति का उपवन उजाड़ हो गया.

क्रोध की फूँक

दर्पण पर फूँक मारने से घुंघला हो जाता है, फिर प्रतिबिम्ब दिखलाई नहीं देता

मन के दर्पण पर क्रोध की फूँक मत मारो ! वह घुंघला हो जायेगा, फिर माता-पिता, भगिनी भ्राता आदि का परिज्ञान नहीं हो पायेगा और तुम विल्कुल अवोध कहलाओगे

✓ क्रोध, दुर्बलता का लक्षण है.

क्रोध शक्ति का नहीं, अशक्ति का लक्षण है. बल का नहीं, दुर्बलता का चिन्ह है. ज्ञान की नहीं, अज्ञान की निशानी है.

✓ क्रोध से विरोध

क्रोध से विरोध का जन्म होता है, प्रतिशोध की आग प्रज्ज्वलित होती है.

✓ क्रोध में ज्ञान नहीं

खोलते हुए पानी में अपना प्रतिबिम्ब दिखलाई नहीं दे सकता उसी प्रकार क्रोध से विक्षुब्ध मानस में हित-अहित का ज्ञान उदित नहीं हो सकता.

✓ चार रोग : चार प्रयोग

क्रोध की अग्नि को क्षमा के पानी से शान्त कीजिए.

अहंकार के पर्वत को नम्रता के वज्र से तोड़ डालिए.

कपट की कंटीली भाड़ियों को सरलता के फरसे से काट डालिए.

लोभ के अन्धगर्त को सन्तोष की मिट्टी से भर दीजिए

✓ मन के खटमल

विकार मन के खटमल-मच्छर हैं. थोड़ा-सा अन्धकार हुआ कि भन-भनाने लगते हैं, काटने दौड़ते हैं. किन्तु जैसे ही ज्ञान का प्रकाश फैला कि कहीं जाकर छुप जाते हैं, फिर दिखाई नहीं देते.

॥॥

चिन्तन की चाँदनी

पं
चा
म
त

✓
जीवन की कुण्ठा और मन को मूर्च्छा को दूर करने के लिए विचारों का यह पंचामृत प्रस्तुत है.

यह पंचामृत वैद्य भी है, धौपधि भी है. विविध मदविचारों का नम्मिलन पंचामृत की अद्भुतशक्ति को स्फूर्त करेगा जीवन की भूलों का परिपोषण करेगा. अस्तित्वतम्य को स्फुरित करेगा.

पंचामृत



पचा हुआ विचार

पचा हुआ आहार शरीर में रक्त-मांस की वृद्धि करता है. पचा हुआ विचार जीवन में बुद्धि का विकास करता है



अहंकार का सिगनल

मैंने देखा है कि जब तक सिगनल नहीं गिरता, गाड़ी स्टेशन की सीमा में प्रवेश नहीं करती.

जब तक अभिमान का सिगनल नहीं गिरेगा, तब तक ज्ञान रूपी गाड़ी जीवन के स्टेशन में प्रविष्ट नहीं होगी

✓ जागते रहो !

चालाक चोर—असावधान व्यक्ति पर हमला करते हैं.

हिंसक पशु—असावधान व्यक्ति को दबोच लेता है

मन के विकार—असावधान व्यक्ति पर आक्रमण करते हैं.

जागरूक रहिए ! जगने वाले ने चोर डरते हैं, हिंसक पशु भय म्नाते हैं और विकार निकट नहीं आते.

शक्ति !

मनुष्य शक्ति चाहता है, नाम चाहता है. दिना कुछ काम दिये भी वह नाम कमा लेना चाहता है.

कीर्ति से पेट नहीं भरता, फिर भी वह खाली पेट रहकर कीर्ति पाना पसन्द करता है.

भाव और विचार

भाव एक स्फुरण है, गति, वेग एवं बल है.

विचार एक विश्लेषण है, काँट-छांट, व्यवस्था व योजना है.

भाव-युक्त विचार एक क्रियाशील प्रक्रिया है

✓

अर्थ-माधुर्य

चीनी में उतना ही पानी डालना चाहिए जितने से उसकी मधुरता कम न हो. उतने ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जितने से अर्थ का माधुर्य बना रहे.

जोड़ना और काटना

काटने का काम सरल है, जोड़ने का कठिन !

कैची जितनी तेजी के साथ वस्त्र को काटती है, क्या उतनी तेजी के साथ सूई उसे जोड़ सकती है ?

जोड़ने में अनेक बाधाएँ और घुमाव आते हैं, काटने में कोई कठिनाई नहीं होती.

गति-स्थिति

जीवन के लिए जितनी गति आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक है स्थिति. जो केवल चलना ही जानता है, वह जीवन में ठोकर खाकर उसी प्रकार गिरता है जिस प्रकार बिना ब्रेक के तेज गति से चलने वाली कार टकराने पर चूर-चर हो जाती है.

अन्तिम अनुभूति !

मृत्यु के क्षण जो कष्टानुभूति और पश्चात्ताप होता है, वह यदि पहले हो जाए तो मृत्यु के समय मनुष्य हँसता हुआ मर सकता है. वह जीवन में फिर पाप व अन्याय नहीं करेगा.

गाँठ डालना सहज है, खोलना कठिन है.

मेरे हाथ में एक धागा है, इधर से उधर हुआ और गाँठ पड़ गई
धागे को पुनः उधर से इधर किया मगर गाँठ खुली नहीं, और अधिक
उलझ गई.

मैं सोचता रहा—गाँठ पैदा करने में बुद्धिमानी नहीं, खोलने में बुद्धि-
मानी की आवश्यकता है.

गाँठ डालना बन्दर को भी आता है, किन्तु खोलना मनुष्य की ही
बुद्धि का काम है

साहित्य का श्रेयार्थ

बुद्धि की शिथिलता को दूर करने के लिए साहित्य एक श्रेष्ठ
टॉनिक है

मन की कुण्ठाओं को तोड़ने के लिए साहित्य अचूक रामबाण दवा है.
बुद्धि मन एवं जीवन का परिष्कार ही साहित्य का श्रेयार्थ है.

✓

साहित्य का विशेष

साहित्य—हमारी आन्तरिक सुखनियों का परिष्कार करता है. ^१
आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करता है और मन में शक्ति एवं
स्फूर्ति का संचार करता है

✓

अपना न्याय

प्रत्येक वस्तु अपने न्याय पर ही उपयोगी और सुन्दर लगती है.
काजल घाँस में सुन्दर लगता है और महावर पैरों में

नेत्र लोच बदनाम

✓ मनुष्य को नेत्र बनने के लिए समूचा जीवन ही प्रयत्न है किन्तु
बदनाम होने के लिए एक क्षणभर ही काफी है

वदपन का मध्यम

बेचन शक्तिमय होना ही वदपन का लक्षण नहीं है. यदि तब
जनहित में प्रयोग करने में वदपन प्राप्त होता है

यदि कोई तुम्हारी नकल करता है तो तुम क्यों कतराते हो ? जानते हो, नकल असल की ही होती है, महत्वपूर्ण वस्तु के नाम पर ही दूसरे तत्त्व अपना महत्व स्थिर करना चाहते हैं ?

हीरे-पन्ने-माणिक्य-मोती की नकल होती है, पर कोई ककर-पत्थर की भी नकल करता है ?

तुम्हारी नकल करने वाले आज तुम्हें महत्वपूर्ण तो मान ही रहे हैं, हो सकता है, कल अनुगामी भी बन जाएँ

प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा

दूसरो की प्रतिष्ठा देख-सुनकर स्वयं को अप्रतिष्ठित अनुभव करना मूर्ख का काम है

विवेकवान वह है, जो दूसरो की प्रतिष्ठा के कगार को छूकर उससे आगे बढ़ना चाहता है.

मूल्य

जिस आँख में कभी आँसू नहीं छलके, वह हँसने का मूल्य क्या जाने ?
जिस मानव ने कभी दुःख नहीं देखा, वह सुख का मूल्य क्या जाने ?

सदाचार की सौरभ !

जिस जीवन में सदाचार की सौरभ है, उसके पास भक्त रूप भीरे बिना बुलाए ही आजायेगे.

फूल भौरों को नहीं बुलाता, हीरा जोहरी को नहीं बुलाता, फिर सन्त भक्तों को क्यों बुलाए ?

अन्तर !

मानव और पशु की गति में क्या अन्तर है ?

मानव कर्तव्य से उत्प्रेरित होकर कार्य करता है, और पशु भय से संश्रुत होकर.

बूंद और सागर !

एक-एक बूंद से सागर भर जाता है, एक-एक क्षण से जीवन बन जाता है.

जो बूंद को समझ लेता है, वह सागर को भी समझ लेता है, जो क्षण का महत्व जान लेता है, वह जीवन का महत्व भी जान लेता है.

स्वर्ग की ओर

यह कहा जाता है कि मनुष्य के पैर नरक की ओर हैं और सिर स्वर्ग की ओर !

क्या तुम्हें पैर की ओर बढ़ना है या सिर की ओर ? अधोगति करना है या ऊर्ध्वगति ?

दृष्टि का चश्मा !

जिसने जैसा चश्मा लगाया. उसे वैसा ही दिखलाई पड़ेगा.

सफेद वस्त्र को हरा चश्मेवाला हरा देखेगा, और काले चश्मेवाला काला.

जिसकी दृष्टि मिथ्यात्व से घूमिल है, वह सत्य को भी असत्य रूप में देखेगा

सत्य से निर्मल दृष्टि वाला असत्य में से भी सत्य को निकाल कर ग्रहण कर लेता है—जैसे हल जल-मिश्रित दूध में से दुग्धाण को ग्रहण कर लेता है

समुद्र और मगरमच्छ

✓

ससार यदि समुद्र है, तो घर, परिवार और पुद्गलों की ममता, विशाल-काय मगरमच्छ है

प्रारम्भनायिक ! इन देह की नाव पर बैठकर तुम्हें समुद्र के उस पार जाना है, सावधान होकर चलो !

प्रलोभनों के तूफान और ममता के मगरमच्छ तुम्हें निगलने की अभिलषणा रहे हैं

पञ्चानृत

१४३

छिपाना या प्रकट करना

✓ पाप पुण्य छिपाने से बढ़ते हैं, प्रकट करने से घटते हैं. अतः पाप को छिपाना नहीं चाहिए. पुण्य को प्रकट नहीं करना चाहिए.

पाप-पुण्य

✓ शिष्य ने गुरु से पाप की परिभाषा पूछी गुरु ने समाधान देते हुए कहा—“जिस कार्य को करते हुए और करने के पश्चात् मन भयभीत होता हो, लज्जा एवं ग्लानि का अनुभव होता हो, वह कृत्य ‘पाप’ है.”

और पुण्य ?

“जिस कृत्य को करते समय मन में आनन्द की अनुभूति हो, एवं अन्त में उल्लास तथा आल्हाद से युक्त प्रसन्नता जगमगाती हो. समझलो वह पुण्य है.”

कर्म : मशीन

एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया—जब कर्म जड़ है तो फिर हर पाप-पुण्य का बराबर फल वह कैसे दे सकता है ? क्या वह कर्ता व कर्म-फल को पहचानता है ?

मैंने समाधान दिया—

गणित की मशीन (कम्प्यूटर) अकगणना में कभी गलती करती है ?

‘नहीं !’ उत्तर मिला

क्या उसे यह ज्ञान है कि कौन-सा अंक कहाँ लगाना है ?

‘नहीं !’

फिर भी वह मनुष्य के मस्तिष्क से भी अधिक दक्षता के साथ कार्य करती है, क्या यह जड़-शक्ति का चमत्कारी प्रमाण नहीं है ?

जब जड़ गणित-मशीन भी अंक गणना में कोई गलती नहीं करती है, तो कर्म भी उचित फल-प्रदान में कैसे भूल कर सकते हैं ?

पाप : पुण्य

पाप दुर्गन्ध की तरह बहुत शीघ्र फैलता है, जबकि पुण्य सुगन्ध की तरह बहुत धीरे-धीरे प्रसार पाता है.

दुर्गन्ध से जितना जल्दी दमघुटता है, सुगन्ध से उतना जल्दी मस्तिष्क तर नहीं होता

पाप प्रसरणशील है, पुण्य संकोचशील.

बुद्धिमान और मूर्ख

खेल में कही हुई बात से भी बुद्धिमान शिक्षा ग्रहण कर लेता है, जबकि मूर्ख को हजार-हजार ग्रन्थ सुनाए जाएं तब भी वह उन्हें खेल समझता रहता है.

✓ अधिक लाभ

सुनने से अधिक लाभ है पढ़ने में. पढ़ने से अधिक लाभ है पढ़ाने में पढ़ाने से भी अधिक लाभ है जीवन में उतारने से.

धर्म और चिन्ता !

कड़े से कड़े धर्म से भी स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता, किन्तु थोड़ी-सी चिन्ता भी उसे चौपट कर डालती है. और निराशा तो उसे निगल ही जाती है

✓ सम स्वभाव

पानी और विद्या का स्वभाव एक जैसा है पानी कभी ऊँचाई को और नहीं बहता, और विद्या भी कभी अभिमानी (जो अपने को ऊँचा समझता है) को और नहीं जाती. दोनों समस्वभावी हैं.

सर्वांगशिक्षा

जो शिक्षा सिर्फ बौद्धिक ही हो, वह पूर्ण शिक्षा नहीं कही जा सकती. शिक्षा का अर्थ व्यापक है, सब अंगों की शिक्षा ही सर्वांगशिक्षा कहलाती है—देह को धर्म करने की मन्त्रिणा को सोचने की और मन को काँसा-महदयता की शिक्षा ही यन्त्रुत. सर्वांगशिक्षा है

प्रतीति और प्रीति....

विना नीति के प्रतीति (विश्वास) नहीं हो सकती, और विना प्रतीति के प्रीति का जन्म ही कहा से होगा ?

नीति से प्रतीति और प्रतीति से प्रीति—यह प्रेम का सात्त्विक मार्ग है.



जीभ एक क्यों है ?

मनुष्य के आँख दो हैं, कान दो हैं और हाथ भी दो हैं, किन्तु जीभ एक है प्रकृति के इस निर्माण का रहस्य क्या है ?

चिन्तन के उजाले में इसका रहस्य स्पष्ट दिखलाई दिया—जितना देखें, जितना सुनें और जितना श्रम करें उससे आधा बोलना चाहिए.

मनुष्य देखता कम है, सुनता कम है, करता कम है, मगर बोलता अधिक है यही सब समस्याओं की जड़ है.

मौन और उपवास

मौन भी एक खाद्य है. उपवास भी एक औषधि है.

मन मस्तिष्क की शान्ति के लिए मौन आवश्यक है. शरीर की शुद्धि के लिए उपवास जरूरी है

अग्ने जी कहावत के अनुसार बोलना चाँदी है, चुप रहना सोना है.

'मौन सर्वायसाधनम्' इस सुभाषित पर विचार करके मौन रहने का अभ्यास करिए.



घनी पत्तियाँ ।

बहुत बोलने वाला व्यक्ति कार्य बहुत कम कर पाता है.

बहुत घनी पत्तियों वाले वृक्ष पर अक्सर फल कम आते हैं,

मुकाबला

हठ का सामना हित से करो, हठ परास्त हो जायेगा.

तलवार का सामना रेशम से करो तलवार हार जायेगी.
द्वेष का सामना प्रेम से करो, द्वेष खण्ड-खण्ड हो जायेगा.

दिल का दण्डकारण्य

दिल के दण्डकारण्य में दुर्गुणों के दैत्य घूमते रहते हैं. इसमें बुद्धि-विवेक रूपी सीता-राम को भ्रमण करने दो, दैत्य भाग जायेंगे और तब इस दण्डकारण्य में सद्भाव, सौजन्य, स्नेह, संयम आदि सद्गुण-रूपी ऋषिगण अपना आश्रम बनाकर आनन्द से निवास करते रहेंगे.

अशक्ति और आसक्ति

अशक्ति एक शारीरिक बीमारी है, उसका उपचार सरल है
आसक्ति एक मानसिक बीमारी है, उसका उपचार बहुत कठिन है.

विवाद और सवाद

विवाद विग्रह को जन्म देता है, सवाद समन्वय को
एकता के लिए सवाद का मार्ग अपनाइए, विवाद से तो वैमनस्य ही पैदा होता है.

जादूगर और साहूकार

जादूगर से पूछा—तुम्हारी विशेषता क्या है ? जनता तुम्हारे पर क्यों पागल हो रही है ?

उसने बताया—मैं हाथ की घोर घात की सफाई दियता हूँ.

साहूकार से पूछा—तुम्हारी विशेषता क्या है ? तुम्हारे विश्वास पर जनता क्यों ग्रन्थी हो रही है ?

उसने बताया—मैं हाथ की घोर घात की सच्चाई जानता हूँ
हाथ की घोर घात की सफाई दियाने जाना जादूगर होता है घोर सच्चाई दियाने जाना साहूकार !

मेरे मित्र ! सोचो, तुम्हें क्या बनना है ?

सिद्धि और प्रसिद्धि

सिद्धि की कामना करने वाले साधक को प्रसिद्धि से दूर रहना चाहिए.

सिद्धि और प्रसिद्धि में विरोध है, जैसे कि पूर्व और पश्चिम में

गुड और गोड

जो गुड (GOOD) (श्रेष्ठ) बन गया है, वह गोड (GOD) (ईश्वर) भी अवश्य बन जायेगा.

गोड का मार्ग गुड बनने से ही मिलता है.

फूल और माला

पहले फूल चुने जाते हैं, फिर माला पिरोई जाती है.

पहले विचार-रूपी फूलों का चयन कीजिए, फिर आचार की माला गुंथी जायेगी.

कल्चर मोती

आचारहीन विचार कल्चर मोती हैं, जिसकी चमक कृत्रिम और अस्थायी होती है

चोर और साहूकार

घर के सिंह द्वार से निकलने वाला साहूकार होता है, और खिड़कियों से कूदने वाला चोर ।

देखो ! तुम जीवन के सिंहद्वार से निकल रहे हो या खिड़कियों से ? विचार और विवेकयुक्त आचार-जीवन का सिंहद्वार है और विवेक-शून्य दुराचार जीवन की पिछली खिड़की है.

हीरा और टेना

सूर्य की तेजस्वी किरणें हीरे पर भी गिरती हैं और मिट्टी के ढेले पर भी.

हीरा किरणों की प्रभा से चमक उठता है, किन्तु डेला वैसा का वैसा ही रहता है

कुछ शिष्य हीरे के साथी होते हैं जो गुरु की ज्ञान-रश्मियों का प्रकाश ग्रहण कर तेजोदीप्त हो जाते हैं और कुछ शिष्य मिट्टी के ढेले के साथी होते हैं, जो सूर्य के समान सद्गुरु को पाकर भी तेजोहीन रह जाते हैं

मृत्यु क्या है ?

मृत्यु से भय खाने वाले कायर मनुष्य ! कभी सोचा है, यदि तुम मर्त्य (मरणधर्मा) नहीं होते तो संसार का क्या हाल होता ?

नित नई सुवह में खिलने वाला फूल कभी मुरझाता नहीं, तो उपवन की क्या दशा होती ?

विभिन्न जल-स्रोतों में प्रवहमान जल यदि कभी सूख कर धीरा नहीं होता तो पृथ्वी की क्या स्थिति होती ?

मृत्यु, भय और आतंक नहीं है, वही तो सृष्टि की सुरक्षा, मौन्दर्य और सरसता का अन्तरिम कारण है ?

जीवन एक यात्रा है, मृत्यु एक पड़ाव ! फिर यात्रा और फिर पड़ाव ! जब तक मजिल नहीं आ जाती, तब तक जीवन-मृत्यु के चरण निरन्तर पथ की दूरी को नापते चले जायेंगे

जीवन एक नाटक है, मृत्यु एक पटाक्षेप ! फिर नाटक ! फिर पटाक्षेप ! जब तक अभिनय समाप्त नहीं हो जाता, नाटक में पटाक्षेप का क्रम टटेगा नहीं.



